आर.एन.आई. नं. एम.ए.आर./2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2021–23
"चतुर्वेदी चन्द्रिका" सितंबर 2021

प्रकाशन : 03 तारीख
पृष्ठ संख्या : 80
मूल्य : 20/–

स्थापना – माघ/शुक्ल पूर्णिमा सम्वत् 1947 सन् 1890

चतुर्वेदी चन्द्रिका

वर्ष –22 । अंक–9 । भाद्रपद/ आश्विन (क्वॉर) मास । सितंबर 2021

कविता विशेषांक

शताब्दी वर्ष

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का मुख-पत्र

॥ श्रद्धा सुमन ॥

गोलोकवासी, श्रद्धेय श्री मुरलीधर चतुर्वेदी (चौबे जी)

(सुपुत्र : स्व. श्री वृन्दावन - स्व. श्रीमती पार्वती बाई चतुर्वेदी, उचाढ़)

(25 जून 1945 - 21 जुलाई 2021)

मोह निसाँ सबु सोवनिहारा। देखिअ सपन अनेक प्रकारा॥

(सब लोग संसार में मोह रूपी रात्रि में सोये हैं और सोते हुए वे अनेक प्रकार के स्वप्न देख रहे हैं।)

एहिं जामिनि जागहिं जोगी। परमारथी प्रपंच बियोगी॥

जानिअ तबहिं जीव जग जागा। जब सब बिषय बिलास बिरागा॥

(इस जगत रूपी रात्रि में योगी लोग जागते हैं, जो परमार्थी हैं और प्रपंच (मायिक जगत) से छूटे हुए हैं। जगत में जीव को जागा हुआ तभी जानना चाहिए, जब सम्पूर्ण भोग विलासों से वैराग्य हो जाए॥)

होइ बिबेकु मोह भ्रम भागा। तब रघुनाथ चरन अनुरागा॥

सखा परम परमाथु एहू। मन क्रम बचन राम पद नेहू॥

(विवेक होने पर मोह रूपी भ्रम भाग जाता है, तब (अज्ञान का नाश होने पर) श्री रघुनाथजी के चरणों में प्रेम होता है। हे सखा मन, वचन और कर्म से श्रीरामजी के चरणों में प्रेम होना, यही सर्वश्रेष्ठ परमार्थ (पुरुषार्थ) है।)

:: श्रद्धावनत ::

श्रीमती निर्मला चतुर्वेदी (धर्मपत्नी),

बहन–बहनोई : श्री बृजेश जी, अशोक–ऊषा, भ्राता–भ्राता बहु : सुरेश, राकेश–सुनीता, सुनील–मिथलेश, मनोरमा, विष्णु–पिंकी

पुत्री–दामाद : श्री बृजेश जी–रमा, जूली, पुत्र–पुत्रवधु : अमिताभ–दीपा, प्रशांत–प्रियंका, मनीष–प्रेरणा,

साले–सरहज : महेन्द्र–अलका, श्याम–लता, मनोहर–नीता, कमलेश–शोभा, वासुदेव–जया, शैलेन्द्र–प्रीति

साली–साढ़ू : जितेंद्र–शोभा, पोत्र–पौत्री : हर्षिता, प्रिया, शान्तनु, दिया, मान्या

समधी–समधिन परिवार : जितेन्द्रनाथ, प्रीतम–उमा, रवि – श्वेता, मनीष, मित्रगण : शिवचरण, केदार, सीताराम

:: प्रतिष्ठान ::

• वृंदावन बालकिशन • चतुर्वेदी ट्रेडर्स • दिया इन्टरप्राईजेज

• रूपलक्ष्मी सूट्स एण्ड साडीज • किड्‌जी स्कूल • श्रीनाथ प्रिंटिंग प्रेस

'पार्वती हाउस' सराफा बाजार, लश्कर, ग्वालियर – 474001 (म.प्र.) Ph. : 0751-2631485, 2635963, 4013429
Mob. 9826267847, 9826667847, 9301100345, 9977456333 E-mail : chaturvedi.manish@hotmail.com

(र.क्र. 619)

दिल के कुछ 'अनजान' कोने

अगर वादा कर दें कि
वो सिर्फ ख्वाबों में ही आयेंगे,
खुदा कसम
हम ता-उम्र सो जायेंगे...

चलो एक शमा हाथ में उठाएँ,
किसी एक घर के दीये की बाती जलाएँ,
कुछ मै मुस्कराऊँ, कुछ वो मुस्कुरायें,
आओ सब मिलकर कहकहे लगाएँ,
इसी तरह हम सारे जहाँ में दीवाली मनायें...

इस शहर के किसी कोने में एक पुतला मेरा भी लगा देना :
इस शहर की गन्दगी से कुछ कचरा उठा पाऊँ,
तो शहर के किसी कोने में एक पुतला मेरा भी लगा देना..
इस शहर में होते हादसों की मौतों में एक जिन्दगी भी बचा पाऊँ,
तो शहर के किसी कोने में एक पुतला मेरा भी लगा देना...
इस शहर के मयखानों से निकलते लड़खड़ाते कदमों में से,
दो कदम भी संभाल पाऊँ,
तो शहर के किसी कोने में एक पुतला मेरा भी लगा देना..
घुटन होती है इस शहर के सियासती अखाड़े की उड़ती मिट्टी से
चंद छींटे पानी के डाल पाऊँ,
तो एक पुतला मेरा भी शहर के किसी कोने में लगा देना।

एक शायर अनजान
- दिलीप चौबे

रेखा गॅस एजन्सी

द. नं. 109, खान्देश मिल शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, जळगांव. 425001 फोन: (0257) 2221095, 2221195, 2225195, 2228495.
E-mail : rekhagas20032003@rediffmail.com

malhar.org-0821

(र.क्र. 637)

Agrawal Lac Industries

GONDIA

Lakh

Lakh Dana

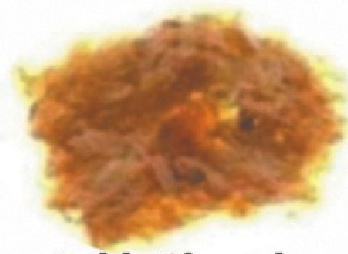

Lakh Chapda

High Class Shellac & Seedlac Manufacturers

With Best Compliments From :

Rakesh Agrawal
Sankalp Agrawal

Post Box No. 11, Near Agrasen Gate, GONDIA - 441601
Tel. (Off.) 237749, (Resi.) 236844, Mobile : 09422133640
E-mail : kingshellac@rediffmail.com

Factory : Near I.T.I., Fulchur Peth, GONDIA - 441601 (M.S.) Tel. : 07182-237874

(र.क्र. 602)

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

अंक 9
सितंबर, वर्ष - 22

सभापति
डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
president@chaturvedimahasabha.in

सचिव
श्री मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी
मोबा. 098711-70559

कोषाध्यक्ष
श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 09868875645

संपादक सलाहकार मंडल
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
पूर्व संपादक

अतिथि संपादक
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
श्री भरत चतुर्वेदी, रिषड़ा

संपादक
शशांक चतुर्वेदी
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', ई-8/जी2/255
गुलमोहर कॉलोनी, भोपाल
(मध्यप्रदेश)
मोबा. 9826086879
ई- मेल :
sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com
वेबसाइट : www.chaturvedimahasabha.in

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

चतुर्वेदी चन्द्रिका

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के शताब्दी वर्ष के अवसर पर

काव्य मणिका

गौरवशाली धरोहर	08-40
स्वर्णिम वर्तमान	41-68
उज्जवल भविष्य	69-75
समाज समाचार	76
शोक समाचार	76

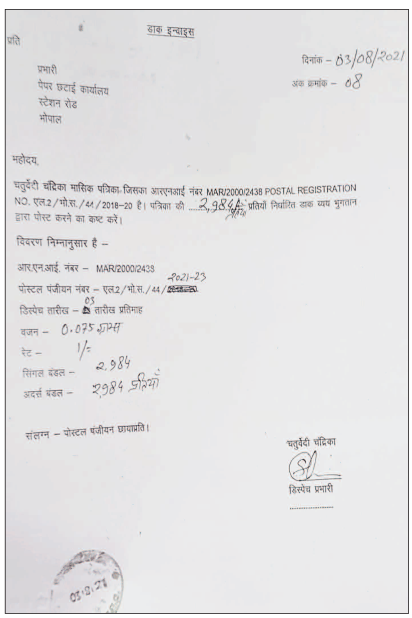
डाक इन्वाइस

प्रति

दिनांक – 03/08/2021
अंक क्रमांक – 08

प्रभारी
पेपर छटाई कार्यालय
स्टेशन रोड
भोपाल

महोदय,

चतुर्वेदी चंद्रिका मासिक पत्रिका जिसका आरएनआई नंबर MAR/2000/2438 POSTAL REGISTRATION NO. एल.2/भो.स./44/2018–20 है। पत्रिका की 2,984 प्रतियाँ प्रतियाँ निर्धारित डाक व्यय भुगतान द्वारा पोस्ट करने का कष्ट करें।

विवरण निम्नानुसार है –

आर.एन.आई. नंबर – MAR/2000/2438
पोस्टल पंजीयन नंबर – एल.2/भो.स./44/2021-23
डिस्पेच तारीख – 03 तारीख प्रतिमाह
वजन – 0.075 ग्राम्स
रेट – 1/=
सिंगल बंडल – 2,984
अदर्स बंडल – 2984 प्रतियाँ

संलग्न – पोस्टल पंजीयन छायाप्रति।

चतुर्वेदी चंद्रिका
डिस्पेच प्रभारी

आवश्यक सूचना

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा वर्तमान में क़रीब 37 परिवारों को अन्नपूर्णा सहायता, छात्रवृत्ति /स्कूल फीस का स्कूल खाते में सीधा स्थानतनरण (प्रधान अध्यापक द्वारा सत्यापित स्कूल के बैंक विवरण के साथ) तथा विशेष अनुदान के लिए सहायता हेतु सहायोग कर रही है। इस सहायता के त्वरित निर्णय हेतु जो भी सम्मानित बांधव आवेदन करना चाहते है उनसे करबद्ध अनुरोध है कि अपना आवेदन केवल माननीय सभापति, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के नाम से ही स्व हस्त लिखित या टाइप करके , किसी भी स्थानीय महासभा कार्यकारिणी सदस्य या महासभा से सम्बध शाखा सभा के सभापति या मंत्री द्वारा अनुमोदित करवा कर, स्व सत्यापित आधार कार्ड की तथा पासबुक की प्रतिलिपि लगा कर , मंत्री महासभा श्री मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी के पते पर ई 103, विवेक विहार , सेक्टर 82 , नॉएडा (उ.प्र.)-201304 पर रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजने कीं कृपा करे । सहायता हेतु मेरा मो. 09871170559 है।

मंत्री
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

Account No. : 1006238340
IFSC Code : CBIN0283533
Branch : Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा आजीवन सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
महासभा सत्र + पत्रिका वार्षिक सदस्यता शुल्क–
101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक शशांक चतुर्वेदी

अपनों से मन की बात

● डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
Email : president@chaturvedimahasabha.in

हिंदी भाषा के क्षेत्र में हमारे समाज का बहुत गौरवशाली इतिहास रहा है। वर्तमान में भी हमारे समाज के अनेक भाषा सेवी बांधव हिंदी भाषा के साहित्य के सृजन, संयोजन, लेखन, परिवर्धन में यथोचित सहयोग कर रहे हैं। काव्य के क्षेत्र में चतुर्वेदी समाज का इतिहास बिहारी जी से कलमबद्ध माना गया है। उसके बाद हास्य अवतार जगन्नाथ प्रसाद जी, दादा बनारसी लाल जी, उमराव सिंह जी, श्री नारायण जी, ऋषिकेश जी, शिवदत्त जी आदि ने अपना उल्लेखनीय योगदान दिया है। महासभा शताब्दी वर्ष के अंतर्गत इस माह शशांक जी के संपादन में चतुर्वेदी चंद्रिका का कविता विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। महासभा के इस शताब्दी विशेषांक में चतुर्वेदी समाज की हिंदी भाषा, साहित्य व काव्य के क्षेत्र में की अनेक भाषा प्रेमी विभूतियों का स्मरण किया गया है। हिंदी भाषा के क्षेत्र में कार्य करने वाले अनेक भाषा सेवी पीढ़ियों का भी इसमें समायोजन किया गया है। इसमें समाज के अधिकतर विद्वानों व विदुषियों का उल्लेख किया गया है। यह एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है। यदि उसमें किसी का उल्लेख छूट गया हो जानकारी भेजें जिसे हम आगामी अंकों में प्रकाशित कर गौरवान्वित होंगे। कविता विशेषण के प्रकाशन में संपादक शशांक जी के सहयोगी डॉ. कुश चतुर्वेदी (इटावा) व भरत चतुर्वेदी (रिसड़ा) को इस अंक के लिए अतिथि संपादक बनाया गया है। महासभा का शताब्दी वर्ष का इतिहास सहेजने का कार्य भरत जी (रिषड़ा) के संयोजन में द्रुत गति से आगे बढ़ रहा है। आप सभी से निवेदन है कि महासभा अधिवेशन, बैठकों आदि के चित्र, अनुभव या महासभा इतिहास संबंधी जानकारी भेजने की कृपा करें।

लगभग 12 वर्षों से आप सभी के सहयोग से महासभा की सामजहित की योजना अन्नपूर्णा योजना निरंतर चल रही है। देश की विषम परिस्थितियों के मद्देनजर महासभा की सहायता राशि को प्रतिमाह 2000/- रुपये के प्रस्ताव को स्वीकार किया गया। विगत वर्ष आप सभी के सहयोग से हम यह कार्य अच्छी तरह से क्रियान्वित करने में सफल हुए। हमने इसमें कुछ बच्चों की शिक्षा में भी सहयोग दिया। यह सब आप सभी के अभूतपूर्व सहयोग के कारण यह पुण्य कार्य संभव हुआ है। आप सभी का आभार। यह प्रक्रिया निरंतर है। नया वर्ष शुरू हो चुका है। अतः आप सभी से निवेदन है कि इस वर्ष की अन्नपूर्णा सहयोग की राशि शीघ्र भेजने की कृपा करें। बहुत-बहुत आभार। चंद्रिका के अगस्त 2021 के अंक में श्रीमती चित्रा जी भोपाल के लेख में दान के महत्व को विस्तार से बहुत अच्छी तरह उल्लेखित किया गया है।

देश में महामारी की विषम परिस्थितियों में समाज में सामाजिकता की अच्छी मिसाल प्रस्तुत की है। महामारी काल में समाज व संगठन के तौर पर लखनऊ, कानपुर, आगरा, भोपाल, गुड़गांव में अच्छा कार्य किया। इन्होंने संगठनात्मक व व्यक्तिगत तौर पर सेवा के अनेक नए मापदंड तय किए। समाज सेवकों को लोकल स्तर पर सभाओं के द्वारा सम्मानित कर प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। संगठन में शक्ति है। जनसंख्या के हिसाब से समाज के बड़े गढ़ों (शहरों) ने समय-समय पर समाज की दिशा तय की है। वह नेतृत्व भी किया है। समाज आज भी उनसे ऐसी ही अपेक्षा करता है।

समाज सेवा अंशकालीन व अवैतनिक कार्य है। समाजसेवी जीविकोपार्जन के कार्य में से समय निकालकर समाज प्रेम के कारण यह कार्य करते हैं। इन्हें प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। आपकी सुविधा के लिए समाज की जन गणना का फार्म गूगल लिंक पर भी जोड़ दिया गया है। अतः अब आप लोग वहां पर जाकर अपने परिवार की जानकारी साझा कर सकते हैं।

संपादकीय

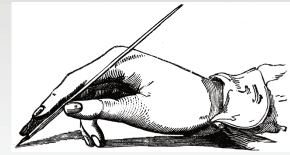

हमारा समाज स्वभावगत साहित्यिक है। विनोद प्रियता हमारा परम्परागत गुण है। हिन्दी साहित्य और कविता का क्षेत्र हमारे मनीषी बांधवों से भरा है। साहित्य के क्षेत्र में विविध प्रकार से हमारे पूर्वजों से लेकर वर्तमान तक हमारे अपने लोगों की सेवायें स्तुत्य हैं। बीती शती के साठ के दशक में परमादरणीय सतीश चंद्र जी, किनारी बाजार, आगरा के प्रयास से चतुर्वेदी का कवि अंक प्रकाशित हुआ था। आधी शताब्दी से अधिक समय बाद आप सबके सहयोग से एक बार फिर हम कवि अंक लेकर उपस्थित हैं। हमने पिछले अंक में बांधवों से प्रार्थना की थी कि उनकी जानकारी में जो कवि हों उनकी रचना हमें अवश्य भेजें। बाँधवों के सहयोग से जो जानकारी हमें मिल सकी। उसे लेकर सेवा में उपस्थित हूँ। हम जानते हैं कि इतने प्रयास के बाद भी बहुत लोग हमसे छूट गए होंगे। ऐसे लोगों को भी हम आगामी अंकों में प्रकाशित कर सकें। यह हमारा प्रयास होगा। चतुर्वेदी समाज में काव्य का इतिहास 1400 ई. से प्रारंभ मान सकते है। जैनन्द मिहारी, पद्मचारी, छीत स्वामी, कुलपति मिश्र, केशव उचाड़ा उल्लेखनीय नाम आदर से लिये जाते है। रीतिकाल के प्रमुख कवि बिहारी हमारे बसुआ गोबिंदपुर के थे। उन्हें गागर में सागर भरने वाला कवि कहा जाता है।हमारे समाज के वैदुष्य की एक तेजस्वी धारा महामहोपाध्याय गिरिधर शर्मा जी की है, तो अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का सभापतित्व करने वाले चतुर्वेदी द्वारिका प्रसाद शर्मा, इटावा और हास्य रसावतार जगन्नाथ प्रसाद जी, मलयपुर की स्वर्णिम परम्परा के हम वाहक हैं। महात्मा गांधी और गुरुदेव रवींद्र नाथ टैगोर के निजी सचिव रहे, विशाल भारत के संपादक पद्मभूषण दादा बनारसीदास जी, फिरोजाबाद और सरस्वती के संपादक पद्मभूषण भैया साहब श्रीनारायण जी, इटावा ,पद्मश्री डॉ. बरसाने लाल जी मथुरा,व्यास सम्मान से अलंकृत प्रख्यात आलोचक डॉ. राम स्वरूप जी कछपुरा/इलाहाबाद, ब्रजकोकिल अमृत लाल जी आगरा, अदभुत काव्य प्रतिभा के धनी हृषिकेश जी आगरा, कवि आनन्द मिश्र जी ग्वालियर, उमराव सिंह पांडेय, प्रेम, मैनपुरी, भोजराज जी मानव शिकोहाबाद, शिवदत्त जी इटावा, नरेंद्र नाथ जी मैनपुरी, डॉ. राजेश्वर प्रसाद जी,आगरा, लक्ष्मी निधि जी, मैनपुरी, हिन्दी निष्ठ न्यायमूर्ति ब्रज किशोर जी,होलीपुरा,चतुर्वेदी के यशस्वी संपादक प्यारे मोहन जी, इटावा, दामोदर दास जी, मलयपुर, कला प्राण बुद्ध जैसी कालजयी कृति के प्रणेता जगदीश चन्द्र जी,मैनपुरी आदि की गौरवशाली परम्परा हमारी थाती है। हिन्दी कवि सम्मेलनों में जिन्हें देश तन्मयता से सुनता रहा, उनमें आदरणीय राम कुमार चतुर्वेदी चंचल,शैल चतुर्वेदी, प्रदीप चौबे, डॉ. हिमांशु चतुर्वेदी की परम्परा को आज भी श्रद्धेय सुरेश नीरव जी, वरुण जी, राजेंद्र रंजन जी (पानीपत), सूफी सुरेंद्र जी,हरेश जी,डॉ.कुश जी,संतोष चौबे जी,भरत अचल जी,धर्मेश जी,मोहन वैरागी जी,अटल राम जी,बल्लू जी मथुरा आदि आदि पूरी निष्ठा से निभा रहे हैं। इस अवसर पर हम अपनी मूल धरा मथुरा की तेजस्वी परम्परा का स्मरण न करें तो बड़ी भूल होगी। समाज का इतिहास लिखने वाले बालमुकुंद जी,कवि नवनीत जी,श्रीवर जी,भगवान दत्त जी, लक्ष्मण दत्त जी और डॉ. वासुदेव कृष्ण जी आदि ऐसे अनेक नाम हैं। जिनका संरक्षण हमें मिलता रहा है। समाज के इतिहास को नए रूप में प्रो. हेरम्ब चतुर्वेदी, इलाहाबाद ने प्रस्तुत किया।

प्रख्यात व्यंग्यकार गोपाल जी और ज्ञान जी को आज कौन नहीं जानता। समय समय पर हमारी मातृ शक्ति ने भी साहित्य को समृद्ध किया है। समाज के लोक रीति के गीतों को पहली बार संकलित करने वाली मनोरमा जी,सिद्ध कवयित्री किशोरी देवी जी,वैजयंती जैसी लोकप्रिय कृति की प्रणेता चित्रा चतुर्वेदी कार्तिका,लोक साहित्य में पुरस्कृत रागिनी जी इलाहाबाद,समीक्षक डॉ. अनुपमा चतुर्वेदी शिकोहाबाद,कवयित्री अनुपमा जी कुवैत,अपर्णा जी प्रीता जयपुर, निरूपमा जी रूपम,वीणा जी, ऊषा जी भोपाल,पत्रिका की पूर्व संपादक विनीता चौबे,नीरा मिश्रा जी आदि आदि विविध भांति से साहित्य जगत की सेवा में रत हैं। हमने प्रयास किया है कि अधिकतम लोगों को सम्मिलित किया जा सके। हमारी जानकारी का स्रोत केवल आप सबसे संपर्क में मिली जानकारी भर है। उसमें अनजाने में मुझसे अगर कोई त्रुटि हो गई हो तो अपना अनुज मानकर मुझे क्षमा कर देंगे ऐसा मेरा विश्वास है। जिन रचनाकारों की रचनायें हमें अभी नहीं मिल सकीं, भविष्य में उनका सहयोग हमें जरूर मिलेगा यह उम्मीद मुझे रहेगी। महासभा के शताब्दी वर्ष के अवसर पर प्रस्तुत कविता विशेषांक के संयोजन में सभापति डॉ. प्रदीप जी का पूर्ण सहयोग व मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। डॉ. कुश जी (इटावा) व भाई भरत जी (रिषड़ा) का सामग्री संयोजन में भरपूर सहयोग रहा। अतः मैं अपनी भावनाओं को सम्मान स्वरूप प्रदर्शित करते हुए इन दोनों अग्रजों को इस अंक हेतु अतिथि संपादक बना कर गौरवान्वित हूँ। इस विशेषांक के संयोजन में डॉ. कुश जी (इटावा), भरत जी (रिषड़ा),उषा जी (भोपाल), अवनींद्र जी (इंदौर), तनुजा जी (कमतरी/लखनऊ) शुभ्रा धीरेंद्र जी (इंदौर) का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। आप सभी का बहुत-बहुत आभार। पालागन!

– शशांक चतुर्वेदी

गौरवशाली धरोहर

महाकवि बिहारी

महाकवि बिहारी का जन्म ग्वालियर के निकट बसुवा गोविन्दपुर नामक ग्राम में सम्वत 1660 वि. (सन 1603 ई.) में हुआ था। इनके पिता का नाम केशवराय था। इनका विवाह मथुरा में हुआ था और अपनी युवावस्था में वे ससुराल में ही रहे। बाद में कुछ समय आगरा में रहे और फिर जयपुर के मिर्जा राजा जयसिंह के यहां गए राजा जयसिंह अपनी नव विवाहिता के प्रेम पाश में आबद्ध होकर राजकाज भूल गए थे। बिहारी की एक श्रृंगारिक अन्योक्ति ने राजा को सचेत कर कर्तव्य पथ पर अग्रसर कर दिया। वह दोहा है :

दोहा : नहिं परागु नहिं मधुर मधु, नहिं विकासु इहिं काल।
अली कली ही सों बिंध्यौ, आगे कौन हवाल।।

इस दोहे ने राजा जयसिंह की आंखें खोल दी और उन्होंने बिहारी को अपने दरबार में स्थान दिया। उसके बाद यहीं रहते हुए बिहारी ने राजा जयसिंह की प्रेरणा से अनेक सुन्दर दोहों की रचना की। कहा जाता है कि उन्हें प्रत्येक दोहे की रचना के लिए एक अशर्फी (स्वर्ण मुद्रा) प्रदान की जाती थी। अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद बिहारी भक्ति और वैराग्य की ओर मुड़ गए। सम्वत 1720 (सन 1663 ई.) में उनकी मृत्यु हो गई।

✦✦✦

बिहारी

***

ब्रजभाषा बरनी सवै, कविवर बुद्धि विसाल।
सबको भूषण सतसई, रची बिहारीलाल।
जनम ग्वालियर जानियै, खंड बुंदेले बाल।
तरुनाई आई सुधर, मथुरा बसि ससुराल।।

बिहारी जी के पिता केशवराय थे तथा वे धौम्य घरवारी माथुर चौबे थे।

प्रगट भए द्विजराज कुल, सुबस बसे ब्रज आइ।
मेरो हरो कलेस सब, केशव केशवराइ।।

बिहारी जी का समस्त काव्य मूलतः श्रृंगार भावना से अनुप्राणित है।

कहत, नटत, रीझत,खीझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौंन में करत हैं नैनन ही सब बात।।
उड़ति गुड़ी लखि ललन की, अंगना अंगना मांह।
बौरी लौं दौरी फिरति, छुवति छबीली छांह।।
सतसैया के दोहरे अरु नाविक के तीर।
देखन में छोटे लगैं, घाव करैं गंभीर।।

श्रृंगार रस के ग्रंथों में जितनी ख्याति और मान बिहारी सतसई का हुआ उतना और किसी का नहीं हो सका इसका एक एक दोहा हिंदी साहित्य में एक रत्न माना जाता है।

– महाकवि बिहारी

✦✦✦

हास्यरसावतार स्व.पं. जगन्नाथ प्रसाद जी

नाम : मई के मिश्र हास्यरसावतार स्व०पं० जगन्नाथ प्रसाद जी

हिन्दी की सेवा :

एफ०ए० होने के बाद उनका हिन्दी के प्रति स्वाभाविक अभिरुचि को स्व०बालमुकुंद गुप्त से मित्रता ने और परिमार्जित किया। हितवार्ता और भारतमित्र में रचनाएँ छपने लगी। सन 1903 में कुछ महीनों के लिए हितवार्ता के संपादक बने तत्पश्चात भारतमित्र का संपादन लंबे समय तक किया।

बोर्ड ऑफ एक्ज़ामिनर्स कलकत्ता विश्वविद्यालय में थर्ड पंडित के पद पर लगभग एक वर्ष (सन 1904)

हिन्दी साहित्य सम्मेलन स्थापना हेतु अर्थसंग्रह के लिए स्व० श्यामसुन्दर दास जी का कलकत्ता में सहयोग (सन 1908)

कलकत्ता विश्वविद्यालय में हिन्दी एम० ए० के अध्यापन और परीक्षा प्रारम्भ करवाने में खास मित्र श्री घनश्याम दास जी बिरला ने कलकत्ता विश्वविद्यालय को पर्याप्त धन दिया जिससे यह संभव हो सका। (सन 1909)

सन 1910 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन स्थापित होने पर आपने सदस्यता ग्रहण की।

सन 1919 में आपने बिहार प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना की और प्रथम अधिवेशन में सभापति

सन 1922 में द्वादश अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के लाहौर में हुए अधिवेशन में सभापति निर्वाचित

आप ज्यादातर पत्र – पत्रिकाओं में हिन्दी को विकसित करने या लेखकों की रचनाओं में त्रुटियों की आलोचनात्मक निबंध या लेख लिखते

कलकत्ता निवास (सन 1893 – 1925) के दौरान बंगला साहित्य का अध्ययन कर पारंगत हुए। इस क्रम में सन 1899 में स्व० प्रफुल्लचन्द्र मुखर्जी के बंगला उपन्यास का हिन्दी में रूपांतरण संसारचक्र नाम से किया।

इसके अलावा शेक्सपीयर के टेम्पेस्ट नामक नाटक के

चार्ल्स लैबकृत कथासार का अनुवाद (सन 1902) तूफान नाम से किया।

चपड़े के ब्यापार में घाटा लगने के उपरांत सन 1925 में कलकत्ता छोड़ मलयपुर लौट आये।

मलयपुर आते ही उनके एक अविवाहित वयोबृद्ध मामा जो 500 एकड़ के जमीदार थे, सम्पूर्ण जमींदारी इनके नाम कर स्वर्ग सिधार गए। माँ सरस्वती की कृपा तो थी माँ लक्ष्मी की कृपा बरस गई।

सन 1932 में श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के प्रयाग अधिवेशन में सर्वसम्मति से सभापति घोषित किये गए।

सन 1927 में स्थित खैरा स्टेट के मैनेजर की नियुक्ति मिली। सन 1935 में गिरते स्वास्थ्य के कारण त्यागपत्र दे मलयपुर वापस आ गए। गिरते स्वास्थ्य के कारण ही उनका देहावसान सन1939 में हो गया।

✦✦✦

कवि-पंडित हृषीकेश चतुर्वेदी

हिन्दी–कविता–में–चमत्कार–काव्य–के–एकमात्र–कवि–पंडित हृषीकेश चतुर्वेदी

हृषीकेश चतुर्वेदी का जन्म सन १९०७ में आगरा के एक प्रतिष्ठित एवम धनाढ्य परिवार में हुआ। मात्र १४ वर्ष की आयु में उनकी पहली कविता प्रकाशित हुई। हिन्दी चमत्कार साहित्य के वे अनन्य साधक थे। वर्ष १९२८ में उन्होंने 'चामरबंध' लिखकर चमत्कार काव्य का श्रीगणेश किया। उन्होंने देश भक्ति के गीत लिखे, शृंगार रस की रचनाएँ की, भक्ति रस में डूबकर छन्द लिखे, हास्य व्यंग की रचनाएँ लिखीं। ईश्वर ने उन्हें सुदर्शन व्यक्तित्व प्रदान किया था। फर्रूखाबाद के एक कवि सम्मेलन के सभा पति के रूप में मैंने उन्हें देखा था आज भी उनका वह चेहरा मेरे स्मृति पटल पर ज्यों का त्यों अंकित है। गौर वर्ण, शालीन, गोल चेहरा, तिलक मंडित भव्य भाल, चपल मुस्कराती बड़ी बड़ी आँखें, सुगढ़ सुतवाँ नाक, मंद सिम्त से सजे अधर, अत्यंत प्रभावशाली एवम अभिजात्य पूर्ण चेहरा जिस पर विद्वता की स्पस्ट झलक प्रतिबिंबित हो रही थी। वे काली शेरवानी और सफ़ेद चूड़ीदार पजामा पहने थे। सर पर बड़े सुन्दर तरीके से बँधा जयपुरिया साफा उनके सुदर्शन व्यक्तिव को चार चाँद लगा रहा था। जिस कुशलता एवं सौम्यता से उन्होंने कवि सम्मेलन का संचालन किया वह देखते ही बनता था। वे अत्यंत मृदु भाषी एवं शिष्टाचार सम्पन्न व्यक्ति थे।

हृषीकेश जी कवियों के कवि थे। उनके जीवन काल में प्रति सप्ताह सोमवार को उनके निवास स्थान पर उदीयमान कवियों की गोष्ठी आयोजित होती थी जहाँ वे रचना के गूढ़ एवं सूक्ष्म सिद्धांन्तों के ज्ञान भी करवाते थे।

हृषीकेश जी जहाँ कवियों के कवि थे वहाँ वे साधारण जन के भी लोकप्रिय कवि थे। मथुरा के विशेष समारोहों मुख्य रूप से होली पर लोकगीत जिन्हें तान कहा जाता था, गाए जाते हैं। हर होली पर मथुरा से लोक गायक उनसे तानें लिखवाने आते थे और हृषी केश जी उनके बीच बैठकर पूर्ण तन्मयता से नयी तानों की रचना करके उन लोकगायकों को स्नेहपूर्वक सौंपकर विदा करते थे। वास्तव में वे एक लोक प्रिय जनकवि थे।

हृषीकेश जी पर माँ सरस्वती की विशेष कृपा रही। जिससे उनका बहुमखी विकास संभव हुआ। उन्होंने संस्कृत एवं हिंदी में काव्य रचनाएँ कीं अंग्रेजी व संस्कृत कविताओं के हिंदी कविताओं में अनुवाद किए, चित्र काव्य बनाए, हिंदी में ग़ज़लें लिखीं। उन्होंने भक्ति रस, शृंगार रस एवं मृदुल व्यंग की विशेष रूप से अनके रचनाएँ रची जिन्होंने हिंदी काव्य जगत की उच्च श्रेणी की रचनाओं में अपना स्थान बनाया। उनमें साहित्य एवं संगीत दोनों का अनूठा संगम था, हारमोनियम बड़ी कुशलता से बजाते थे। कविता पाठ वे हमेशा सस्वर करते थे और श्रोता मन्त्र मुग्ध हो रचनाओं का आनंद लेते थे। भक्ति रस की उत्कृष्ठ रचनाओं में उनकी उत्कृष्टता, चामत्कारिक रचना, राम कृष्ण काव्य है। यह हिंदी कविता का एक मात्र विलोम काव्य है जिसमें उन्होंने अपने आराध्य द्वय भगवान राम और कृष्ण की गाथा का वर्णन किया है। हर पंक्ति सीधी पढ़ने पर जहाँ भगवान राम का चरित्र वर्णन करती है वो वहीँ उलटी ओर से पढने पर वही पंक्ति भगवन कृष्ण का गौरव गान करती है। हिंदी काव्य में कोई अन्य इस प्रकार का विलोम काव्य अभी तक नहीं लिखा गया। हृषीकेश जी सचमुच एक शब्द शिल्पी कवि थे।

प्रथम उदाहरण

राम हरें कष्ट तीव्र धारा (राम पक्ष)

इसी पंक्ति को दूसरी ओर से पढ़ने पर

राधा व्रती इष्ट करें हमारा (कृष्ण पक्ष) (वर्ष १९४३)

दूसरा उदाहरण

विषय – श्री राम जन्म

हुए कुल बालक तारक चार

हुए कुल पालक तारक चार

भावार्थ – जगत को तारने वाले श्रीराम भरत लक्षमण शत्रुघ्न नामक चार कुल पालक सुन्दर बालकों ने जन्म लिया

विषय – श्री कृष्ण जन्म

रचा करता कल बालकु एहू

रचा करता कुल पालकु एहू

भावार्थ – कर्ता ने यह कुल पालक सुन्दर बालक श्री कृष्ण रचा

इस विलोम काव्य में कुछ ४९ छंद हैं

चतुर्वेदी जी ने इसी कर्म में एक अन्य चमत्कार पूर्ण प्रबंध काव्य श्री रामकृष्णायन की रचना की। यह कृति एक ही ओर से पढने पर श्री राम एवं श्री कृष्ण दोनों की कथा का वर्णन करती है। एक ही पंक्ति में केवल अर्धविराम

अथवा ' –' लगाकर पढने से अर्थ राम परक से कृष्ण परक हो जाता है। इस यमक श्लेष में लिखे गए काव्य में ३५ छंद हैं।

उदहारण

श्री राम पक्ष

मन सोचत श्रीवस देव जम न बीच रहें
है प्रभु पग जल संसर्ग नर वर पार गहै
वे 'गो' कुल अधिपति आप, आनंद नन्द भये
गो सहस्त्र 'दसरथ ' राय विप्रनी दान दये

श्री कृष्ण पक्ष

मन सोचत श्रीवसदेव , ' जमना बीच रहैं
है प्रभु पग जल संसर्ग नर वर पार गहैं
वे गोकुल अधिपति आप, आ नन्द नन्द भये
गो सहस्त्र दस रथ 'राय' विप्रनी दान दये

उदहारण

(विजय वाटिका से)

बूटी ये सड़ाकर न बनाई जाती,
सज्जन –समाज ही को ये प्रायः न भाती
दुर्गन्ध, भभक का है नाम भी न यहाँ
इसमें इलायची की महक ही आती
छिप छिप के 'कलारी' को लोग जाते हैं ;
डर– डर के ही प्याले से मुंह लगते हैं
डंके की चोट जाके बगीची अलमस्त ,
ललकार के, लोटे को नित चढाते हैं

(भंग का लोटा से)

नयन सुबिम्बित हैं लोटे में नयनों में बिम्बित लोटा ;
अधंरा विचुम्बित हैं लोटे से, अधर से चुम्बित लोटा
इस अन्योन्य प्रणय का वर्णन कवि कितना कर सकता है
वे हैं अवलंबित लोटे पर उन पर अवलंबित लोटा

कुछ उदहारण अन्य रसों के –

मृदुल व्यंग –

दोऊ टाइम हवा खात, बैद जू की दावा खात
ब्याज सौ पैसवा खात, अति इतरात हैं
दबि कें रहम खात, चारि में सरम खात
कौड़ी पै कसम खात, बढ़ी बतरात हैं
पञ्च बनि घूस खात, निर्बल कों चूसि खात,
सुधरे कों भूसी खात , मन मुस्कात हैं
एते हु पै अम्मा कहैं, लल्ला कछु खात नाहीं
लल्ला तो बिचारे खात– खात न अघात हैं

श्रृंगार रस –

कर हटाई खोले नयन, लीन्ही ह्रदय लगाई
यह अनो न्य अनन्यरति, बरनन बरनी न जाई

श्रृंगार का यह शुद्ध रूप, जहाँ अश्लीलता लेश मात्र भी न हो यह चुतर्वेदी जी ही कर सकते थे।

एक अन्य श्रृंगार शब्द चित्र देखिए

विधि जौहरी की अधखुली अंजुरी में मानो,
नीलमणि–कनिका है कंचन कटोरी में

इसके अतिरिक्त उन्होंने संस्कृत ग्रन्थ व अंग्रेजी कविताओं का हिंदी में अनुवाद भी किया।

उदाहरणार्थ – श्री दुर्गा सप्तशती,

चतुर्वेदी जी छंद शास्त्र के अपने युग सर्व श्रेष्ठ ज्ञाता थे। उन्होंने जीवन पर्यंत कविता– साधना की। उनकी अनन्य साधना ने, उनके छंद शास्त्र के ज्ञान ने सम्मिलित रूप से उन्हें कीर्ति के कठिन सोपानों को लांघने में सहायता प्रदान की। उनके शब्द शिल्प ने उन्हें 'श्री राम कृष्णायन' एवं हिंदी के एक मात्र विलोम काव्य 'श्रीराम कृष्ण' काव्य नामक काल जयी रचनाएँ सृजित करने की क्षमता प्रदान की। उर इस अथक साधना के फलस्वरूप वे हिंदी साहित्य में कीर्ति अर्जक रहे। हिंदी साहित्य का इतिहास(डॉ नागेन्द्र) के पृष्ठ ६५२ पर उनकी कीर्ति गाथा निम्न शब्दों में अंकित है–

'इसी प्रकार की एक अन्य प्रसिद्ध रचना के कवि हृषिकेश चतुर्वेदी जी का 'रामकृष्ण –काव्य' (१९४३) हैं। कलात्मक अभिव्यंजना की दृष्टी से यह एक महत्त्व पूर्ण कृति है यमक श्लेष मयी इस रचना में शब्द योजना इस ढंग से की गई है कि एक ओर से पढने पर पंक्ति का अर्थ राम परक निकलता है, तो विलोम रूप में पढने से कृष्ण परक।

कीर्ति मनुष्य को स्मृति के रूप में अमर नव जीवन देने वाली दूसरी मात होती है। आयुष्य की गिनती कीर्ति के मान दंड से ही मापी जाती है। केवल जीवित रहना ही जीना नहीं है। जीवन कैसा होना चाहिए यह कीर्ति बताया करती हैं। हृषिकेश जी हिंदी काव्य एवं साहित्य के कीर्ति अर्जक एवं युग के छंद शास्त्र ज्ञाता एवं पुरोधा थे। सन १९७० में काव्य शास्त्र के इस सूर्य का अस्त हो गया।

– भरतचंद्र मिश्र

+++

पण्डित बनारसीदास चतुर्वेदी

(२४ दिसम्बर, १८९२ -- 2 मई, १९८५) प्रसिद्ध हिन्दी लेखक एवं पत्रकार थे। वे राज्यसभा के सांसद भी रहे। उनके सम्पादकत्व में हिन्दी में कोलकाता से 'विशाल भारत[1]' नामक हिन्दी मासिक[2] निकला। पं॰ बनारसीदास चतुर्वेदी जैसे सुधी चिंतक ने ही साक्षात्कार की विधा को पुष्पित एवं पल्लवित करने के लिए सर्वप्रथम सार्थक कदम बढ़ाया था। उनकी साहित्यिक सेवाओं के लिए उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया गया था।

वे अपने समय का अग्रगण्य संपादक थे तथा अपनी विशिष्ट और स्वतंत्र वृत्ति के लिए जाने जाते हैं। उनके जैसा शहीदों की स्मृति का पुरस्कर्ता (सामने लाने वाला) और छायावाद का विरोधी समूचे हिंदी साहित्य में कोई और नहीं हुआ।[3] उनकी स्मृति में बनारसीदास चतुर्वेदी सम्मान दिया जाता है। कहते हैं कि वे किसी भी नई सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक या राष्ट्रीय मुहिम से जुड़ने, नए काम में हाथ डालने या नई रचना में प्रवृत्त होने से पहले स्वयं से एक ही प्रश्न पूछते थे कि उससे देश, समाज, उसकी भाषाओं और साहित्यों, विशेषकर हिंदी का कुछ भला होगा या मानव जीवन के किसी भी क्षेत्र में उच्चतर मूल्यों की प्रतिष्ठा होगी या नहीं?

सन 1892 ई में 24 दिसंबर को उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद में जन्मे चतुर्वेदी जी 1913 में इंटर की परीक्षा पास करने के बाद पास ही स्थित फर्रुखाबाद के गवर्नमेंट हाईस्कूल में तीस रुपये मासिक वेतन पर अध्यापक नियुक्त हो गए। लेकिन अभी कुछ ही महीने बीते थे कि उनके गुरु पंडित लक्ष्मीधर वाजपेयी ने उन्हें अध्यापन छोड़कर आगरा आने और 'आर्यमित्र' संभालने का आदेश सुना दिया। लक्ष्मीधर जी उन दिनों आगरा से आर्यमित्र निकालते थे। वास्तव में, वाजपेयी द्वारिकाप्रसाद सेवक के बुलावे पर उनके मासिक 'नवजीवन' के संपादक बनने वाले थे और 'आर्यमित्र' को ऐसे संपादक के हवाले कर जाना चाहते थे, जो उनके भरोसे पर खरा उतर सके।

चतुर्वेदी जी लक्ष्मीधर वाजपेयी की आज्ञा शिरोधार्य भी कर ली थी, लेकिन इसी बीच उन्हें इन्दौर के उस डेली कॉलेज में नियुक्ति का आदेश मिल गया। चतुर्वेदी जी को इंदौर में पहले तो डॉ. संपूर्णानन्द का साथ मिला, जो उसी कॉलेज में शिक्षक थे, फिर वहां हिंदी साहित्य सम्मेलन आयोजित हुआ तो उसकी अध्यक्षता करने आए महात्मा गांधी के सान्निध्य व संपर्क ने उनकी लगातार बेचैन रहने वाली सेवाभावना व रचनात्मकता को नए आयाम दिए।

महात्मा गांधी ने 1921 में गुजरात विद्यापीठ की स्थापना की तो उनके आदेश पर चतुर्वेदी जी अपनी सेवाएं अर्पित करने वहां चले गए। इससे पहले गांधीजी ने चतुर्वेदी जी से हिंदी को राष्ट्रभाषा के तौर पर प्रतिष्ठित करने के अपने अभियान के संदर्भ में देश भर से अनेक मनीषियों के अभिप्राय एकत्र करवाए, जिसको पुस्तकाकार प्रकाशित किया गया।

लेकिन शिक्षण का काम उन्हें इस अर्थ में कतई रास नहीं आ रहा था कि उसमें ठहराव बहुत था जबकि उनकी रचनात्मक प्रवृत्ति को हर कदम पर एक नई मंजिल की तलाश रहती थी। अंततः एक दिन उन्होंने गुजरात विद्यापीठ से अवकाश लेकर पूर्णकालिक पत्रकार बनने का निर्णय कर डाला। कोलकाता से प्रकाशित मासिक 'विशाल भारत' ने उनके संपादन में अपना स्वर्णकाल देखा। उस समय का बिरला ही कोई हिंदी साहित्यकार होगा, जो अपनी रचनाएं 'विशाल भारत' में छपी देखने का अभिलाषी न रहा हो।

चतुर्वेदी जी गणेशशंकर विद्यार्थी को महात्मा गांधी के बाद अपने पत्रकारीय जीवन की सबसे बड़ी प्रेरणा मानते थे, जिनकी उन्होंने जीवनी भी लिखी है। 1930 में उन्होंने ओरछा नरेश वीरसिंह जू देव के प्रस्ताव पर टीकमगढ़ जाकर 'मधुकर' नाम के पत्र का संपादन किया। नरेश ने उन्हें उनके निर्विघ्न व निर्बाध संपादकीय अधिकारों के प्रति आश्वस्त कर रखा था लेकिन बाद में उन्होंने पाया कि चतुर्वेदी जी 'मधुकर' को राष्ट्रीय चेतना का वाहक और सांस्कृतिक क्रांति का अग्रदूत बनाने की धुन में किंचित भी 'दरबारी' नहीं रहने दे रहे, तो उसका प्रकाशन रुकवा दिया। भारत के स्वतन्त्र होने के पश्चात चतुर्वेदी जी बारह वर्ष तक राज्यसभा के मनोनीत सदस्य रहे और 1973 में उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया गया

2 मई, 1985 को इस दुनिया से विदा लेने से पहले उन्होंने अपने खाते में 'साहित्य और जीवन', 'रेखाचित्र', 'संस्मरण', 'सत्यनारायण कविरत्न', 'भारतभक्त एंड्रयूज़', 'केशवचन्द्र सेन', 'प्रवासी भारतवासी', 'फिज़ी में भारतीय', 'फिज़ी की समस्या', 'हमारे आराध्य' और 'सेतुबंध' जैसी रचनाएं जमा कर ली थीं। उन्होंने कई विदेश यात्राएं कीं और देश-विदेश में अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक व साहित्यिक संस्थाओं और प्रतिभाओं के पुष्पन-पल्लवन में भी विशिष्ट योग दिया।

भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन के लोकप्रिय लेखक सुधीर विद्यार्थी कहते हैं कि वे 1972 में चतुर्वेदी जी द्वारा संपादित आगरा के 'युवक' मासिक के 'स्वतंत्रता संग्राम योद्धांक' से प्रेरित होकर ही क्रांतिकारियों की कीर्ति रक्षा के मिशन में लगे। वे चतुर्वेदी जी को अपना 'गुरुवर' बताते हैं और स्बयं को उनका 'प्रिय विद्यार्थी'।

श्री नारायण चतुर्वेदी

श्री नारायण चतुर्वेदी का जन्म उत्तर-प्रदेश के इटावा जनपद में सन् 1895 ई० में हुआ माना जाता है तथा श्रीनारायण जी इसी जन्मतिथि के हिसाब से ही भारत सरकार की राजकीय सेवा से सेवानिवृत भी हुये। (हाँलांकि इनकी मृत्यु के उपरांत प्रकाशित आत्मकथा 'परिवेश की कथा' में उन्होने अपना जन्म आश्विन कृष्ण तृतीया, अर्थात 28 दिसम्बर 1893 ई0 की मध्यरात्रि को होना अवगत कराया है)। इनके पिता श्री द्वारिका प्रसाद शर्मा चतुर्वेदी उस क्षेत्र में अपने समय के संस्कृत भाषा के नामी विद्वान थे। पिता की विद्धता का सीधा प्रभाव श्रीनारायण जी पर पड़ा और इनकी शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से इतिहास विषय में एम0ए0 करने के साथ पूर्ण हुयी। कालान्तर में इन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन से शैक्षणिक तकनीकी में उच्च शिक्षा भी ग्रहण की। स्वतंत्रता से पूर्व उन्होंने सन् 1926 से 1930 तक जिनेवा में भारतीय शैक्षिक समिति के प्रमुख के रूप में भाग लिया। ये कई वर्षो तक उत्तर प्रदेश सरकार के शैक्षिक विभाग के भी प्रमुख रहे। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत इन्होंने आल इंन्डिया रेडियो के उप महानिदेशक (भाषा) के रूप में तैनात रहकर हिंदी भाषा विज्ञान के विकास के संबंध में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हुये सेवानिवृत हुये।

इनकी ख्याति एक कवि, पत्रकार, भाषा-विज्ञानी तथा लेखक के रूप में है।

✦✦✦

श्री जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी

माथुर चतुर्वेदी के सौश्रवस गोत्रीय मई के मिश्र, का जन्म तत्कालीन ईस्ट बंगाल के नदिया जिले के मेहरपुर थाने के अंर्तगत छिटका ग्राम (वर्तमान में बांग्लादेश के कुष्टिया जिला के अंतर्गत) की जमींदारी में विजयादशमी संवत 1932 (सन 1875) को हुआ था। साधारणतः भदावर स्टेट में बटेश्वर के नजदीक ग्राम मई स्थित है, जहाँ सौश्रव गोत्रीय मिश्र लोगों का गढ़ था। इसकी गिनती भदावर के गांवों में होती है।

जगन्नाथ जी के प्रपितामह नंदराम जी नावों से माल मिर्ज़ापुर से मुर्शिदाबाद और मुर्शिदाबाद से मिर्जापुर पहुँचाते थे। मिर्जापुर में खानदानी कोठी थी जिसकी शाखा पटना में भी थी। मजे का काम काज चल रहा था। मुर्शिदाबाद में उनकी मुलाक़ात बटेश्वर के पाठक बिहारीलाल जी से हुई।

पाठक बिहारीलाल जी कलकत्ता प्रवासी थे। गंगा व गौ के कट्टर भक्त थे। गंगा के किनारे बड़ाबाजार में निवास था। नित्य गंगा स्नान करते। कसाइयों से गाय छीन लिया करते थे। मुकदमे होते उसे वो वहां के रईसों की मदद और सिफारिश से जीत जाते थे। इन रईसों ने रोज रोज के झंझट से बचने के लिए ईस्ट इंडिया कंपनी से ईस्ट बंगाल के नदिया जिले के मेहरपुर थाने के अंर्तगत छिटका गांव की जमींदारी दिलवाकर पाठक जी को वही रहने को राजी कर, भेज दिया। ये छिटका गांव मुर्शिदाबाद के पास ही है और वर्तमान में बंगलादेश के कुष्टीया जिले में पड़ता है।

पाठक जी के एक पुत्र व एक पुत्री थी। पुत्र ब्रह्मचारी थे, युवावस्था में ही गंगा में जल समाधि ले ली थी। अन्ततोगत्वा पाठक जी छिटका में अपनी पुत्री के साथ रहते थे। पाठक जी से नंदराम जी की घनिष्ठता बढी और आना जाना भी शुरू हुआ। समय गुजरा पाठक जी ने बेटी मुन्नी का विवाह नन्दराम के इकलौते बेटे बंशीधर से कर अपने समधी और जमाता को छिटका में बसा लिया। पाठकजी के बाद बंशीधर जी ही छिटका के जमींदार मालिक बने। उनके एक पुत्री पार्वती और चार पुत्र, तुलसी प्रसाद जी, काली प्रसाद जी, लक्ष्मीनारायण जी और गणेश प्रसाद जी हुए।

तुलसीप्रसाद जी के एक पुत्री लीलावती हुई और छह बरस बाद कालीप्रसाद जी यहाँ एक पुत्र का जन्म छिटका में हुआ। जो कालांतर में जगन्नाथप्रसाद के नामसे प्रसिद्ध हुए।

जगन्नाथ जी जब सौरी में थे, छिटका की हवेली जल कर राख हो गई। उनके तीनों मामा, बलदेवलालजी, गिरधरलालजी, जयकृष्णलालजी (नूनू चौबे), अपनी दोनों बहनों को भांजी व भांजे को मलयपुर ले आये। यहीं दोनों का लालन-पालन ही नहीं, विवाहादि भी मामा लोगों ने ही किये। मामा तीनों अविवाहित थे अतएव उनका पूरा लाड़ प्यार इन दोनों को मिला। फलतः जगन्नाथजी अपनी बड़ी चचेरी बहन के साथ अपनी ननसार (मलयपुर) में ही अपने मामाओं की छत्रछाया में रहे। तीनों मामा अविवाहित थे और यही हाल मलयपुर के अन्य चतुर्वेदी घरों का था।अतः ननसार ही नहीं मलयपुर के सभी चौबों से भांजे के रूप में प्रेम मिला।

✦✦✦

श्रीमती किशोरी चतुर्वेदी

शिक्षा : विधिवत शिक्षा प्राप्त नहीं हुई। घर पर ही हिन्दी-अंग्रेज़ी का ज्ञान प्राप्त किया।

निवासी : मलयपुर (बिहार)/कमतरी

साहित्य साधना :

ब्रज भाषा तो मातृभाषा थी ही।

बचपन से ही गद्य-पद्य रचना करने लगी थीं जो चतुर्वेदीपत्रिका सहित अन्य पत्रिकाओं में प्रकाशित हो थीं।

13 वर्ष की आयु में पहली बार सार्वजनिक मंच पर कविता पाठ किया जो आगे भी अबाध गति से चलता रहा।

डॉ.रमाशंकर शुक्ल रसाल, सनेहीजी, नवीन जी, पं सोहनलाल द्विवेदी , श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान, श्रीमती विद्या वती कोकिल तथा सुश्री महादेवी वर्मा आदि के सानिध्य में उन्होंने कविता पाठ किया और श्री शिवमंगल सिंह सुमनजी से भी सराहना पाई।

हास्यरसावतार स्व०पं जगन्नाथ प्रसाद जी के तृतीय पुत्र श्री राधा बल्लभ जी के साथ विवाहोपरान्त उन्हें स्वसुर जी का भी प्रोत्साहन मिला और गृहस्थी के साथ-साथ साहित्य साधना भी चलती रही।

प्रकाशित पुस्तकें :

1 – काव्यांजलि – (ब्रजभाषा की कविताओं का संग्रह)

2 – विनयावली – (ब्रजभाषा में रचित भक्तिरस के 108 पदों का संग्रह)

3 – तरंगिणी – (खड़ी बोली की कविताओं का संग्रह)

4 – जय देवि स्वतंत्रते – (स्वतन्त्रता एवं देशप्रेम पर आधारित कविताओं का संग्रह)

5 – अप्रकाशित – इसके अतिरिक्त बाल कविताओं का संग्रह, बाल कथाओं का संग्रह, यात्रा वर्णन का संग्रह, तथा संस्मरणों का एक संग्रहअप्रकाशित है।

सम्मान :-

1- मंच पर कविता पाठ के लिए उन्हें अनेकों स्वर्ण तथा रजत पदक प्राप्त हुए।

2 – सन 1939 में बिहार गौरव कविता पर बिहार का प्रतिष्ठित बेली पुरस्कार

3 – सन 1946 में कलकत्ता में जय हिंद कविता पर पुरस्कृत

4 – सन 1949 में पुनः हमारा देश कविता पर बिहार का प्रतिष्ठित बेली पुरस्कार दिनकर जी के कर कमलों से मिला

5.– सहारनपुर के हिंदी संस्थान विभावरी ने विशेष सम्मान प्रदान किया

6.– सहारनपुर के ही मुन्ना लाल खेमका डिग्री कालेज के हिंदी विभाग ने पुरस्कृत किया।

7.– रुड़की विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग ने भी आपको सम्मानित किया।

8.– सन 1997 में उत्तरप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन के फ़रुख़ाबाद अधिवेशन में 80 वर्षीय किशोरी जी को साहित्यकार के रूप में विशेष रूप से अभिनन्दित तथा सम्मानित किया।

9.– ठाणे की एक अखिल भारतीय हिन्दी साहित्यिक संस्था (नाम विस्मृत) ने तत्कालीन भारत की वयोवृद्ध जीवित कवयित्री के रूप में इनके मलयपुर(बिहार) स्थित निवासपर आकर सम्मानित किया।

+++

शैल चतुर्वेदी

जो की भारत के एक हिंदी भाषा के कवि, व्यंग्यकार, हास्यकार, गीतकार और अभिनेता के रूप में जाने जाते थे, जिन्हें 70 और 80 के दशक में अपने राजनीतिक व्यंग्य के लिए जाने जाते थे।

शैल चतुर्वेदी

जन्म 29 जून 1936 अमरावती, महाराष्ट्र

मृत्यु 29 अक्टूबर 2007 (आयु 71)

मलाड, मुंबई, भारत व्यवसाय कवि, व्यंग्यकार, गीतकार, अभिनेता राष्ट्रीयता भारतीय विधा हास्य।

+++

प्रदीप चौबे

जन्म – अगस्त, 1949 चंद्रपुर(महाराष्ट्र

शिक्षा – कला स्नातक, नागपुर विश्वविद्यालय

प्रकाशित- बहुत प्यासा है पानी (गजल संग्रह)

संपादित – आरंभ 1 (समय)

आरंभ 2 (ग़ज़ल विशेषांक -1)

आरंभ 3 (ग़ज़ल विशेषांक)

आरंभ-4 (गजल विशेषांक -2)

प्रकाश्य- आवारा हूँ (हास्य व्यंग्य कविताएं)

खुदा गायब है (गजल संग्रह) आलपिन (छोटी-छोटी कविताएं)

चले जा रहे हैं हास्य व्यंग्य गजले

प्रदीप की हास्य रचनाओं की सबसे बड़ी खूबी है कि आपको हर तीसरी पंक्ति में ठहाका जरूर मिलेगा। कविता में बातचीत और बातचीत में कविता का रसीलापन उसे सहज ही प्राप्त है, वह बोलता रहेगा और आप हंसते ही रहेंगे, उसकी 'रेलयात्रा' हो या 'शवयात्रा' दोनों पर मैंने समान रूप से ठहाके और तालियाँ देखी हैं. हास्य और व्यंग्य दोनों पर उसका समान अधिकार क़ाबिले दाद है...

कविता की संवाद शैली और भाषा का रखरखाव प्रदीप की अन्य शक्तियाँ है....

+++

पीलू

अद्भुत नारिकी मुसकान।
सुधा गरल जामे है दोनों जाको बहुत प्रमान।
जिअत बचत है कोऊ जासों, तजत कोउ है प्रान।
जो जानत हम समझत नारिन, सो है निपट नदान।
लागी नजर नारिसों जाकी, सो फिरि कर कहा न ?
बनि आई भिखारिन तेरी।
हिय में प्रेम भरो है मेरे, मोहि बनावहु चेरी।।
जबसों लगन लगी है तोसों, खान पान बिसरे री।
क्यों रोऊँ जब जानति दोनों बँधे प्रेमकी डोरी ॥
और कछू नहि चाहति तोसों, केवल प्रीति घनेरी
मिलहु आय अब प्रानपियारे, पूजे आसा मेरी ।।
झिझोटी–विहाग
सखीरी मन मेरो घबरात।
भोली भाली गौरी मेरी, कल कैलासहि जात ॥
रवि ससिको नहि उदय जहाँ है, अँधियारो दिन रात।
भूत पिसाच रहें नित घेरे, वाहन बैल लखात ।।
माँगत भीख, रहत नित नंगो,
भसम कैसे भोला रखिह लपेटं गात। धतूरा खात ॥
बन बंसी बजावत बनवारी।
देह गेहको नेह न राखत, नीर छीरको सुधि बिसरावत,
बेंसी सुनि वनकों ही धावत, हैं व्याकुल व्रजकी नारी ॥
चहक उठीं कुंजनमें चिरियाँ,
लागी चलन वायु यहि विरियाँ,
चटक उठीं फूलनकी कलियाँ,
खूब बनी चन्द किरन जमनामें गेरत,
राधा राधा भौचक इत उत हेरत,
कोयल राधा कूक रही मतवारी ॥ टेरत, डारी ॥
व्याकुल निकसीं सब वामा,
तजि तजिके निज घरको कामा,
देखन चलीं चतुर घनस्यामा, है कैसो वंसीधारी ॥

– **हास्यरसावतार जगन्नाथ प्रसाद जी**, मलयपुर

+++

जसोदा हरि अंग्रेजी पढ़ावै

'मम्मी–डैडी' कहहु दुलारे, सुनि मोहि आनँद आवै।
मेरो लाल 'कान्वेन्ट' जात है, 'इंगलिश पोइम' गावै।
टा–टा' कहि जब विदा होत है, रोम–रोम हरषावै।
आन्टी' सुनि चाची बलि जावै, 'अंकिल' मूँछ फरकावै।
डान्स' करत 'कजिन सिस्टर' संग, नन्दबबा मुस्कावै।
'बरसाने' या छवि कौ निरखत अँगरेजहु शरमावै।।
दलबदलूजी : सखि मेरो बालम पलटत रंग।
श्वेत वसन अब पीरे ह्वै गये, मैं तो रहि गई दंग।
छाँडिकें पहिले साथी डोलत, नये यारन के संग।
जिन लोगन ते मीठे बोलत, ठानत है अब जंग।
नये साथिन को चाय पिलावत, आ गई मैं तो तंग।
जिन मुख देखत दुख उपजत है, विनै लगावत अंग।
नित्य नवीन कला खेलत हैं, नाचन लागे नंग।
गिरगिट अब शरमावत डोलत, कुआं परी है भंग।।
मंत्री : नहिं ऐसो 'चांस' बारम्बार।
तैने प्यारे ले लियो अब मंत्री को अवतार।।
कर विदेश–गमन जल्दी, मत लगावे बार।
पुत्र, साले औ भतीजे, सबकौ कर उद्धार।।
भूमि कोऊ हस्तगत कर, नई लै लै कार।
प्रेम 'परमिट' सरस' कोटा', द्रव्य कर दे पार।।
पद रहे, चाहे –दल बदल –दे, याही में है सार।
कुर्सी अपनी पै –चिपक जा, फिकर मत कर यार।।
विनय
प्रभु मेरे अवगुन चित न धरो।
मैं चुनाव में फेरि खरौ भयौ, अबकी पार करो।
कितिक बार मोहि हारत ह्वै गई, अब तो दया करो।
वोटर के घर जाय जाय के, इक पग रह्यौ खरो।
इक नर हैं इक नारि कहावत, जानत जग सबरो।
वोट देन को एक बरन भये, वोटर नाम परयो।
वोटर सबरे पारस जैसे, कंचन मोहि करो।
अबकी बार मोहि पार उतारो, मूँड़ी पै हाथ धरो।।
मंत्री–चरन
मन रे परस मन्त्री–चरन। –
जिन कृपा सों मिले परमिट, गरीबी कौ हरन।
जे चरन हैं चतुर परसे, कमेटी में धरन।
जे चरन बेकार परसे, नौकरी सों भरन।
जे चरन कलाकार परसे, पदन लीला करन।
मन रे परस मन्त्री–चरन।।
जनम गँवायौ –
रे मन मूरख, जनम गँवायौ।
जेल रहौ तू व्यर्थ अरे, यदि मंत्री–पद नहिं पायौ।।
कहा भयो एम०ए० जो कीन्हों, 'सरविस' यदि नहिं पायौ।

– **डॉ बरसाने लाल चतुर्वेदी,** मथुरा

+++

वर्तमान

जो बीत गया वह तो स्मृति है केवल
जो आयेगा वह हाथ नहीं है तेरे।
है याज, धाज बस तेरा, कल सपना है,
कल की चिन्ता को छोड़ याज वर से रे
यह धूप छाँ, परिवर्तन तो जग कम है,
उलझनें सदा मुसकाती है जीवन में
है याज बहुत से फूल खिले, मधुरितु है,
कल पतझर होगा हरे-भरे मधुबन में।
जो ग्राज करोगे भला बुरा वह अपना
उसका हिसाब देना होता है साथी।
इसीलिये ग्राज की सोचो,
कर लो सार्थक, खोलो बच्चों के आगे अपनी छाती।
दुख की परिभाषा, सुख का परिवर्धन है,
यह ज्योति पुंज बन जाये और घनेरे।
जो बीत गया वह अब स्मृति है केवल,
जो आयेगा वह हाथ नहीं है तेरे।
है आाज, धाज बस तेरा।

– **श्री नरेन्द्र नाथ चतुर्वेदी,** इटावा

✦✦✦

कविता

1. कविता कैसी हो?
शब्दन की रचना रूचिर, उक्ति अनूठी होय,
रसमय, भाव नवीनता, है कविताई सोय.
2. नटखट कृष्ण के प्रति मन में उठे ये प्रश्न–
प्रेम के पयोनिध सें पायो है जनम तुम,
खायो-पियो दूध-दधि माखन-मलाई है.
गोप-गोपिकान के सुप्रेम फंद पागि रहे,
उद्धवहिं जोग की जुगत सिखराई है.
दुखित सुदामा मित्र आयो जानि उठि धाये,
करुना के सिंधु, उफनाई अति आई है.
कह 'उमराव' जानि पायी नहिं, पायी कब,
प्रेम-कोमलाई तजि, आप निठुराई है.
मन ने ही दिये इन प्रश्नों के उत्तर–
कैधों कंस-वंश ही तें आयो कछू अंश अहे,
कैधों पूतना के कालकूट ही तें पाई है.
कालिय-नाग नाथो, कछु ताही को प्रभाव कैधों,
कैधों गोपिकान अभिशाप प्रभुताई है.
कैधों बलि छलि कें जो कीरति कमाई अहे,
कैधों यदुवंश को विनाश करि छाई है.
कैधों 'उमराव' भृगु लात जो लगाई,
तातें भये हो निठुर तुम, पाई निठुराई है.
3. जीवन कैसा हो?
ईश्वर उपासना में, विद्या की आराधना में,
सत्य शुभ साधना में, धरम-धनी रहें.
पर-उपकारन में, ब्रह्मचर्य धारन में,
शुचिता सम्हारन में, एकता घनी रहे.
मित्रता, कृतज्ञता औ वीरता की टेक रहे,
बुद्धि सत्संगति संतोष में सनी रहे.
पूर्ण पुरुसारथ सों कीरति कमाय मरौं,
जीवन बनो है जोलों, कीरति बनी रहे.

– **चतुर्वेदी उमराव सिंह पांडेय,** मैनपुरी.
कवि, साहित्यकार, समाज-सेवी.

✦✦✦

कविता की परिभाषा

'शब्दन की रचना रुचिर, उक्ति अनूठी होय।
रसमय भाव नवीनता , है कविताई सोय।।'

– निवेदन–

हम कूर कुचालि कुनीति भरे,
गुन औगुन नाहिंन भाखिए जू।
सब चाखत 'प्रेम ' सुजान कौ,
नय नेम अजानन चखिए जू।
त्रयतापन तापन ताप्यौ तुम्हें,
मम पापनु तापन तापिए जू।
हम आपके हैं अपनाऔ हमें,
अपनौ करिकैं अब राखिए जू।।

– समस्या पूर्ति–

रजत अंवारी गज बैठकें पियारौ आली,
पावस प्रभात में गयौ है रजधानी में।
तबहीतें रोदति बकति बिललाति प्यारी,
चित्रित विचित्र चित्र भाँति अनुमानी मैं।
करिकैं उछाह कछू गज कौ बनयौ चित्र,
मित्र के लिखत बही अश्रुधार जानी मैं।
वाम भयौ विधना बिलाइ चित्रकारी गई ,
बूड़ि गयौ हाथी हू हथेली भरे पानी में।।

खड़ीबोली में--'दीन हीन'--

तन पर जिनके अवशेष हड्डियां ही हैं,
मन में न जिनके जिन्दगी का कुछ जोश है।
दीखें निपोरते हुए दाँत बात-बातमें,
आँख के दिखलाते ही हवा होता होश है।

हिम्मत रही है नहीं, सुख से न भेंट हुई,
यश की हवा है नहीं, उनमें न रोष है।
बस दुःख पाना,गिड़गिड़ाना, मरजाना ही,
कवि 'उमराव ' दीन भाग्य का निदोष है।।

– **चतुर्वेदी उमराव सिंह पाण्डेय 'प्रेम '** मैनपुरी।

+++

स्वतन्त्रता

तेरी ही मनोज्ञ मूर्ति राजे मनो मन्दिर में
तू ही पराधीनों की अनन्य अभिलाषा है।
तेरी छवि छाया का है इच्छुक न कौन देवि,
तू ही तो स्वराज्य की अनूठी परिभाषा है।
तेरी छवि कौमुदी स्व–मानस कुमोदिनी को,
ऐसी मोद दायिनी ज्यों रोगी को सुआशा है।
तेरी ज्योति–रश्मि ने ही मानस हमारे का भी
तिमिर विनाशा, प्रान और भी प्रकाशा है।

तू ही शुभ्र मोतियों का हार है अमोल,
हम, बाल हंस देख तुझको ही मोद पाते हैं।
तू है नव भाव तो हैं हम भी नवीन कवि,
नव्य भाव से ही दिव्य ओज दिखलाते हैं।
तेरी सुधि कायरों को वीर कर देती देवि!
वीर भी प्रतापी और यशस्वी बन जाते हैं।
तेरी मंजु मूर्ति झूलती है इन लोचनों में,
तेरा गुण गाते हम फूले न समाते हैं।

ऐसी प्रेम प्रतिमा की आरती उतारने में
तुच्छ प्राण यदि लग जाय लग जाने दो।
ऐसी मूर्ति के विलोकने में मेरा आज,
जीवन प्रदीप बुझ जाय, बुझ जाने दो।
आने दो न पास में कराल काल फूट व्याल,
प्रेम का अनन्त पाश पास सदा लाने दो।
जाने दो दुराशा, वैमनस्य, मद मोह, लोभ
माता की सुगोद में सभी को चढ़ जाने दो।

–**श्री रूपनारायण जी,** निधिनेह

+++

पुराने पत्र

ये पुराने पत्र मेरे प्राण जीवन के सहारे,
विस्मिता सी अलस आकुल यामिनी में,
मधुर स्मृति के चमकते ये सितारे।
एक दिन मैंने इन्हीं की याद में थे,
ले अमित अनुराग दृग शतदल बिछाए।
ले स्वजन संदेश, सुख दुख प्रीति पावन,
आ मिले ये प्रेम सरिता सी बहाए।
तप्त उर की सुधि धरा को सींचने को,
आ गए थे ये सरस बरसात लेकर।
चित्र धुंधले आज भी करते नये से
सुधि पटी पर तूलिका सी हाथ लेकर।
जिन्दगी के भूलते इतिहास को ले,
खोलते हैं आज भी ये पृष्ठ सारे।
ये पुराने पत्र मेरे प्राण जीवन के सहारे।
ये पुराने पत्र तम नैराश्य में थे,
उदित मंजु प्रभात की सी रश्मि रेखा,
विकल मन ने ले सबल संबल इन्हीं का,
दूर रहते प्रियजनों को पास देखा।
भावनाएँ अमित अन्तस में छिपाए,
प्रथम प्रियतम प्यार की पहली निशानी।
जब हुआ आकुल हृदय तब देख इनको,
ढूँढ़ डाली प्रेम की पहली कहानी,

–**श्रीमती किशोरी देवी जी,** मलयपुर

+++

व्यंग

श्वेत वसन अब पीरे ह्वै गये,
मैं तो रहि गई दंगछांडिकें पहिले साथी डोलत,
नये यारन के संगजिन लोगन ते मीठे बोलत,
ठानत है अब जंगनये साथिन को चाय पिलावत,
आ गई मैं तो तंगजिन मुख देखत दुख उपजत है,
विनै लगावत अंगनित्य नवीन कला खेलत हैं,
नाचन लागे नंग गिरगिट अब शरमावत डोलत,
कुआं परी है भंग।

– **डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी**

+++

भारत में अंग्रेजी पर व्यंग्य

अंग्रेज़ी प्राणन से प्यारी। चले गए अंग्रेज छोड़ि माहि,
हमने है मस्तक पे धारी। से राजी बनिके हैं बैंठी, चाची, ताई और महतारी।
उच्च नौकरी की ये कुंजी, अफसर यही बनावनहारी।
सबसे मीठी यही लगत है, भाषाएँ बाकी सब खारी।
दो प्रतिशत लपकन ने याकू, सबके ऊपर है बैठारी।
माहि हटाइबे की चर्चा सुनि, भक्तन के दिल होड़ दुःखारी।
दफ्तर में माके दासन ने, फाइल याही सौ रंगडारी।
माके प्रेमी हर आफिस में, विनते ये नाहि जाहि बिसारी।

– **डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी**

+++

बरषा'

बग पाँति की मेखला झूमि उठी,
सतरंगे दुकूल संवारति आवति।
बिथुरे धन बारन में बुँदियान के,
मोति बड़े-बड़े धारति आवति।
दहकीली सुदेह की दीपति कौं,
छन लौं छनदा में निहारति आवति।
मन भावन सावन सौं बरषा,
कहूँ जीतति तौं कहूँ हारति आवति।

–**श्री गजेंद्र नाथ जी,** कमतरी/लखनऊ

+++

बादर

बेधति तीर सी आन दहै,
वहै पीर गंभीर जगाइगे बादर
आँस झरौं, भरौं सीरी उसाँस,
ही कौन सी प्रीति पगाइगे बादर।
धोऊं जितौ तितौ गाढ़ौ चढ़,
केहि रंग में मोहि रंगाइगे बादर।
ये बरसे बरसेई नहीं,
अरी पानी में आगि लगाइगे बादर।।

– **श्री गजेंद्र नाथ जी,** कमतरी/लखनऊ

+++

ब्रज होरी

स्यामता स्याम लला की छई,
भई राधिका मानों गुलाल की झोरी।
नन्द बबा कौ हरौ रहै चित्त
जसोमति की मति केसर बोरी।
गोपिन के अनुराग कौ रंग
छयौ छयौं जाय करै बरजोरी।
या ब्रज की बलिहारी जहाँ
नित बारहुमास मची रहै होरी।

निवेदन
मैं हों दीन, तुम दीन बन्धु तौ पै मैं हों दीन,
नाम कौ जहान में यों कोऊ तौ धनी रहें।
तुम कृपासिन्धु भव सिन्धु सों उबारत हौ
ऐसी कछु कीजै जासों बात तौ बनी रहै।
कछु करि पावै नाँहि हठ ठानि आवों तऊ
मोरी मति गति तो में ऐसी ही सनी रहै।
आरत है आवों, तोहि सोवत जगावों–
चाहों, मोरी तोरी अनबन ऐसी ही ठनी रहै।

माटी देह दीप
माटी तन पाइ, भाग चाक पै चढ़ाई,
अरु, विषम विकलता की अगिनि तपायो है।
नेह भरि ल्यायो पूरि अन्तस की कोरनि लों
ताप तलझनि अंग अंगनि समायो है।
जग चमकायो, मुख कारिख लगायो।
सब कछु सहि पायो तऊ कछु नहिं पायो है।
साध उर बीच अनमोल बनिबे की रही,
कैसी जग रीति कौड़ी मोलनि बिकायो है।

– **आदित्य कुमार चतुर्वेदी,** कमतरी/लखनऊ

+++

एक आम मनुष्य की व्यथा कथा

भटका बादल और पराए मौसम सा छाया हूँ
मैं लगता हूँ दुनिया में गलती से आया हूँ।
मैं ऐसा सौदागर जिसकी हर दुकान लुटी
छीनी गई जिसके हाथों से रोज़ लकुटी
जिसकी महफ़िल नहीं, जिसका दरबार नहीं,
जिसकी धूप न छाँह, कहीं जिसका घरबार नहीं,
जिसकी हारजीत से गम या खुशी नहीं जग को,
क्या मैं किसी पाप की जिन्दा छाया हूँ।
मैं लगता है दुनिया में गलती से आया हूँ।
मैंने दुनिया में कभी किसी का बुरा नहीं चाहा,
अब तक नहीं छीना किसी का चौराहा,
अगर स्वयं की गति से मैंने मंजिल पा ली,
'क्यों देती है दुनिया मुझको बार-बार गाली
वीणा के तारों में उलझा-उलझा गुँथा-गुँथा,
किन्तु प्रतीक्षा का हमराही स्वर अनगाया हूँ
मैं लगता है दुनिया में गलती से आया हूँ।

– **श्री प्रकाश चन्द्र जी,** चंद्रपुर

+++

श्रृंगार परक गीत

सावन ऋतु आई मनभायी
पिय की यादों में भरमायी
आया है संदेश सुहाना
प्रियतम के घर को है जाना
कलियाँ बागों में खिलती हैं
भौंरों की धुन भी मिलती है
ओढ़ चुनरिया धानी जैसे
धरती की छबि छाई ऐसे
झूलों पर पैंगे तरु डाली

बढ़ती झुली हैं पड़ती है
लतिकाएँ नव रस से भरतीं
तरुवर का आलिंगन करतीं
ऐसे कैसे सुखद क्षणों में मधुमय
कैसा मादक स्वर छाया है
संदेशा प्रिया का आया है।

- श्रीमती अनुशीला चतुर्वेदी

+++

रहने वाले हैं रीवाँ के

रहने वाले हैं रीवाँ के
एजेंट हैं बीमा के
मिलते ही पूछेंगे–बीमा कब कर रहे हैं।
मानो कहते हो– कब मर रहे हैं?
फिर धीरे से पूछेंगे– कब आऊँ
कहिए तो दो फ़ार्म लाऊँ
पत्नी का भी करवा लीजिए
एक साथ दो–दो रिस्क कवर कीजिए
आप मर जाएँ तो उन्हे फ़ायदा
वो मर जाएँ तो आपका फ़ायदा।
अब आप ही सोचिए मरने के बाद
क्या फ़ायदा और क्या घाटा
एक दिन बाज़ार में मिल गए
हमें देखते ही पिल गए
बोले–चाय पीजिये।
हमने कहा–रहने दीजिए।
वे बोले–पान खाइए।
हमने कहा–बस, आप ही पाइए।
शाम को घर पहुंचे
तो टेबिल पर उन्ही का पत्र रखा था
लिखा था – फ़ार्म छोड़े जा रहा हूँ
सोच समझकर भर दीजिए
प्रीमियम के पैसे
बहिन जी से ले जा रहा हूँ
रसीद उन्हे दे जा रहा हूँ
फ़ार्म के साथ
प्रश्नावली भी नत्थी थी
फ़ार्म क्या था
अच्छी खासी जन्मपत्री थी
हमने तय किया
प्रश्नो के देंगे
ऐसे उत्तर
कि जीवन–बीमा वाले
याद करेंगे जीवन भर
एक–एक उत्तर मे झूल जाएंगे
बीमा करना ही भूल जाएंगे
प्रश्न था–नाम?
हमने लिख दिया–बदनाम।
–काम
–बेकाम।
–आयु?
–जाने राम।
–निवास स्थान?
–हिन्दुस्तान।
–आमदनी?
–आराम हराम।
–ऊँचाई?
–जो होनी चहिए।
–वज़न?
–ऊँचाँई के मान से।
–सीना
–नहीं आता।
–कमर?
–सीने के मान से।
–कोई खराब आदत?
–हाँ है
शराब, गांजा, अफ़ीम
मीठा लगता है नीम।
–कोई बीमारी है?
–हाँ, दिल की
उधारी के बिल की
होती है धड़धड़ाहट
पेट में गड़गड़ाहट
माथे में भनभनाहट
पैरो में सनसनाहट
डॉक्टर कहता है–'टी.बी.' है।
और सबसे बड़ी बीमारी
हमारी बीवी है।
–कोई दुश्मन है?
–हाँ है
निवासी रीवाँ का
एजेंट बीमा का।
भर कर भेज दिया फ़ार्म
इस इम्प्रेशन में

कि भगदड़ मच जाएगी कारपोरेशन में
मगर सात दिन बाद
सधन्यवाद
पत्र प्राप्त हुआ–
आपको सूचित करते हुए
होता है हर्ष
कि आपका केस
रजिस्टर हो गया है इसी वर्ष।रहने वाले हैं रीवाँ के
एजेंट हैं बीमा के
मिलते ही पूछेंगे–बीमा कब कर रहे हैं।
मानो कहते हो–कब मर रहे हैं?
फिर धीरे से पूछेंगे–कब आऊँ
कहिए तो दो फ़ार्म लाऊँ
पत्नी का भी करवा लीजिए
एक साथ दो–दो रिस्क कवर कीजिए
आप मर जाएँ तो उन्हे फ़ायदा
वो मर जाएँ
तो आपका फ़ायदा।
अब आप ही सोचिए
मरने के बाद
क्या फ़ायदा
और क्या घाटा
एक दिन बाज़ार में मिल गए
हमें देखते ही पिल गए
बोले–चाय पीजिये।
हमने कहा–रहने दीजिए।
वे बोले–पान खाइए।
हमने कहा–बस, आप ही पाइए।
शाम को घर पहुंचे
तो टेबिल पर उन्ही का पत्र रखा था
लिखा था – फ़ार्म छोड़े जा रहा हूँ
सोच समझकर भर दीजिए
प्रीमियम के पैसे
बहिन जी से ले जा रहा हूँ
रसीद उन्हे दे जा रहा हूँ
फ़ार्म के साथ
प्रश्नावली भी नत्थी थी
फ़ार्म क्या था
अच्छी खासी जन्मपत्री थी
हमने तय किया
प्रश्नो के देंगे
ऐसे उत्तर
कि जीवन–बीमा वाले
याद करेंगे जीवन भर
एक–एक उत्तर मे झूल जाएंगे
बीमा करना ही भूल जाएंगे
प्रश्न था–नाम?
हमने लिख दिया–बदनाम।
–काम, –बेकाम।,
–आयु?
–जाने राम।
–निवास स्थान?
–हिन्दुस्तान।
–आमदनी?
–आराम हराम।
–ऊचाँई?
–जो होनी चहिए।
–वज़न?
–ऊचाँई के मान से।
–सीना
–नहीं आता।
–कमर?
–सीने के मान से।
–कोई खराब आदत?
–हाँ है शराब, गांजा, अफ़ीम
मीठा लगता है नीम।
–कोई बीमारी है?
–हाँ, दिल की
उधारी के बिल की
होती है धड़धड़ाहट
पेट में गड़गड़ाहट
माथे में भनभनाहट
पैरो में सनसनाहट
डॉक्टर कहता है–'टी.बी.' है।
और सबसे बड़ी बीमारी
हमारी बीवी है।
–कोई दुश्मन है?
–हाँ है निवासी रीवाँ का
एजेंट बीमा का।
भर कर भेज दिया फ़ार्म
इस इम्प्रेशन में
कि भगदड़ मच जाएगी कारपोरेशन में
मगर सात दिन बाद
सधन्यवाद

पत्र प्राप्त हुआ–
आपको सूचित करते हुए
होता है हर्ष
कि आपका केस
रजिस्टर हो गया है इसी वर्ष।
कवि मर रहे हो

– शैल चतुर्वेदी

✦✦✦

बाबा बालमुकुन्द कृत

भावुक है भक्त भोगिया हैं भाग्यशाली बड़े,
कृष्ण बलराम युग रूप के उपासी हैं।
अच्युत अचित ही को चिंतन करन बारे,
नित्य लीला धाम के निरन्तर निवासी हैं।
सुकवि ' मुकुन्द ' अनु भवी अनुरागी विज्ञ,
पूर्ण अधिकारी हरि–रस के प्रकासी हैं।
कृष्ण के स्नेही हैं सखा हैं औ सहायक हैं,
कृष्ण ही कौ रूप मथुरापुरी के निबासी हैं ॥
दिव्य हैं बली हैं देव पूजित हैं दर्शनीय,
अदभुत आनन्द हैं बिलक्षण बिलासी हैं ।
भोगिया हैं साहसीहैं मान अभिलाषी बड़े,
स्वस्थ हैं प्रसन्न हैं, सगर्व स्पष्ट भाषी हैं ॥
सुकवि ' मुकुन्द ' महाज्ञानी स्वाभिमानी
बड़े विज्ञ हैं विलक्षण पराक्रम प्रकासी हैं।
प्रेमी हैं प्रतापी हैं गुनी हैं गुनग्राही हैं,
अलभ्य रसरासी मथुरापुरी के निवासी हैं ॥
हौआ जी सी वली सूठा राम जी से
द्रढ़ ब्रत बंसा जी से साहसी बढ़ायौ यशभारी है।
उद्धव उजागरसे पंडित प्रतापी भये
छीतस्वामी सेवा की सरस रीतिधारी है ॥
सुकवि ' मुकुन्द ' दिव्य गायक गनेश तुल्य
काव्य की कला में कवि विदित बिहारी है।
सूदन और खड़ग उरदास से सुकवि
ऐसे रतनन की खान मथुरापुरी हमारी है।
नाना मारतंड तीन लोक में प्रकास करें,
मामा धर्मराज जग शासनाधिकारी हैं।
मौसी भागीरथी सो अधम उधारनी हैं,
ननसाल उत्तम हिमाचल सुखारी हैं॥
मुदित मुकुन्द ' खट वदन गनेस ईस,
वरूण कवेर इन्द्र देवतन ते यारी हैं।
माल के चखैया गिरिराज के सखा हैं हम,
माथुर मुनीस मात यमुना हमारी हैं।

विप्र रूप मथुरा बसें सप्त रिषिन के बाल।
चार वेद सम्पन्न हैं या सों चौबे लाल ॥
यासौ चौबे लाल, माल तुलसी उरधारें।
हैं दातन के मित्र सूम गल घोंट पछारें ।
राजा राना रावकी तनिक न राखें कान।
यों बचनन कर भेद है ज्यों अर्जुन के बान॥

– बालमुकुंद चतुर्वेदी, मथुरा

✦✦✦

कवि इच्छाराम कृत

तिलक जनेऊ धारें लसै उर बन माला,
कंचन सी देह हूँ विचित्रता में आनिये ॥
साथ हैं त्रिकाल संध्या पूर्जं नित शालिग्राम
जप–तप–पाठ–पूजा नीकें कर जानिये ॥
कहैं कवि 'इच्छाराम ' दयालू सन्तोषी बड़े,
श्रवन सुनत हरि–जस की कहानिये॥
बिमल बसन षटरस व्यंजन सवाद जानें,
ऐसे होंई लक्षण तौ माथुर पहचानिये ॥

✦✦✦

कवि विराट कृत

प्रात उठि मंगला कौ धार्वे मथुरा के लोग,
कोऊ रंगेश्वर जाइ बोल उठे बम–बम।
आचमन करै कोऊ गोता लेइ गिन–गिन
कोऊ वुरजन चढि कूट परै धम–धम ॥
करत कलेऊ ये जलेबी कचौरिन के मस्ती में
कटें हैं दिन कैसी रंज काकी गम।
तोको कहा जानें तेरे बाप की न मानें
यमुना के पूत हम मामा हमारे यम॥

✦✦✦

जिओ और जीने दो

जिओ और जीने दो
देह अलग है।
पर आत्मा एक हुआ करती है।
कुसुम भिन्न
पर सुरभि एकसी करती है।
व्यक्ति भिन्न
पर मिलकर ही समाज बनता है।
मात्मा परमात्मा में भेद नहीं,
अद्वैत यही समझाता है।
धाराएँ भी अलग–अलग
पर संगम एक हुआ करता है।

हम में भी भेद दिखाई देता है –
प्रान्तों और विचारों का भाषा और भावनाओं का।
धर्म अलग हैं, वेद अलग हैं।
देव अलग हैं, वेष अलग है।
फिर भी माला के मोती से मिल जावें भिन्नत्व,
अभिन्नत्व में परिणत हो जावें।
वह वृक्ष बनें हम जिसकी छाया पाकर
दुनियाँ वाले साँस ले सके।
जिसकी सत्य सुरभि को पाकर युद्धों से
पीड़ित मानव कुछ विश्वास ले सके
मैत्री और शान्ति के गाम्रो गीत।
जियो और जीने दो।

– **श्री नरेन्द्र नाथ चतुर्वेदी,** इटावा

✦✦✦

तू झंडू बाम

लड़की को सूँघा जब वो भड़की तो कहने लगा,
जो तू झंडू बाम है तो मुझको जुकाम है ।
टके सेर बिकते थे कुछ साल पहले जो,
आज भाव उनके भी आसमान हो गये ।
गलियों में सड़कों पे मारे मारे डोलते थे,
देखते ही देखते वे भगवान हो गये ।

– **डा० रामगोपाल चतुर्वेदी,** गुपलेश

✦✦✦

गदह पचीसी का मंगलाचरण

हे शब्द–शक्तियों की त्रिमूर्ति के वाहक।
अमिधा से अधिक लक्षिा के परिचायक ॥
तुलसी के सबतें भले चतुष्पद स्वच्छ वर्ण।
निष्काम तथा निष्कलुष धवल हे महाकणं ॥
कंदर्प रूप गांधर्व–भूप, मृदु गायक।
कवियों के नायक, जनगन के अधिनायक ।।
स्थापित तेरी मूर्ति आज घर घर में।
क्या गूंज रही तेरी वाणी स्वर स्वर में ॥
अपने भक्तों को अब स्वबुद्धि का वर दो।
अपना मन उनके मन में अविचल धर दो ॥
इन लक्ष–लक्ष भक्तों की ओर निहारो।
जो आस लगाए, इनको वेग उबारो ॥
हे इष्टदेव ! आराधक को वह स्वर दो।
अपनी सुरेंक का नाद कंठ में भर दो ॥
अपने जीवन दर्शन का पुट अविरल दो ।
झट झाड़ दुलत्ती कहीं और ही चल दो ॥

– **डा० रामगोपाल चतुर्वेदी,** गुपलेश

✦✦✦

लाला की भेंस

हुड़क उठी,लाला नें भैंस एक मोल लई,
चिकनी चट्ट मोटी,चारु–चाल छबि न्यारी है।
बौंकि बौंकि बबकै सुनै जु स्वर बैंड कौ तौ,
दूध दुहिबे में करै आपति बिचारी है ।
या सौं घृत ,दूध, दही का बिधि निकासें जय,
यही सोच भारी,मति गई आज मारी है ।
कहें जाय लोगन सौं,दूध की न बात करौ,
गोबर करै भारी यासौं भैंस हमें प्यारी है।
तारी जाय घर ते,लोग तारी दै हाँसी करें,
बेचन में याके एक आफत यह भारी है ।
भारी घरवारी कौ उराहनौ मिलै है जय,
भैंस कौं बिचारी देत रोज–रोज गारी है ।
जानें ना अनारी दिन द्वैक में हमारे यहाँ,
ईंधन कंट्रौल होय आँखिन अगारी है ।
याते कहें वासौं नेंक गुस्सा कम खर्च करौ,
गोबर करै भारी यासौं भैंस हमें प्यारी है ।

– **जयशंकर प्रसाद चतुर्वेदी 'जय'**

✦✦✦

कीचड़ सी गाढ़ी भाँग गारे कौ जु काम करै,
चकती कलाकंद की ईंट करी मात है ।
करि करि चिनाई भींत ऊँची सी बनाई जय,
साँख कौ पटावौ दै कें पूरी करी छात है ।
गरम इमरतिन के झरोखे चहुँ ओर दये,
जाली लगावन हेतु,पुआ ओर घात है ।
भंगड़ी महासय नेंक मन में विचार करौ,
पेट में तिहारे ये हवेली चिनी जात है ।

– **जयशंकर प्रसाद चतुर्वेदी 'जय'**

✦✦✦

अचल ऊँचाई और अभेद्य शक्ति हिमगिर की,
आत्मबल के अजर मानो खिसियानी है।
गर्जन सिह,सिन्धु और में हू की मन्द लगे,
कोहिनूर हीरा मे एतो कहा पानी है।
सत्यता दधीचि हरिश्चंद्र हू की मात भई,
भक्ति ध्रुव और प्रह्लाद की पलानी है।
मुठ्ठी भर हाडन को तेज देखि बालकृष्ण,
गाधी ग्यान गरिमा की महिमा बखानी है।

तेरे पैगाम

काम अच्छे तो सरे आम हुआ करते है,

और परदे मे बुरे काम हुआ करते है।
परदा पडता है गुनाहो का उन्ही के सिर पर ,
जिनकी किस्मत से बंद आयाम हुआ करते है।
संस्थाओ का बसन्त
प्रिय कोयले कूकती होगी कही,
यहां मोटरें भूकती आ रही है।
सुचि सौरभ पुष्प लुटाते कही,
यहां गन्दी हवाये सता रही है।
दल भौरो के गूंजते होगे कही,
बस ट्रामे ये शोर मचा रही है,
कवियो आनन कानन मे नही,
संस्थाये बसन्त मना रही है।

अभागी रैन

लपट के लपेटे गर्म घाम के चपेटे तापै
गर्द के झपेटे देखि तबियत घबराई है।
पिय के प्यासे नैन निशिदिन सतावे मैन
छिन हू न आवै चैन अति दुखदाई है।
बालकृष्ण काटे हू कटै ना अभागी रैन
कैसी करौ कासे कहो जैसी व्यथा पाई है।
व्याकुल हो एसी वीर प्रिय को न आवै पीर
कीन्हो मन को अधीर ऋतु निदाघ आई है।

– यशस्वी आशुकवि बालकृष्ण चतुर्वेदी 'खिलखिल'

✢✢✢

मैं कविता लिखना भूल गया

यह देश भला आजाद हुआ,
जो कुछ था सो बर्बाद हुआ।
है धन विदेश से लिया गया ,
निर्माण कार्य पर छला गया।
धोखा प्रतिदिन का रूल हुआ,
मैं कविता लिखना भूल गया।
निर्धन निर्धनतर जंह होता,
धनवान मजे में जहां सोता।
अन्याय पनपता जंह निशदिन,
अन्याई बीज बदी बोता।
यह सब मुझको बस सूल हुआ,
मैं कविता लिखना भूल गया।
निर्धन का धन शोषण करते,
श्रमिकों का श्रम छलते रहते।
पर जहां कहीं जल से होते,
लाखों की रकम दान करते।
यह कार्य बड़ों के विज्ञापन का भूल हुआ ,
मैं कविता लिखना भूल गया।
है खुला जगत बाजार नया ,
काला बाजार आबाद हुआ।
क्या देश भक्त क्या अन्य मनुज,
अपने मतलब का यार हुआ।
आजादी के दीवानों का आदर्श, बंधु धूल हुआ ,
मैं कविता लिखना भूल गया।
मूर्खों का जग में नाम हुआ ,
छलबल से सारा काम हुआ।
पंडित तो बस बदनाम हुआ,
उसका बस काम तमाम हुआ।
बदमाशों की शैतान चालो का ,
भरपूर अरे! वह टूल हुआ।
यह देख हुआ इतना मन दुख ,
मै कविता लिखना भूल गया।
जिसको अध्यापक कह कह कर,
मस्तक को गर्वोन्नति करते।
हमको माशूक समझते थे,
और अपने को आशिक कहते।
यह देख जगत के भ्रम में, मैं बस भूल गया,
मै कविता लिखना भूल गया।

– नेम चन्द्र चतुर्वेदी, तरसोखर

✢✢✢

पं ज्वाला प्रसाद का जन्म 4 अप्रैल 1917 को सिंकदरपुर खास (फर्रुखाबाद) उ०प्र० में हुआ था, उनके पिता का नाम स्व रामचन्द्र जी एवं मां का नाम कैलाश देवी था।

उन्होंने प्रसिद्ध साहित्यकार पं ऋषीकेश के सानिध्य में 1936 में सेंट जॉस कालेज आगरा से हाई स्कूल किया। उन्होंने 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान रेलवे की नौकरी छोड़ दी, उसके बाद वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में सक्रिय हो गए।भारत बैंक, इलाहाबाद में नौकरी करते हुए 1946–1948 में उनको रज्जू भैया, अशोक सिंघल, रामप्रकाश गुप्ता (पूर्व मुख्यमंत्री) का साथ मिला। सन 1950 से उन्होंने दीनदयाल जी,अटल जी, नानाजी के सानिध्य में राष्ट्रधर्म, पांचजन्य के लखनऊ से प्रकाशन की जिम्मेदारी सम्हाली,जिसे 1980 तक निभाते रहे। आपात काल 1975–77 में आप पांचजन्य के प्रकाशक थे, परन्तु संपादक का दायित्व का भी निर्वहन करते थे। उनका अधिकांश लेखन गद्य शैली में है,कभी– कभी पद्य भी लिखते थे।1980 में पांचजन्य से अवकाश ग्रहण करने के बाद संघ कार्य हेतु कोलकाता प्रवास पर रहें, सन 1993 में छोटे भाई दिनेश जी के निधन के बाद ही परिवार

के साथ लखनऊ में आकर रहने लगे।

✦✦✦

जब मैं छोटा था........!

जब मैं छोटा था,शायद शामे बड़ी हुआ करती थी।
मैं हाथ में पतंग की डोर पकड़े, घंटों उड़ाया करता था।
वो लम्बी साइकिल रेस,वो बचपन के खेल कहां खो गए।
अब शाम नहीं होती, दिन ढलता है
और सीधे रात हो जाती है।
अब मैं बड़ा हुआ तो शायद दुनिया सिमट रही है।
जब मैं छोटा था, शायद दोस्ती गहरी हुआ करती थी।
दिन भर वो हूजूम बना कर खेलना,
वो दोस्तों के घर का खाना।
वो लड़कियों की बातें,वो साथ में हंसना-रोना।
अब मैं बड़ा हुआ तो शायद रिश्ते सिमट रहें हैं।
जब मैं छोटा था, शायद दुनिया बड़ी हुआ करती थी।
अब मैं बड़ा हुआ तो शायद
जिंदगी तंग हो सिमट रही है।
कल की बुनियाद नहीं है,
आने वाला कल सपने में है।
अब बच गए इस पल में,
तमन्नाओं से भर सिर्फ हम भाग रहे हैं।
कुछ रफ्तार धीमी करो मेरे दोस्त,
जिंदगी को जिंदादिली से जियो,
खूब मस्ती से जियो मेरे दोस्त...
जब मैं छोटा था, शायद.....?

-**ज्वाला प्रसाद चतुर्वेदी,** सिंकदरपुर/लखनऊ

✦✦✦

श्रीकृष्ण अवतार

द्वापर में हरि जनम हैं,शास्त्रन श्रुति गाई।
वेद विदित विधि बांध के,देवन सुख दाईं।।
आयो समय अत्याचार को,कोऊ नीति न माने।
धरणी धरन सब लुप्त है,पुत्र पितहि न माने।।
मथुरा में बासुदेव कौ, रानी देवकी व्याही।।
कंस चलौ पहुंचाइवे,बेतौ रथ पे सिंधाही।।
रथ पे सिंधाही देवकी, आकाशवाणी यौ भई।
जाइके आठवें गर्भ ते है,कंस तेरौ अंत ई।
खड्ग तानि मारत भयो, वासुदेव समुझायौ।
पुत्र सबै जाके दैयगें,सो तो बचन निभायो।।
उग्रसेन बन्दी किये, खुद राज संभारो।
वसुदेव देवकी पकरि कै, बंदीगृह में जो डारो।।
डारौ उन्हें बन्दीग्रह में,राजा हथकड़ी बेड़ी डरी।
माने न कोऊ नीति बन्धन,कंस ने ऐसी करी।।
छः बालक वसुदेव ने, है कंस कौ दीनौ।।
सातवे गर्भ भगवंत गति,रोहिणी उर कीन्हो।
आठवें गर्भ जब देवकी,राजा कंस डराये।
पहरेदार बढ़ती किये,राजा नित्य ही आये।।
आये राजा नित्य ही, कारागार में हलचल परी।
कोई आन जान न दुआं पावे,भेद विधि सबही करी।।
सिंह राशि सूरज गये,और रोहिणी आई।
भादों भली वदि अष्टमी,बुद्धवार सुहाई।।
घोर घटा घिर आइयो, निश आधी बिताई।
सूर समूह स्तुति करें, शुभ घड़ी जो आई।।
आई घड़ी शुभ जन्म की, ब्रह्मादि सुर स्तुति करै।
बेड़ी और फाटक स्वयं खुल गये,परम ब्रह्म जौ अवतरै।।
रूप चतुर भुज देखिये,कवि कहत न बनई।
कर संपुट दोऊ रहे,कहा करिये उपाई।।
नंद घटै पहुंचाइए, जहां माया प्रगटी।
वाय तुरत लै आइयै,कोऊ भेद न प्रगटी।।
प्रगटे न कोऊ भेद सुन कै, देवकी प्रमुदित भई।
प्रभुपाल रुप स्वरुप धरिए,भाव भक्ति रहे बई।।
बाल रुप तुरतइ भयै, देवकी उर लीन्हे।
पीताम्बर लपटाइकै, वसुदेवहि दीन्हे।
चारु चकित चहुं देख कै,कालकहि अनूपा।
जाइ कैसे लै जाइए, प्रौढ़ाये है सूपा।।
सूप में प्रौदान हरि कौ,लै चले वसुदेव जी।
पाछे की सिंह डहार सुन कै,धीर आवत है न जी।।
पहलौ पैर जमुना दियो,वो तो ऊपर आवे।
मेघ झरी झर लागियो,वो तो चित डुलावे।।
हूं को शब्द बालक कियो, जमुना गहराई।
शेषनाग पाछे भये,उन कर परछाई।।
परछाई ऊपर करी उनके, वसुदेव कौ मार्ग भयो।
वतो शीघ्र जमुना पार करकै,नंद के द्धारे गयो।।
द्धार खुले हे नंद के,वे तो भीतर आये।
ढिंग जसुदा पौदाय के,वे तो कन्या लाये।।
दई है देवकी गोद में,पुनि बन्दी पाये।
इत तौ पहरुआ जागियो,उत होत बधाये।।
उत बधाये होत गोकुल,नंद घर आनंद भयौ।
जन्म उत्सव होत बहु विधि,विपु जन बोलो गयो।।

– **सुरेश चन्द्रआचार्य जी,** मैनपुरी/लखनऊ

✦✦✦

स्वदेश

मेरा मनहर भारत देश,
हिमगिरी शिखर तुषार किरीटी शुचि सर्वांग सुवेश।
कश्मीर केसर से चर्चित उन्नत भाल प्रदेश,
विंध्य मेखला कटि तट शोभित पूजत चरण जलेश।
निर्मल निर्झर कलरव मुखरित पावन पुण्य प्रदेश,
पूत पतित पावन सुरसि जल आर्य वंश हृदयेश।
मन रोमांचित रम्य सरित उर हारावलि वर वेश,
निदरित अमरावलि छवि निरवत शंसित सुरन सुदेश।
पुलकित पदम पराग प्रपूरित पवन प्रवाहित देश,
सिंचित सादु सलिलमय सरितन हरित श्याम सविसेष।
लीला धाम राम माधव के ऋषि मुनि सुर सर्वेश,
रहे चमकता सदा विश्व भर तेरा ज्ञान दिनेश।।

– श्री भोलानाथ चतुर्वेदी 'मंजुल'

+++

निराश

इन आँखों की राह भूल से, मन में उन्हें बसाया,
जलते हुए हृदय में मानो ज्वालामुखी जगाया।
वह चित चोर अलोप हुआ फिर कभी न हमने देखा,
लिखा हुआ था इस किस्मत में क्षणिक मिलन का लेखा।
आकुल अरमानों ने कितने कल्पित किले बनाए,
थकित निगाहों ने प्रेरित हो सब उनहार मंझाये।
आँखों ने जीवन सोखा नैनो ने नीर बहाये केवल
झूंठी आशा ने इतने दिन प्राण बचाये।
अब आये मुरझे प्राणों को बातों से बहलाने,
वंचित स्नेह बुझे दीपक में फिर से आग लगाने।।

– श्री भोलानाथ चतुर्वेदी 'मंजुल'

+++

कुसुम

कुसुम, लखि कै दुर्दशा तुम्हारी।
आवत तरस सुमिरि वे बातें होत दुख अति भारी।।
निरखि तुमहिं शोभामय सुंदर और तुम्हारो साज।
आवत हुतो नित्य ही मधुकर तुमहिं मिलन के काज।।
निरखि तुम्हारी गिरी दशा कौं करत न मधुकर प्रेम।
सबहीं सुख संपत्ति के साथी, यही जगत को नेम।।
आवति उक्ति यही पुनि मन में निरखि तुम्हें मुरझानों।
जाको है उत्थान, पतन हूं बाको निश्चय जानों।।

+++

जायँगे कलेश हटि जाइंगे विकार सब,
पैहै चित्त चैन, मन आनंद समाइगो।
विकट भव फंदन कौ बंधन न रहीहैं नेक,
ज्ञान मुक्ति मंजुल को मारग दिखाईगो।।
बार–बार जन्म अरु मरन को न ह्वै हैं दुःख,
अंबुज पद सेइकै निरंतर सुख पाइगो।।
राम भक्ति दिनकर की किरन समूहन तै,
तेरे मोह जाल कौ अंधेरो उड़ी जाइगौ।।

– लक्ष्मी निधि चतुर्वेदी, मैनपुरी

+++

दोस्तों में हमारा नाम तो है

कृति – ख्वाब जो गुमशुदा हो गए
दोस्तों में हमारा नाम तो है
दोस्तों में हमारा नाम तो है,
दुश्मनों में शुमार है यारों।
आप चढ़ते हुए नशे हैं हुजूर,
हम उतरता खुमार हैं यारों।
जीनते रेशमी लिबास है वो,
दामानें तार तार है यारों।
आप मरकज़ तमाम सदकों के
हम तो हस्ती निसार हैं यारों।।

– डॉ. हिमांशु चतुर्वेदी, मैनपुरी/आगरा

+++

सच का क़ातिल घूमता बाजार में

सच का क़ातिल घूमता बाजार में,
नहीं मिलती यह खबर अखबार में।
कागजों पर तो फरारी दर्ज है
हाजिरी में है खुले दरबार में।
किसी को भी नामजद कर लीजिए,
हिस्ट्रीशीटर सभी रिश्तेदार में।
दो सगी बहनों की औलादों के बीच
आना जाना है हर एक त्यौहार में।
कचहरी, थाना, दलाली, मीडिया
यह वजीरों में हर एक सरकार में।।

– डॉ. हिमांशु चतुर्वेदी, मैनपुरी/आगरा

+++

प्रतिमाएँ अंग भंग मंदिर गर्वीले

प्रतिमाएँ अंग भंग मंदिर गर्वीले,
धुँआ भरे कक्ष मिले वातायन गीले,
कुहरा दुहराया इन बहुरूपी बिंबो ने,
मायाविनी किरणों ने दर्पण सब कीले।
प्रतिमाएं अंग भंग मंदिर गर्वीले।
पारस के रूप नाम कांच के खिलौने,
शब्दों में शेषनाग अर्थों में बौने,
पूनम को पिये अमा स्यंदन में सोयी,
धूमकेतु हाँक रहे घायल मृग छौने।
कब तक दो श्वास चलें, छल पर विश्वास पलें,
छिले छिले कोमल पद, पथ भी पथरीले।
प्रतिमाएं अंग भंग मंदिर गर्वीले।
निर्वासित सत्य शिवम, सुंदर ठुकराया,
पच्छिम के चिंतन, बस पूरब की काया,
वृन्तों ने विसरादी पंखुड़ी गुलाबी,
कांपते कपोतों पर श्योनों की छाया।
सुधा पात्र खोज रहे युग धर्मी नीलकंठ,
होठों को सीले या निष्ठा वृष पीले।
प्रतिमाएँ अंग भंग मंदिर गर्वीले।
हंसों के गंध सुमन गुरुड़ों की लाली,
चीलों की भेंट हुई पूजा की थाली,
दीपक के भाल लिखी तम की परिचर्या,
स्वर्णिम आधारों पर रचनाएं काली।
स्वाति की विडंबना की क्षुधाग्रस्त सीपों ने,
निगले सब होनहार मोती चमकीले।
प्रतिमाएं अंग भंग मंदिर गर्वीले।
दिया कर्मनासा ने ऐसा कुछ नारा,
गोमुख तक पहुँच गई कल्मष की धारा,
भागीरथ युग के प्रतिमान सभी डूबे,
पर्वत आदर्शों के कोसते सहारा।
सेतुभंग कूलों का संशयी परायापन,
चितवन बर्फीले, संबोधन रेतीले।
प्रतिमाएँ अंग भंग मंदिर गर्वीले।

– **ब्रजविभूति पं. भोजराज चतुर्वेदी 'मानव'**,
फतेहपुर करखा

कृति – वनवासी के गीत, शीला और लहरें, गीतों के देवता नमन।

+++

एकता का संदेश

तजकर सब अनबन की बातें,
आओ करें मिलन की बातें।।
विश्व हो गया कितना छोटा,
करती धरा गगन की बातें।।
विषघट तोड़ छोड़ कर हिंसा,
हिलमिल करें अमन की बातें।।
विघटन और विनाश के बदले,
निश दिन करें सृजन की बातें।।
दर्प दम्भ अभिमान त्याग कर,
सीखें सदा नमन की बातें।।
अच्छा हो यदि रहे देहरी,
के भीतर आंगन की बातें।।
तन की पीर तो सब जग जाने,
को जाने इस मन की बातें।।
शांति स्नेह , न्याय नैतिकता,
लगती आज सपन की बातें।।
स्वेताम्बर धारी जनसेवक,
करते श्यामल घन की बातें।।
अविरल स्नेह सुधा बरसाओ
छोड़ो द्वेश जलन की बातें।।

–**डॉ. यतीश चतुर्वेदी, राज,** फतेहपुर कर्खा, लखनऊ।

+++

आप हैं दुःखी क्योंकि विगत है विगत
औ' जीवन जग हैं, नश्वर क्षणभंगुर।
परंतु सोचा क्या आपने कभी यह भी,
कि विगत नहीं था विगत रूप जब मगर
तब थे सुखी क्या आप अपने अंदर
तब क्या नहीं था अन्य विगत उस पार
दुःखद थी जिसकी स्मृति कैसी अपार ? –
बात यह है, अय! मित्र मेरे दुःखी,.
आप थे रहते रहे विगत विगत में,
और क्या नहीं हैं आप अंश सुंदर उसके जो है,
देखो, अमर अनश्वर ?
यदि ऐसा है तो क्यों मनाओ शोक
और क्यों न करो उस आनंद का भोग
जिसके हित करते प्रभु आपकी खोज!

– **बैनीमाधव चतुर्वेदी**

+++

'दर्द'

सब कुछ कहकर भी खामोश बना होता है।
आये खुद पर ही रहम क्या वो ही दर्द होता है।
वर्षों पहले की सिंअन होठों की खोलूँ कैसे,
धागा छूते ही हरा फिर से जख्म होता है।

सबके होठों पे न जाने क्यूँ मौत के स्वर हैं
जीवन मुस्कान है विश्वास खत्म होता है।
गुंचे पे खिले गुल को हिलाया तो तोड़ भी लेते
शाख चटका दी तो गुलशन पे सितम होता है।
लाखों परछायीं सी पदचाप साथ आयेंगी
आये साथ-साथ जो वो साथ कहाँ होता है।
कुछ न कह पाये एक लब्ज अलविदा ही सही
वो रहा शब्द भी अश्कों से बयाँ होता है।
देखेंगे जाके उस दूर की जलराशि को
सच है कि वो भी बालू का फर्श होता है

– **मृदुला चतुर्वेदी ' प्राची'**, कानपुर

✦✦✦

प्रकृति

प्रबल प्रतापी मारतंड की प्रचंड ज्योति,
विकसि प्रभात सोई बढ़ति चलीगई।
तम तोम खंड करि सीत कौं बिखंड
करि तपन तपाय भूमि दलति चलीगई।
'नाथ ' भहराय भज भीतर गए हैं सब,
सीरी ब्यार सीरक में सरकि चलीगई।
दुख में न कोऊ होत काहूकौ जहान बीच,
छाया संग छांणि छिपि छाया में चलीगई।।

खड़ीबोली की रचना----
इसी तरह नित चलते – चलते,
थकी न किया कहीं विश्राम।
मिले मार्ग में दृष्य मनोहर, पर क्या तुमको उनसे काम।।
उनमें जाने कितने दुखिया, मिलकर बहते जाते हैं।
बड़े-बड़े पत्थर दिल के भी, टुकड़े घिस कर आते हैं।।

– **पं. ओंकार नाथ पाण्डेय 'नाथ'**, मैनपुरी।

✦✦✦

उनकी कुछ कविताएँ और व्यंग्य

1- जब कहीं कोई नई तलवार बनती है
मेरा दिल काँप-काँप जाता है,
तलवार चाहे लोहे की हो
चाँदी की या कागज की कभी
न कभी किसी न किसी तरह
कातिल के हाथ पहुँच जाती है,
तलवार किसी बदनियत ने नहीं बनाई
और किसी नेकनियत ने नहीं चलाई,
इतिहास गवाह है
हमेशा बेगुनाह की छाती में घोंप दी जाती है।
जब कोई नई तलवार बनती है
मेरा दिल काँप-काँप जाता है।

2- पत्रकार का दर्द
खबर जो आज सुबह
पैदा हो गई थी
दोपहर तक
जवान हो गयी है
शाम भर इसके कुआँरेपन को
खबर-फरोशों की आँख से बचाओ
नेताओं के लम्बे – लम्बे
कानों से बचाओ
रात को इसे
किसी से खतरा नहीं
रोज की तरह
किसी भारीभरकम प्रेस में दब जायेगी
और सुबह शहर शहर
गली गली
(चन्द पैसों में)बिक जायेगी
पता नहीं वह दुश्मन होगा
या दोस्त जिसके गले
नागिन की तरह लिपट जायेगी।

– **सुरेन्द्र चतुर्वेदी**, सिकन्दरपुर खास/ लखनऊ

✦✦✦

सरस्वती वंदना का छंद

वरन वरन में विराजे राजहंस चढ़ि,
बाजे बीन-घोष उपराजे ज्ञान ध्यानी के.
विथुरै विनोद त्यों विवेकहू बसेरो करे,
बाढ़ै बुद्धि सुमिरत सारदा सयानी के.
ध्यान धर राखत मुकुत अभिलाषत हैं,
भाषत हैं विवुध विरुद वरदानी के.
भव-भय फंदन, निकंदन सुछंदन कों,
वंदन करत हों, चरन वरदानी के.
आजु साजि साज, रसना के राज-हंस राजि,
पूरि तंत्र-नाद, मृद मीड़ बेरि-बेरि दै.
भेंटि निज जन कौं, समेंटि सुख संपदा दै,
मेटि जम-जतना जनित अवसेरि दै.
तकत तिहारो अवलंब अविलंब अंब,
वीणा-पाणि नैसुक, दया की दीठि हेरि दै.
तेरे राज-हंस के चुगावन के काज फेरि,
रीते घट, ढेर मुकताहल बखेर दै.

– **स्व. मदनलालजी चतुर्वेदी**, मैनपुरी

✦✦✦

वसंत ऋतु

पादपन–पुष्पन पुनीत कंज–पुंजन पै,
ठौर–ठौर भौंरन के गुंजन सुहाए हैं.
कोट में, कुटी में, कुंज केलिन में, बेलिन में,
भांति–भांति सौरभ सुगंध सरसाए हैं,
कोकिला कुहूकैं चहुं ओरनसौं सोर भरीं,
चातक चकोर मोर रोरहू मचाए हैं.
मदन महीप के घमंड घिर आए कैधों,
आज ऋतुराज ही समाज साजि आए हैं.
फूलन के फूलिबे की फूल रही तुमहीं कों,
तुमहीं कों कोकिल कलाप कमनाई के.
मंजुल मिलिन्दन के मंजु मंत्र तुमहीं कों,
नलिन निकुंजन निकेत जो निकाई के.
तुमहीं कों मलयज समीर को सुसेवन,
प्रेम प्रति–मूरति हो भवन भलाई के.
आवौ ऋतुराज महाराज छवि छकौ 'प्रेम',
आनंद के ओक और सिन्धु सुधराई के.
संस्कृत शब्द 'ओक' का अर्थ 'निवास' है.

– **स्व. मदनलालजी चतुर्वेदी,** मैनपुरी

+++

कृष्णस्तव

जयति श्याम जय कोटि काम छवि जन–मन रंजन ,
जय राधावर नंद–नंदन भूषण बृज–कुंजन.
जय गोवर्धन धरन जयति जय सुर दुख भंजन,
जय अर्जुन अज्ञान तूल हित प्रबल प्रभंजन.
जय निशिचर–दल दलन जय हरन सकल संताप जय,
जय पूरण अवतार हरि, जोगिराज जय कृष्ण जय.
जय मुरलीधर जय ब्रजेश जय पतित उधारन,
जय नटवर गोपेश जयति जय संस्रति कारन.
जय शिव–हिय–शशि–अमी,जयति मोहादि निवारन,
जय मायापति जय रमेश भक्तन भय हारन.
जय पारथ के सारथी जय भगवन शाश्वत सदय,
जय यादव–कुल–कमल–रवि जोगिराज जय कृष्ण जय.
जय देवकि सुत वासुदेव, जय जसुदा नंदन,
जय गो द्विज हित करन जयति जय दुष्ट निकंदन.
जय सुर–हित बलि छलन, शरन प्रद जय जगवंदन,
जय रुकमणि पति जय गुणनिधि सज्जन चित चंदन.
जय गोलोक विहारि जय श्री सेवित जय शेष शय,
कर्मयोग के आदि कवि जोगिराज जय कृष्ण जय.

– **स्व. जयकृष्ण दासजी चतुर्वेदी,** मैनपुरी

+++

शारदे शत शत नमन मां शारदे शत शत नमन
ज्ञान की देवी तेरा आह्वान करते भक्तजन
माँ शारदे शत शत नमन
अज्ञान से सिंचित तिमिर को ज्ञान की ज्योति दिखा दो,
पंथ पथरीला कंटीला राह मुक्ति की दिखा दो,
तेरे चरणों में समर्पित है मेरा जीवन सुमन ,
माँ शारदे शत शत नमन...
पुष्प प्रज्ञा का खिला कंटक कुबुद्धि झड़ गया,
वीणा बजी बासंती ऋतु आयी लो ये पतझड़ गया,
तेरी कृपा हो जाए तो फिर दूर हों सारे व्यसन,
माँ शारदे शत शत नमन ....
श्वेताम्बरी पद्मासिनि माँ ज्ञान दो वैराग्य दो,
सानंद जीवन जी सकें गर दो तो ऐसा भाग्य दो,
सारी इच्छाएं समर्पित कर सकें तेरे चरण,
माँ शारदे शत शत नमन..
शारदे शत शत नमन माँ शारदे शत शत नमन।

– **उमेश चतुर्वेदी,** बुलन्दशहर

+++

रेलमपेल

भारतीय रेल की जनरल बोगी
पता नहीं आपने भोगी कि नहीं भोगी
एक बार हम भी कर रहे थे यात्रा
प्लेटफार्म पर देखकर सवारियों की मात्रा
हमारे पसीने छूटने लगे
हम झोला उठाकर घर की ओर फूटने लगे
तभी एक कुली आया
मुस्कुरा कर बोला – 'अन्दर जाओगे ?'
हमने कहा – 'तुम पहुँचाओगे !'
वो बोला – बड़े–बड़े पार्सल पहुँचाए हैं
आपको भी पहुँचा दूंगा
मगर रुपये पूरे पचास लूँगा.
हमने कहा – पचास रुपैया ?
वो बोला – हाँ भैया
दो रुपये आपके बाकी सामान के
हमने कहा – सामान नहीं है, अकेले हम हैं
वो बोला – बाबूजी, आप किस सामान से कम हैं !
भीड़ देख रहे हैं, कंधे पर उठाना पड़ेगा,
धक्का देकर अन्दर पहुँचाना पड़ेगा
वैसे तो हमारे लिए बाएँ हाथ का खेल है
मगर आपके लिए दाँया हाथ भी लगाना पड़ेगा

मंजूर हो तो बताओ
हमने कहा – देखा जायेगा, तुम उठाओ
कुली ने बजरंगबली का नारा लगाया
और पूरी ताकत लगाकर हमें जैसे ही उठाया
कि खुद बैठ गया
दूसरी बार कोशिश की तो लेट गया
बोला – बाबूजी पचास रुपये तो कम हैं
हमें क्या मालूम था कि आप आदमी नहीं, बम हैं
भगवान ही आपको उठा सकता है
हम क्या खाकर उठाएंगे
आपको उठाते–उठाते खुद दुनिया से उठ जायेंगे !
तभी गाड़ी ने सीटी दे दी
हम झोला उठाकर भाये
बड़ी मुश्किल से डिब्बे के अन्दर घुस पाए
डिब्बे के अन्दर का दृश्य घमासान था
पूरा डिब्बा अपने आप में हल्दी घाटी का मैदान था
लोग लेटे थे, बैठे थे, खड़े थे
जिनको कहीं जगह नहीं मिली, वो बर्थ के नीचे पड़े थे।
हमने गंजे यात्री से कहा – भाई साहब
थोडी सी जगह हमारे लिए भी बनाइये
वो सिर झुका के बोला
आइये हमारी खोपड़ी पे बैठ जाइये
आप ही के लिए साफ़ की है।
केवल दो रूपए देना,
लेकिन फिसल जाओ तो हमसे मत कहना।
तभी एक भरा हुआ बोरा खिड़की के रास्ते चढ़ा
आगे बढा और गंजे के सिर पर गिर पड़ा
गंजा चिल्लाया – किसका बोरा है ?
बोरा फौरन खडा हो गया
और उसमें से एक लड़का निकल कर बोला
बोरा नहीं है बोरे के भीतर बारह साल का छोरा है
अन्दर आने का यही एक तरीका है
हमने आपने माँ–बाप से सीखा है
आप तो एक बोरे में ही घबरा रहे हैं
जरा ठहर तो जाओ अभी गददे में लिपट कर
हमारे बाप जी अन्दर आ रहे हैं
उनको आप कैसे समझायेंगे
हम तो खड़े भी हैं वो तो आपकी गोद में ही लेट जाएँगे।
एक अखंड सोऊ चादर ओढ़ कर सो रहा था
एकदम कुम्भकरण का बाप हो रहा था
हमने जैसे ही उसे हिलाया
उसकी बगल वाला चिल्लाया –
ख़बरदार हाथ मत लगाना वरना पछताओगे
हत्या के जुर्म मैं अन्दर हो जाओगे
हमने पुछा– भाई साहब क्या लफड़ा है ?
वो बोला – बेचारा आठ घंटे से एक टाँग पर खड़ा
और खड़े खड़े इस हालत मैं पहुँच गया कि अब पड़ा है
आपके हाथ लगते ही ऊपर पहुँच जायेगा
इस भीड़ में ज़मानत करने क्या तुम्हारा बाप आयेगा ?
एक नौजवान खिड़की से अन्दर आने लगा
तो पूरे डिब्बा मिल कर उसे बाहर धकियाने लगा
नौजवान बोला – भाइयों, भाइयों
सिर्फ खड़े रहने की जगह चाहिए
एक अन्दर वाला बोला – क्या ?
खड़े रहने की जगह चाहिए
तो प्लेटफोर्म पर खड़े हो जाइये
जिंदगी भर खड़े रहिये कोई हटाये तो कहिये
जिसे देखो घुसा चला आ रहा है
रेल का डिब्बा साला जेल हुआ जा रहा है !
इतना सुनते ही एक अपराधी चिल्लाया –
रेल को जेल मत कहो मेरी आत्मा रोती है
यार जेल के अन्दर कम से कम
चलने–फिरने की जगह तो होती है !
एक सज्जन फर्श पर बैठे हुए थे आँखें मूँदे
उनके सर पर अचानक गिरीं पानी की गरम–गरम बूँदें
तो वे सर उठा कर चिल्लाये – कौन है, कौन है
साला पानी गिरा कर मौन है
दिखता नहीं नीचे तुम्हारा बाप बैठा है !
क्षमा करना बड़े भाई पानी नहीं है
हमारा छः महीने का बच्चा लेटा है
कृपया माफ़ कर दीजिये
और अपना मुँह भी नीचे कर लीजिये
वरना बच्चे का क्या भरोसा !
क्या मालूम अगली बार उसने आपको क्या परोसा !!
अचानक डिब्बे में बड़ी जोर का हल्ला हुआ
एक सज्जन दहाड़ मार कर चिल्लाये –
पकड़ो–पकड़ो जाने न पाए
हमने पुछा क्या हुआ, क्या हुआ ?
वे बोले – हाय–हाय,
मेरा बटुआ किसी ने भीड़ में मार दिया
पूरे तीन सौ रुपये से उतार दिया टिकट भी उसी में था !
कोई बोला – रहने दो यार भूमिका मत बनाओ
टिकट न लिया हो तो हाथ मिलाओ
हमने भी नहीं लिया है गर आप इस तरह चिल्लायेंगे

तो आपके साथ क्या हम नहीं पकड़ लिए जायेंगे?
वे सज्जन रोकर बोले – नहीं भाई साहब
मैं झूठ नहीं बोलता मैं एक टीचर हूँ
कोई बोला – तभी तो झूठ है
टीचर के पास और बटुआ ?
इससे अच्छा मजाक इतिहास में आज तक नहीं हुआ !
टीचर बोला – कैसा इतिहास मेरा विषय तो भूगोल है
तभी एक विद्यार्थी चिल्लाया
बेटा इसलिए तुम्हारा बटुआ गोल है !
बाहर से आवाज आई – 'गरम समोसे वाला'
अन्दर से फ़ौरन बोले एक लाला
दो हमको भी देना भाई
सुनते ही ललाइन ने डाँट लगायी
बड़े चटोरे हो !
क्या पाँच साल के छोरे हो ?
इतनी गर्मी मैं खाओगे ?
फिर पानी को तो नहीं चिल्लाओगे ?
अभी मुँह में आ रहा है
समोसे खाते ही आँखों में आ जायेगा
इस भीड़ में पानी क्या रेल मंत्री दे जायेगा ?
तभी डिब्बे में हुआ हल्का उजाला
किसी ने जुमला उछाला ये किसने बीड़ी जलाई है ?
कोई बोला – बीड़ी नहीं है स्वागत करो
डिब्बे में पहली बार बिजली आई है
दूसरा बोला – पंखे कहाँ हैं ?
उत्तर मिला – जहाँ नहीं होने चाहिए वहाँ हैं
पंखों पर आपको क्या आपत्ति है ?
जानते नहीं रेल हमारी राष्ट्रीय संपत्ति है
कोई राष्ट्रीय चोर हमें घिस्सा दे गया है
संपत्ति में से अपना हिस्सा ले गया है
आपको लेना हो आप भी ले जाओ
मगर जेब में जो बल्ब रख लिए हैं
उनमें से एकाध तो हमको दे जाओ !
अचानक डिब्बे में एक विस्फोट हुआ
हलाकि यह बम नहीं था
मगर किसी बम से कम भी नहीं था
यह हमारा पेट था उसका हमारे लिए संकेत था
कि जाओ बहुत भारी हो रहे हो हलके हो जाओ
हमने सोचा डिब्बे की भीड़ को देखते हुए
बाथरूम कम से कम दो किलोमीटर दूर है
ऐसे में कुछ हो जाये तो किसी का क्या कसूर है
इसिलए रिस्क नहीं लेना चाहिए
अपना पडोसी उठे उससे पहले
अपने को चल देना चाहिए
सो हमने भीड़ में रेंगना शुरू किया
पूरे दो घंटे में पहुँच पाए
बाथरूम का दरवाजा खटखटाया
तो भीतर से एक सिर बाहर आया
बोला – क्या चाहिए ?
हमने कहा – बाहर तो आजा भैये हमें जाना है
वो बोला – किस किस को निकालोगे?
अन्दर बारह खड़े हैं
हमने कहा – भाई साहब हम बहुत मुश्किल में पड़े हैं
मामला बिगड़ गया तो बंदा कहाँ जायेगा ?
वो बला – क्यूँ आपके कंधे
पे जो झोला टँगा है
वो किस दिन काम में आयेगा ...
इतने में लाइट चली गयी
बाथरूम वाला वापस अन्दर जा चुका था
हमारा झोला कंधे से गायब हो चुका था
कोई अँधेरे का लाभ उठाकर
अपने काम में ला चुका था।
अचानक गाड़ी बड़ी जोर से हिली
एक यात्री ख़ुशी के मारे चिल्लाया – 'अरे चली, चली'
कोई बोला – जय बजरंग बली, कोई बोला – या अली
हमने कहा – काहे के अली और काहे के बली !
गाड़ी तो बगल वाली जा रही है
और तुमको अपनी चलती नजर आ रही है ?
प्यारे ! सब नज़र का धोखा है
दरअसल ये रेलगाडी नहीं हमारी ज़िन्दगी है
और ज़िन्दगी में धोखे के अलावा और क्या होता है ?

–**प्रदीप चौबे,** ग्वालियर

✦✦✦

पथ

जो दो डग चल कर ठहर गया
उससे पथ का परिचय क्या है,
पथ ने पहचाना वह राही जिसके पैरों की गति न थकी,
सौ मोड़ राह ने लिए लक्ष्य से मंज़लि ओझल हो न सकी,
पथ ने पहचाना वह राही।
डग एक एक जिसका विश्वासों का निर्माण किए आया,
जो अपने पीछे अनगिनती पथिकों के चरण लिए आया,

पथ ने पहचाना वह राही।
पथ ने पहचाना वह राही जिसकी गति में तूफान भरा,
पग जिसका हिलते ही युग की निद्रा से उठ हिल गई धरा,
पथ ने पहचाना वह राही।
कांटों से जिसका मेल पंथ ने वह राही पहचाना है,
बलिदानों की दुनिया से पथ का परिचय बहुत पुराना है,
कह रही गूँज बलिदानों की बढ़ चल
चलने में भय क्या है,
जो दो डग चल कर ठहर गया
उससे पथ का परिचय क्या है।

– **स्व. श्री तुलसीराम जी चतुर्वेदी,** भरतपुर, चँद्रपुर

✦✦✦

हिंदी आराधना

मेरी माँ हिंदी मुझे, सबसे प्यारी व्यास।
माँ का जब आशीष हो, क्यों दूजे की आस।।
तुलसी का मानस यहीं, शब्द शब्द रघुवीर।
उलट बाँसियों में भरे, दर्शन दास कबीर।।
ब्रह्मरंध्र बिंधते यहीं, कुंडलिनी जग जाय।
मलिक मोहम्मद जायसी योग्य यहीं सिखलाय।।
इष्ट बिहारी लाल के, कर मुरली उरमाल।
मोर मुकुट कटिकाँछनी, नहीं बसें गोपाल।।
वेगवती नदियाँ यहीं, देववती रसधार।
जो इसमें तैरा नहीं, डूबेगा मझधार।।
भाषा यह है अमृत्व की, और तत्व की व्यास।
जितनी हम पीते इसे, उतनी बढ़ती प्यास।।
हर भाषा का मूल यह हर भाषा का सार।
घनानंद के छंद भी यहीं करें विस्तार।
हिंदी भाषा प्रेम की, छल के जहाँ दुलार।
विष प्याला अमृत बने जाने सब संसार।।
भाषाएं यों बहुत हैं, देस परदेसन माहिं।
पर हिंदी जैसी कहीं हमको दीखी नाहिं।।
भाषा है यह सत्य की, हिय में रस बरसाय।
भक्ति भावना का चरम, छिन छिन हमें दिखाय।।

– **कै. व्यास चतुर्वेदी,** आगरा

✦✦✦

लोकतंत्र

लोकतंत्र की रीति में
भली यही परतीत
यहां युधिष्ठिर खींचते
द्रोपदी के ही चीर
दुर्योधन जी मौन है
पाय टिकट को नेह
अंधा बाँटे रेवड़ी
चीन्ह चीन्ह के देय
यह तो बस मंडूक है
करे कूप को वास
इनकी बस दुनिया यही
इनको यही निवास
हां में हां टाइप के
ना में ना करी देय
अंधा बांटे रेवड़ी
चीन्ह चीन्ह करी देय
हलवा पूरी खाई के
रबड़ी करते पान
वैतरणी के पार हित
सुरा करें कल्याण
दल दल की यह टेर है
वोट जाति सौं लेय
अंधा बाँटे रेवड़ी
चीन्ह चीन्ह कर देय
टिकिट खरीदन में लगे
लाख पचास हजार
दादागिरि साथ में
ले प्रेशर की धार
निर्वाचन की राह में
वोटर भी धर लये
अंधा बाँटे रेवड़ी
चीन्ह चीन्ह कर देय
अर्थोपार्जन साध्य है
ले ज़ह कल्याणी मार्ग
पहिले लागत ही लगे
बढ़े तभी अनुराग
भ्रष्टाचारी मग गहे
बढ़े मोह को नेह।
अंधा बांटे रेवड़ी
चीन्ह चीन्ह कर देय।

– **मुनीन्द्र मोहन चतुर्वेदी,** इटावा/ग्वालियर

✦✦✦

दीपशिखा

याद करें संताप होय दृष्टि देखि पगलाय,
स्पर्श करें जड़ होत है, विषमय प्रिया कहाय।

दुबली पतली छरहरी, तन्वंगी रतनार,
कोमल किसलय कामिनी के हरि कटि कचनार।
अंबर तो सहस्त्र नयनन ते झाँक रहयो,
धरणी को धैर्य कहूँ आज चुक जाए ना।
सागर अमावस में पागल है नाच उठियो,
डरकर मैनाक कहूँ भग जाये न।
रवि चंद्र संग लै वारुणी पीयन गयो,
धरणी पै दूजी चंद्र कहूँ उग आए ना।
तारागढ़ व्याकुल है, कोलाहल कर जगे,
विधु वदनी तू घूँघट उठाये ना।
रेशम की धार वेश, काजर लजात केश,
घूम घुआँरे मनु, घन घिर आये हैं।
दामिनि दमक गई, कौंध गई आंगन में,
लाल-लाल जीव काटि, नागिन लहराये है।
आनन की चंद्र मान, वारिधि अकुलाय गयौ,
लील गयों धरा को मनु ज्वार रूप लाये हैं।
दादुर कौ आमंत्रण, मनमयूर नाच उठयौ,
शुक सवार ढंग देख, मुनिमन पगलाये हैं।
भाल देख उन्नत गगन लतियात जात,
नभ तें उतर चंद्र, बिंदु में समायों है।
तारागढ़ ढूंढते, तारापति कहाँ गये,
कर्क कौ सनाथ कर, कितकों सिधायो हैं।
कन्या मिथुन संग, रास यों रचा रही,
मनु बृष तुला कौ तौल कें ही आज धायो है।
आनन को चंद्र मान भान भयों मावस में,
चंद्र वधु ये पधार, रूप कौ सजायौ है।

– **मुनींद्र मोहन चतुर्वेदी** (इटावा/ग्वालियर)
पूर्व संपादक

+++

हम चतुर्वेदी थे

अंगरखा, धोती-टोपी पहने, गले में दुपट्टा.., विजया की हल्की लाल धारियाँ आँखों में, ऋषियों की संतान, दीप्तिमान चेहरा, स्वर्णिम वर्ण, गज मस्त जैसी चाल, उल्लास और प्रसन्नता से खिला मुखारविंद चतुर्वेदी-वृंद जब बारात की आगवनी के समय आते थे और लगभग इसी धजा में पंक्ति वद्ध दोनों और खड़े चतुर्वेदी-घराती उनका स्वागत करते थे और पूर्व परिचितों से छींटे बाजी होती थी। वह सब अब केवल इतिहास की बात बन कर रह गई। अब तो -

सलीका कौमी अब ख़त्म होता जाता है,
चौबों की बारात में जाना नहीं भाता है।
लुत्फ़ पालागन अब खत्म ही समझो ललित
सरेआम पैर औरतों के छूना नहीं आता है।
शर्बत की जगह अब कॉफी पीनी पड़ती है,
मिठास मिट गई कड़वी ही पीनी पड़ती है।
गिलास चाँदी का एक सपना हो गया है ललित,
प्याले चीनी के में, हमको भी पीनी पड़ती है।
अब तो चतुर्वेदी लिखने में झिझक होती है,
असलियत अपनी बताने में झिझक होती है
तर्ज़ गैरों के अपनाये हैं सब हमने ललित,
दिल को अब दिल से लगाने में लगाने में झिझक होती है।
कोट और पतलून में अब सब ही डटे रहते हैं,
अर्क अंगूर में अब बेटे रमे रहते हैं।
अंगरखा, धोती, विजया को कौन जाने ललित
अब तो सरेआम मुर्गे में जुटे रहते हैं।

-पाठक लालता प्रसाद चतुर्वेदी 'ललित', लखनऊ

+++

हिन्दी वंदना

बानी हिन्दी भासनकी महारानी !
चंद, सूर, तुलसीसे जामें, कवी भये लासानी !!
दीन मलीन कहत जो याकौं, हैं सो अति अज्ञानी !
या सम काव्य छन्द नहिं देख्यौ, है दुनियां भर छानी !!
का गिनती उरदू बँगला की, भरे अँगरेजिहु पानी !
आजहु याकौ सब जग बोलत, गोरे, तुरुक, जपानी !!
है भारतकी भाषा निहचै, हिन्दी, हिन्दुस्तानी !
जगन्नाथ हिन्दी भाषा कौ, है सेवक अभिमानी !!

+++

जन्मभूमि

जय जय जय जन्मभूमि, जननी मम प्यारी !
जल की जहँ बहति धार, डोलति सीतल बयार,
गिरिवन सोभा अपार, अनुपम छवि वारी !!
उपजत जहँ विपुल धान, केसर फल फूल पान,
पंछीगन करत गान, हरषित नर नारी !!
सिल्ककला जहँ प्रसार, तसर पाट सूत सार,
बनति वस्तु बेसुमार, सुन्दर सुखकारी !!
प्रगटे जहँ जनक राय, त्रिभुवन जस रह्यो छाय,
है बिदेह सब बिहाय, ज्ञानी अतिभारी !!
चन्द्रगुप्त नृप महान, चानकसम नीतिमान,
भये जहाँ गुननिधान, जाऊं बलिहारी !!

+++

खड़ी बोली की आह्वान

(सन 1942 के आंदोलन पर रचित)
पूजन करने स्वतन्त्रता का, कौन अग्रसर होता है !
कौन पुजारी सच्चा बन, प्राणों का दीप सँजोता है !!
डूबी भारत की इस नैया को, फिर कौन उबारेगा,
किसको कर्मवीर कह कर, यह भारत देश पुकारेगा !!
कौन वीर उर शोणित से, माता के चरण पखारेगा !
सत्यव्रती हो कौन विजय की ध्वजा कारों में धारेगा !!
किसके बल पर स्वाभिमान का, भानु उदय फिर होता है!
कौन पुजारी सच्चा बन, प्राणों का दीप सँजोता है !!
आज खुला कर्तव्य मार्ग, वीरों के सम्मुख आने को !
माता का पय पान किया, वह सच्चा कर दिखलाने को!!
चलो वीरगण ! आज मृत्यु को, सुख से कंठ लगाने को!
वह अमूल्य स्वाधीन भाव का, रत्न जीत कर लाने को!!
पराधीनता की देखें अब, कौन कालिमा धोता है।
कौन पुजारी सच्चा बन, प्राणों का दीप सँजोता है !!
कंटकमय यह मार्ग देखकर, वीरों तनिक भी न घबराना!
सुख से हँस हँस कर, माता के चरणों पर बलि हो जाना!!
आना तो जय से पूरित हो, वीर भाव निज दरसाना !
अथवा समरभूमि में डट कर, वीरों की शुभ गति पाना!!
क्षण भंगुर जीवन का जग में, बार – बार क्या होता है !
कौन पुजारी सच्चा बन, प्राणों का दीप सँजोता है !!
जन्मभूमि जननी की ममता का, अब मूल्य चुकाना है !
उसके एक एक ऑसू पर, अपना रक्त बहाना है !!
भारत का नत मस्तक तुमको, ऊँचा कर दिखलाना है !
निज गौरव की प्रखर प्रभा से, विश्व तुम्हें चमकाना है!!
सुन हुँकारें जान जाय जग, सिंह उठा अब सोता है !
कौन पुजारी सच्चा बन, प्राणों का दीप सँजोता है !!

– **श्रीमती कुशोरीदेवी चतुर्वेदी**

निस्सीम पंथ के पंथी

निस्सीम पंथ के पंथी तुम बढ़ते जाना
कलकल बहती सरिते तुम बहती जाना।
बाधाओं के काले घन को चीरो तुम
विपदाओं के विष प्याले को पीलो तुम ॥
सूखी धरती के प्राणों को स्पंदन दो
बुझे हुए अरमानों को नव थिरकन दो।
नव पल्लव दे दो मिटे हुए विश्वासों को
जीवन दे दो रुकी हुई इन श्वासों को ॥
भुजबल दे दो उत्पीड़ित इन्सानों को
राहत दे दो भूखी नंगी जानों को।
बढ़ते जाना धीरज धर इन राहों पर
फूल खिलेंगे शूल भरी इन राहों पर।।
शूलों से डर कर पथ अपना छोड़ा
बाधाओं से डर कर पथ अपना मोड़ा।
तो सत की माला टूक–टूक हो जायेगी
स्वप्नों की यह सेज बिछी रह जायेगी ।

– **डॉ एम सी मिश्रा**

+++

दिया

दीप से पूछा समय ने क्यों जले जाते हो तुम,
घर के सब तो सो गये हैं क्यों जगे जाते हो तुम?
कौनसा तमग़ा मिलेगा जागकर इस देश में,
सो भी जाओ यार मेरे क्यों जगे जाते हो तुम?
मैं फकत मिट्टी ही था आकार उसने दे दिया,
मैं तो खाली था मगर, प्राण उसने भर दिया।
मैं तो अब भी मौन था पर एक बाती जल गई,
मैं तो खुद हैरान हूं बन गया कैसे दिया।
नियति से जो रोशनी का रूप मुझको मिल गया,
तुष्ट हूं संतुष्ट हूं जो काम मुझको मिल गया।
मैं जगत को रोशनी दूं ये मेरा सपना नहीं,
साधना इतनी ही मेरी रह सकूं खुद का दिया।
मिट्टी धरा, मिट्टी भवन, मिट्टी से मेरा रूप है,
शीत से ठिठुरे बदन में रोशनी की धूप है।
मत कहो मुझसे कि मैं सो कर पुनः मिट्टी बनूं,
जागने दो मुझे जब तक प्राण के अनुरूप है।

– **डॉ. एम सी मिश्रा**

+++

घनश्याम देखे

मुझे मिले एक महानुभाव
बोले– अजी श्रीवर तो बताओ
क्या स्वर्ग में या यमुना–निकुञ्ज में
कहाँ किसी ने घनश्याम देखे?
क्या वे बसें मन्दिर में नृपों के
या दृष्टि आते कवि–कल्पना
में या योगियों की गहरी समाधि में
कभी किसी ने घनश्याम देखे ?
मैंने कहा– आज निकुञ्ज शून्य हैं।
सूनी पड़ी हैं बज बीथिकाएँ।
न कूल में श्रीयमुना निकुञ्ज में
कहीं किसी ने घनश्याम देखे।
न तो बसें क्षीर–समुद्र ही में,
न द्वारका के कनकाभिराम में,

न मन्दिरों के गृह–गर्भ ही में,
न स्वर्ग ही में घनश्याम देखे।
न योगियों की गहरी समाधि में,
न ज्ञान के 'तत्त्वमसि' प्रमाण में,
न ध्यान में ऑ कवि को न तान में
न गान ही में घनश्याम देखे।
अवश्य ही वे बसते यहाँ है
जहाँ दया की सरिता अशेष हैं।
है नित्य आनन्द विराजता जहाँ
मैंने वहीं श्रीघनश्याम देखे।
छाया जहाँ नित्य पवित्र प्रेम है,
जहाँ यही एक अनन्त नेम है,
निष्काम राधा सम प्रेम है जहाँ
प्यारे वहीं श्रीघनश्याम देखे।
दरिंद्र के जीर्ण जरा कुटीर में,
किसान के श्यामल शस्य खेत में,
विश्वास में निष्ठ प्रतिज्ञ भक्त के
प्रसन्न होते घनश्याम देखें।
दुःखी जनों की गहरी उसांस में,
औ पीड़ितों की करुणार्द्र आह में,
सहायतापेक्ष्य सनीर जैन से हैं
झांकते श्रीघनश्याम देखे।

– पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी' श्रीवर'

✦✦✦

गुलशन

गुलशन में अबकी बार ये कोशिश करेंगे हम
कदम रहे बहार पे कोशिश करेंगे हम
अपनी जफा पे कोई सितमगर भी एक दिन
हो जाये शर्मसार ये कोशिश करेंगे हम
तेरे बगैर ज़न्दिगी ए बेकरार को
मिल जाये कुछ कुरार ये कोशिश करेंगे हम
दिल जैसी चीज़ नक्द तो मिलती नहीं कहीं
मिल जाये अब उधार ये कोशिश करेंगे हम
मिलने की बात करते हैं मिलते नहीं मगर
कहते हैं बार बार ये कोशिश करेंगे हम
हम इस बरस चमन में खिलायेंगे गुल नये
मौसम हो खुश गवार ये कोशिश करेंगे हम
साक़ी की चश्म ए मस्त से ऐसी पियेंगे 'दास'
उतरे न फिर खुमार, ये कोशिश करेंगे हम

– स्व. पृथ्वीनाथ चतुर्वेदी दास, फिरोजाबाद

✦✦✦

फागुन

पारसाल फागुन में चूनरी बिगारी नई।
पटुकी बिहारी की सुरंग रंग बोरी मैं ।

ताकि ताकि मारी पिचकारी कारों का उन
लालन के गालन गुलाबी करयौ रोरी मैं॥
बातन ही बातन में घातन तक ही रह्यौ।
घांघरों सजाइ के नचाय बरजोरी मैं ।

कारे बिन गोरी हाइ कौन संग फाग खेलें।
खेलै जग होरी ब्रज होरी होतु होरी मैं ॥

ऐसी अनरीति भला देखी कबू काहू कहूँ।
ब्रज आइबे की कही द्वारिका चले गए ।

खेत की न मूरी काढू बथुआ गली हू नाहिं।
भोरे ब्रजबासी बहुबेर हैं छले गए।

आबत हँसी है फैसी कूबरी कुठौर ठौर
बाहू दारी कान फाग खूबही मले गए।

नारी जाति जाइ जानि नाहिँ पतिऐहैं कान्ह
पाँउदै कुल्हाड़ी छाँड़ि मथुरा भले गए ॥

– ब्रजकोकिल श्री अमृतलाल चतुर्वेदी

✦✦✦

वर्तमान

जो बीत गया वह तो स्मृति है केवल
जो आयेगा वह हाथ नहीं है तेरे।
है याज, धाज बस तेरा, कल सपना है,
कल की चिन्ता को छोड़ याज वर से रे
यह धूप छाँ, परिवर्तन तो जग कम है,
उलझनें सदा मुसकाती है जीवन में
है याज बहुत से फूल खिले, मधुरितु है,
कल पतझर होगा हरे–भरे मधुबन में।
जो ग्राज करोगे भला बुरा वह अपना
उसका हिसाब देना होता है साथी।
इसीलिये ग्राज की सोचो, कर लो सार्थक,
खोलो बच्चों के आगे अपनी छाती।
दुख की परिभाषा, सुख का परिवर्धन है,

यह ज्योति पुंज बन जाये और घनेरे।
जो बीत गया वह अब स्मृति है केवल,
जो आयेगा वह हाथ नहीं है तेरे।
है आाज, धाज बस तेरा।

– स्व. नरेन्द्रनाथ चतुर्वेदी

✦✦✦

गोताखोर

में गोताखोर, मुझे गहरे जाना होगा,
तुम तट पर बैठ भँवर की बातें किया करो।
मैं पहला खोजा नहीं अगम भव सागर का,
मुझसे पहले इसको कितनों ने थाहा है,
तल के मोती खोजे, परखे, विसराए हैं,
डूबे हैं पर मिट्टी का कौल निबाहा है,
मैं भी खोजा हूँ, मुझमें उनमें भेद यही,
मैं सबसे महँगे उस मोती का आशिक हूँ
जो मिला नहीं, वह पा लेने की धुन मेरी,
तुम मिला सहेजो, घर की बातें किया करो।
मैं गोताखोर, मुझे गहरे जाना होगा,
तुम तट पर बैठ भँवर की बातें किया करो।
पथ पर तो सब चलते हैं, चलना पड़ता है,
पर मेरे चरण नया पथ चलना सीखे
तुम हँसो मगर मेरा विश्वास न हारेगा,
जीने के अपने–अपने अलग तरीके हैं,
जिस पथ पर कोई पैर निशानी छोड़ गया,
उस पथ पर चलना, मेरे मन को रुचा नहीं
कांटे रौंदूंगा, अपनी राह बनाऊँगा,
हिमालय के आंसू

– **कवि आनन्द मिश्र,** ग्वालियर

✦✦✦

उपालंभ

ऐसे गरज रहे हो बादल ! जैसे भरे हुए हो,
मुझे ज्ञात है, सिर पर गागर खाली धरे हुए हो।
पानी हो तुममें तो बरसो ! प्राण जले जाते हैं,
भरे हुए तो नहीं याचना ऐसे ठुकराते हैं,
और अगर जलधर भी हो, तो यह इतराना कैसा !
मेरे सागर से चेतनता लेकर हरे हुए हो।
ऐसे गरज रहे हो बादल ! जैसे भरे हुए हो,
मुझे ज्ञात है, सिर पर गागर खाली धरे हुए हो।
या फिर बड़े कृपण हो वारिद ! तुम ओछे हो मन के,
सिंधु सहेजे बैठे, छींटे दे न रहे जल–कण के।
मैं भी देखुं, छोटी गागर कितनी भर सकते हो,
देखोगे पतझर के तरु–से तुम भी भरे हुए हो।
ऐसे गरज रहे हो बादल ! जैसे भरे हुए हो,
मुझे ज्ञात है, सिर पर गागर खाली धरे हुए हो।
जग की रीति यही है, कोई याचक, कोई दानी,
तुम देते हो, हम पाते हैं, अपनी यही कहानी,

– पद्मभूषण श्रीनारायण चतुर्वेदी

✦✦✦

अहिंसा परमो धर्म

स्वामी मिथ्या नन्द शास्त्री ने
हैवर्ड व्हिस्की की बोतल
हॉफ की
फिर एक प्लेट कबाब
और एक प्लेट ऑमलेट की
साफ की
पत्रकार वार्ता में
डकार लेते हुये बोले
युवको को
गाँधी जी के सिधान्तों
पर चलना चाहिये
मन सा वाचा कर्म
अहिंसा परमो धर्म
– प्रकाश मिश्र, ग्वालियर

✦✦✦

क्या बोले भैया

तुमसे क्या बोले भैया
मंहगाई ने कर रखी है दे ताता थैया
कऊय्ये दबाये पिज्जा बर्गर
हंस करें फांके
ने सभ्यता डाल रही है।
संस्कृति पर डांके
कहाँ रास्ता भटक गये हैं।
खोई पगडण्डी
ज्ञान हो गया लोकतंत्र में
ट्यूशन की मंदी
स्वास्थ्य के डोरों ने काटी सच की
तुमसे क्यो बोले भैया
कपड़े छोटे छोटे हो गये फिल्म बड़ी कर दी
बॉलीवुड ने हॉलीवुड की खाट खड़ी कर दी
जैसी सबने चाही
पिक्चर बिलकुल वैसी है तो ऐसी तैसी है
कला और मर्यादा की

बिकनी में गा रही नायिका दइय्या
रे दइय्या
क्या बोले भैया
तुमसे क्या बोले भैया
जैसे बोये बीज, फसल भी वैसी
निकली है
बड़े बड़े बन्टाधारों की
डिग्री नकली है
सच की राह पे चलने वाले
बुद्ध नहीं मिलते
जिंसों की क्या कहें, आदमी
शुद्ध नहीं मिलते
बीच भंवर में डगमग डगमग
डोल रही नइय्या
क्या बोले भैया
तुमसे क्या बोले भैया

– **प्रकाश मिश्र,** ग्वालियर

✦✦✦

लडुवा बूँदी के

गणपति प्रिय परम उदार लडुवा बूँदी के
जन–जन के साँचे यार लडुवा बूँदी के।।1।।

नयी बहु ने छोरा जायौ,
सासु ननद मिलि मंगल गायौ,
दादा गुरु पंडित बुलवायौ,
ग्रहन सौधि पुनि नाम धरायौ,
शुभ स्वागत हेतु तैयार लडुवा बूँदी के ॥ 2 ॥

विधि मिलाय शुभ लगुन लिखायी,
पूजि गणप मंडपहि छवायी,
भाँवर दीन्ही ब्याह रचायी.
नेगी नेग करी पहुनायी.
शुभ करें सुमंगल चार लड़वा बूँदी के।।७।।

पक्कायत लें मई सगाई,
आनंद मंगल लगुन चठाई,
चली बरात तिलक करवाई
समधी द्वार सवै पहुँचाई,
सँग सेवक खातिरदार, लड़वा बूँदी के ॥ ८ ॥

जीवन भरि जे करें सेवकांई।
मरिखे पीछें विप्र जिमाई।
ऋस करें स्वादिष्ट मिठाई।
युद्ध सौम्य मूरार्त सुखदाई ।
संतत रत पर उपकार लड़वा बूँदी के।।९।।

देखि न नाक सिकोड़ौ भाई
अच्छे मन सौ भोग लगाई
ज्यौंनारन में परसहु लाई।
आग्रह प्रेम समेत खवाई।
बढ़ि 'राज' प्रेम व्यवहार लड़वा बूँदी के।।१०।।

– **भोजराज चतुर्वेदी,** होलीपुरा

✦✦✦

श्री आनन्द मिश्र

प्रसिद्ध समाज सेवी श्री मुन्नाजी वा साहब के श्री आनन्द मिश्र का जन्म ग्वालियर में हुआ था। आप साहब ने सब कल्पना भी नहीं की थी जिसे उन्होंने मौनी समझ रखा है यह कभी ऐसी बुलन्द आवाज में बोलेगा कि उसकी प्रतिध्वनि देश के कोने कोने में गजेनों। अजभाषा के रससिद्ध कवि श्री जी मिश्र 'श के आप पुत्र थे।

और इतिहास अध्ययन के प्रिय थे। पुस्तकों के ढेर में फंसकर सोना जना डूबना और घटो खो जानाभाव रहा। विद्या व्यसनी अध्यवसायी, लगनशील, धुन के पक्के मित्रों के लिए सब कुछ पो कर देने वाले संवेदनशील ज्ञानन्द आजीवन अविवाहित रहे। कविता आनन्द जी को विरासत में मिली। अपनी इस परम्परागत वृत्ति और सम्पत्ति को वह नई ऊँचाइयों पर ले गये।

श्री आनन्द कई माहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक संस्थाओं से सम्बद रहे। यात्री सप मध्य रेलवे के उपाध्यक्ष (१८६६), राज भाषा संशोधन विधेयक के विरुद्ध आन्दोलन समिति के सक्रिय सदस्य (१८६७) एवं साहित्य संघ ग्वालियर के अध्यक्ष कई वर्षों तक रहे।

हिमालय के आंसू पर २८ वर्ष की अवस्था में आपको देव पुरस्कार मिला। इतनी अल्पायु में यह सम्मान प्राप्त करने का कोई दूसरा उदाहरण आज तक नहीं है।

श्री आनन्द जी को मुख्य कृतियाँ इस प्रकार है

साधना (१६५२ में प्रकाशित) मध्य भारत कला परिषद से पुरस्कृत। अंकुर की आस्था अखिल भारतीय नवीन पुरस्कार से सम्मानित कृति आस्था के शिखर सम्पादित ग्रंथ।

चंदेरी का जौहर , झाँसी की रानी मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश शासन द्वारा इसके अतिरिक्त और भी अनेकों खण्ड काव्य व गद्य रचनाओं का सृजन किया था।

महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, महाकवि सुमित्रा नंदन पंत, डा० शिवमंगल सिंह सुमन आदि महान व्यक्तियों द्वारा श्री आनन्द जी बहुत प्रशंसित रहे।

केवल ४१ वर्ष की अल्पायु में २६ नवम्बर १६७४ को शोकान्धकार में सीन कर 'आनन्द' समाज का नाम ऊँचा करके आनन्द लोक को पधार गये।

जाने कैसा देश बनेगा, जाने कैसी यह तैयारी

मन्दिर से आ गई उतर कर चकले तक सभ्यता हमारी दो सदियों के तप से पाये, इस महँगे सुराज की जय हो इस आसुरी सभ्यता की जय, इस कोढ़ी समाज की जय हो जितने दिल उतनी दीवारें, धधक रही नफरत की ज्वाला जितने प्रान्त देश हैं उतने, राजनीति यह क्या कर डाला ? ? कितनी बड़ी चाहिये कुर्सी, कोई परिधि, माप है कोई ?

दल के लिए देश को बाँटे, इससे बड़ा पाप है कोई ?

धरती का मुकुट हिमालय, या हिरोशिमा – नागा साकी – अस्वेतों के खारे आँसू, उजड़े वियत नाम की झाँकी नील नदी के बहते छाले, बर्लिन की खण्डित मीनारें लहू लुहान कोरिया चाहे तिब्बत की किस्मत के ताले जिसने संवेदना सराही, उसकी उजड़ी हर क्यारी है वह मनुष्य होने के नाते, इस पीड़ा का अधिकारी है।

✦✦✦

द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी

आप इटावा निवासी माथुर चतुर्वेदी शंकरपुरी पांडे थे और 'प्रपत्ति वैभव' के रचयिता श्री गोविंददास जी के वशज थे। आपका जन्म स. 1934 वि. ज्येष्ठ शुक्ल 2 को हुआ। आपके पिता का नाम फणीन्द्र रामानुजदास था पहले आप मेडिकल डिपार्टमेंट में सरकारी नौकर थे। परंतु हिंदी में 'वारेन हैस्टिंग्ज' नामक ग्रंथ लिखने के कारण 1910 में आपको अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा। तब से बराबर आप अनवरत रूप से साहित्य साधना में संलग्न रहे। आपकी लिखी लगभग 100 पुस्तकें अभी तक प्रकाशित हो चुकी हैं आपने 6, 7 तो हिंदी भाषा के कोष ही लिखे हैं। बाल्मीकि रामायण तथा महाभारत के हिंदी अनुवाद भी अपने किए हैं जो प्रयाग के रामनारायण लाल बुकसेलर ने प्रकाशित किए हैं।

आपकी लिखी हुई 'हिंदी चरिताम्बुधि' तो हिंदी साहित्य निधि की अद्वितीय मणि है जो अपनी शानी का अकेला ही ग्रंथ है। जिसमें आपने पुराणों, इतिहास व साहित्य में वर्णित प्रायः सभी चरित्रों का क्रमानुसार पूरा परिचय दिया है। आप अखिल भारत वर्षीय हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के प्रबंधमंत्री भी लगभग 6–7 वर्ष तक रहे थे। आप 'वैदिक सर्वस्व', 'राघवेंद्र', 'यादवेंद्र' आदि कई समाचार पत्रों के सम्पादक भी रहे थे। आपके लेख निरंतर हिंदी के प्रायः सभी उच्चकोटि के पत्रों में प्रकाशित होते रहते थे। आप 'साहित्य भूषण तथा 'डाक्टर आफ ओरियेंटलइटावा कल्चर' (D.O.C) की पदवियों से विभूषित थे आप हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध महारथी थे। इस युग में आपने हिंदी ब्रजभाषा के कोष की रचना की है। आपकी लिखी पुस्तकों में 'रचनादर्श' नामक पुस्तक विद्यार्थियों के लिए बड़ी उपयोगी सिद्ध हुई है। हिंदी साहित्य के उन्नायकों में परमप्रसिद्ध पं. श्रीनारायण जी चतुर्वेदी जो आल इण्डिया के डिप्टी डायरेक्टर रहे, आपके ही ज्येष्ठ पुत्र हैं धार्मिकभावना और साहित्य–सेवा का जैसा सुंदर समन्वय आपके व्यक्तित्व में है वैसा आधुनिक युग में बहुत ही कम देखने को मिलता है।

✦✦✦

मधुसूदन दास

यह इटावा में मुहल्ला छिपैटी के रहने वाले माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण थे। यह इटावा निवासी श्री गोविंद दास जिन्होंने 'प्रपत्ति वैभव' रामानुज सम्प्रदाय का हिंदी दोहों में बड़ा ही उत्तम ग्रंथ लिखा है के शिष्य थे और उन्हीं के अनुरोध से इन्होंने संवत 1839 में एक बड़ा और मनोहर प्रबंध काव्य 'रामाश्व मेध' बनाया जो सब प्रकार से गोस्वामी जी के रामचरित मानस का परिशिष्ट ग्रंथ होने के योग्य है। हिंदी साहित्य के इतिहास में श्री शुक्ल जी रामाश्व मेध के संबंध में लिखते हैं कि इसमें 'पदविन्यास ' और भाषा सौष्ठव रामचरित मानस सा ही है गोस्वामी जी की प्रणाली के अनुसरण में मधुसूदन दास जी को पूरी सफलता हुई है। इनकी प्रबन्ध कुशलता, कवित्व शक्ति और भाषा की शिष्टता तीनों उच्चकोटि की हैं। की चौपाइयां अलबत्तः गोस्वामी जी की चौपाईयों से वे खटके मिलाई जा सकती है।

समालोचक शिरोमणि आचार्य रामचंद्र जी शुक्ल के उपरोक्त शब्द ही 'रामाश्वमेध' मानव प्रबन्ध काव्य की उत्कृष्टता प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त हैं। जिस काव्य को शुक्ल जी सब प्रकार से गोस्वामी जी के रामचरित मानस का परिशिष्ट ग्रंथ होने के योग्य कहें उसकी उत्तमता या महानता के सम्बन्ध में फिर और कुछ कहने की आवश्यकता ही नहीं रह जाती। अतः हमारा अनुमान है कि मधुसूदनदास जी भी इटावा के महाकवि देव की ही भांति हिंदी के एक उच्चकोटि के कवि थे। उनकी कुछ चौपाइयों का नमूना निम्नलिखित है

सिय रघुपति पद कंज पुनीता प्रथमहि वंदन करा सप्रीता। मृदु मंजुल सुंदर सब भांती। ससि–कर–सरिस सुभग नख पाती। प्रणत कल्पतरु तर सब ओरा। दहन अज्ञ तम जन–चित चोरा। त्रिविध कलुष कुंजर घन घोरा जग प्रसिद्ध केहरि बर जोरा चिंता मणि पारस सुर धेनू। अधिक कोटि गुन अभिमत देनू। जन–मन–मानस रसिक मराला। सुमिरित भंजन विपति विशाला।।

+++

बद्री प्रसाद चतुर्वेदी

आप इटावा निवासी माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण थे।

आपकी अल्ल डुढवार थी। आप बड़े अच्छे कवि थे और भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रजी के समकालीन थे। कहा जाता है कि आपकी किसी कविता पर प्रसन्न हो कर भारतेन्दु बाबू ने 100/- इनाम दिये थे। आप रियासत हैदराबाद की सेवा में बहुत दिनों तक रहे और उच्च पदों पर कार्य किया। बद्री प्रसाद जी का लिखा- ज्ञान चालीसा बड़ा ही सुंदर ग्रंथ है जो बहुत दिन हुए प्रकाशित भी हो चुका है आपके लिखे कुछ गेयपद भी अत्यन्त सरस और सुंदर हैं।

जैहों गांव गोकुला पद बन्दिवे को

थोरौ सो समान जलपान को धराइ देउ। इनका यह पद तो बड़ा ही हृदयग्राही और अत्यधिक प्रचलित पद है। इनकी प्रकाशित रचनायें इनके दौहित्र एवं उत्तराधिकारी पं. प्यारे मोहन जी के पास सुरक्षित रहीं जो स्वयं भी अच्छे कवि सुलेखक और अनुभवी सम्पादक थे।

+++

चूड़ामणि जी

आप मुहल्ला छिपैटी इटावा के निवासी माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण थे। आप अत्यंत सहृदय उदार एवं भावुक व्यक्ति थे। समय-समय पर सुंदर रचनायें भी करते थे। आप संस्कृत एवं ब्रजभाषा साहित्य के परम भक्त थे।

+++

चुन्नीलाल जी

आप माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण थे। आपका जन्म चंबल नदी के तट पर स्थित हथकांत नामक ग्राम में हुआ था पर आपने अपना स्थायी निवास इटावा में ही बनाया था। आप ब्रजभाषा के कवि थे। आपकी लिखी कृष्णान्वेषण व मतंगराज कवितायें अधिक प्रसिद्ध हैं।

+++

गोविन्ददास जी

यह इटावा निवासी माथुर चतुर्वेदी शंकर पुरीय पांडे थे। पहले यह और इनके पूर्वज सब शैव थे। किंतु यही सर्व प्रथम श्री वैष्णव हुए थे। तब से अब तक इनके थे वंश में यही सम्प्रदाय प्रचलित है। यह बड़े विद्वान और आचार विचार में परम पुनीत थे। अपने साम्प्रदायिक रहस्य और सिद्धान्त ग्रंथों के यह पूर्ण ज्ञाता थे। इन्होंने अपने पौत्र श्रीमन्नारायण जी को साम्प्रदायिक ग्रंथों की शिक्षा दी थी। कहा जाता है कि इनके किसी पूर्वज की श्राद्ध तिथि आने पर वे बड़े असमंजस में पड़े थे। क्योंकि उस समय इटावे में श्री वैष्णवता आरम्भिक दशा में थी। अतः श्राद्धोपयोगी श्री वैष्णव ब्राह्मण उपलब्ध न हो सका तब उन्होंने अपने पौत्र को ब्राह्मण मान श्राद्ध भोजन कराया, फिर श्री वैष्णव सम्प्रदाय के प्रचार में लग गये। यह देखकर कि संस्कृत का प्रचार यहां कम है आपने अपने सम्प्रदाय के सिद्धांतों के सम्बन्ध में 'प्रपत्ति वैभव' नाम का ग्रंथ हिंदी दोहों में लिखा उस काल में हिंदी का महत्व कुछ भी नहीं था। अपने ग्रंथ को प्रमाणिक और महत्वपूर्ण सिद्ध करने के हेतु प्रत्येक दोहे पर संस्कृत में टीका की। इन्हीं के अनुरोध से सं. 1839 वि. में मधुसूदन दास जी ने 'रामाश्वमेध' की रचना की थी। जिसका उल्लेख पं. रामचंद्र शुक्ल ने अपने हिंदी साहित्य के इतिहास में किया है। सर रघुनाथ प्रसाद जी जैसे यशस्वी तथा श्रद्धेय स्वामी हरिप्रपन्नाचार्य जी चतुर्वेदी, द्वारका प्रसाद जी शर्मा तथा श्रीनारायण जी चतुर्वेदी जैसे विद्वान और साहित्यिक इन्हीं के वंशज हैं। गोविंद दास जी के पिता का नाम खड़गमणि था।

+++

नारायण दास जी

यह इटावा निवासी परम वैष्णव भगवतभक्त कवि थे। यह छिपैटी मुहल्ला के रहने वाले माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण थे। कहा जाता है कि इनका एकमात्र पुत्र अत्यधिक रोग प्रस्त होकर मरणासन्न हो गया सभी चिकित्सकों ने निराश होकर उसे पृथ्वी पर उतार लेने की अनुमति दी। कविवर नारायण दास जी ने अपने हाथों से अपने पंचवर्षीय इकलौते बेटे को उठाकर भगवान के सिंहासन के सन्मुख पृथ्वी पर रख दिया और उनकी हिचकियां बंध गईं कवि का काव्य कंठ भी फूट पड़ा और रोते और बिलखते हुए उनके मुख से ये शब्द निकल पड़े 'दास नरायन को सुत जातु सुराखु धराधर राखन हारे 'इन शब्दों का निकलना था कि कवि की अपील मंजूर हो गई और वह बालक तत्काल करवट बदल कर उठ बैठा और धीरे-धीरे स्वस्थ हो गया। कविता में सर्वशक्तिमान के हृदय को भी हिला देने की शक्ति है। नारायणदास की रचनायें अब अप्राप्य हो गई हैं। क्योंकि इनकी मृत्यु हुए अब 100 वर्ष से भी अधिक हो चुके हैं।

+++

कैसी दीवाली ?

जर्जर शरीर था रुग्ण केश ।
पर ज्ञानी लगता था गणवेश।।
काया काली पर मन विशाल।
ढो रहा एक मानव था काल।।
आशाओं का संचित पहाड़
उसके जीवन का यही भेद।

उस पर ही सब कुछ बार दिया।
अज्ञानी बन कर काट दिया।।
जीवन मे आश संजोया था।
संकल्प लिये कुछ खोया था।।
जा रहा चला पगडंडी पर।
दुखिया अनाथ कंकाल एक।।
दीपों की जलती लीकों में।
फुलझड़ी पटाखों की गति में।।
वैभव उसने फुंकते देखा।
सब कुछ उसने लुटते देखा।।
चौराहों पर थी भीड़ बड़ी।
सज रही मिठाई की दुकान।।
उस पर नोट बरसते थे।
जा रहे गेह लेकर समान।।
वह उसको देख रहा एक टक।
कैसी यह दीवाली महान।।
क्या लें कैसे लें और किससे लें
इसका उत्तर था पास नहीं।।
बढ़ गया अचानक कदम कहीं।
तो शामत थी दुत्कार वहीं।।
सेठों पर धन की कमी न थी।
वह दोनों हाथ फूंकते थे।।
उनका छोटा सा बच्चा भी।
धन फूंक रहा था जुआ खेल।।
पर उसको सूखी रोटी का
टुकड़ा न कोई डाल सका।।
अपने प्रमोदमय जीवन से।
कोई दो क्षण न निकाल सका।।
लक्ष्मी मिट्टी की पुजती थी।
जिस पर चढ़ता अपार भोग।।
कैसी यह दीवाली थी ?
जिसमें न मूल्य मानव का था।।

– **विपेंद्र नाथ चतुर्वेदी,** इटावा/गोरखपुर

✦✦✦

कविवर स्व. श्री नरेन्द्र नाथ चतुर्वेदी

प्रमुख पुस्तक जो प्रकाशित हुई हैं भारत के आदि काही दक्षिण के देवादीपक, हमारे रा बाबुरे, भारत के ऊमर सकती बाप की सीख, दुधासागर की रहूँ / भारत के जारी रहा। कविताई री गैल आपकी प्रसिद्ध प्रकाशित काका कृति है। शिक्षण के क्षेत्र में आपको सन 1970 में भारत के राष्ट्रपति महोदय द्वारा राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान से सम्मानित किया गया। आपको मृत्यु सन 1996 में हुई। आप राजभाषा और हस्य रस के सिहरू कवि

✦✦✦

मच्छर महिमा

फूँकि रन मेरि बीर जैसे ही पवान करें,
अतल बितल बो रसातल हलत है।
मसहरी छेदन को ऐसे भेदि जात मानो,
पारथ को पूत चक्रव्यूहहि दलत है।
कोऊ अनखात बिलखात वररात कोऊ,
कोऊ बलखाय दोऊ हाथन मलत है।
नींद दौरि दूरि जात अंग–अंग काँपि जात,
माछर ससैन जब काटन चलत है।।
एक बार चुभिके बिहाल करें बार–बार,
सूधो करि डारत उन्हें जो बड़े बंक है।
बरछो, कटार, तरबार, वषनख, तीर,
रावरे प्रताप सब होत सकलंक हैं।
जुर के जनक जीवगन के हनन हेतु,
इनकी कृपा सों बचे राव हैं न रंक हैं।
तेज से नुकीले, कसकीले भी चुटीले अति
उदू के अंक जैसे माछर के डंक हैं।

– **नरेन्द्र नाथ चतुर्वेदी**

✦✦✦

स्वागत और विदा

अपने मन से नहीं किन्तु मानस से आकर ।
एक हंस उड़ते–उड़ते आया सर वर पर।
लगा विचरने और कूँजने कलरव करने।
सर के पक्षी लगे उसे आत्मीय समझने ॥
किन्तु अभी थे नहीं बीत पाये बहु बासर।
अकस्मात वह हंस किसी की आज्ञा पाकर ।।
उड़ने लगाअन्यत्र वृहत्तर पर सर पर चलने।
पूर्व प्रेम बस लगे अनिच्छा से पर हिलने।
सर के पक्षी रहे उसे एक टक निहारते ।
विरह वेदना से पूरित निज उर सम्हालते ।
हंस जा रहा दूर लाँघता गिरि और धाटी ।
स्वागत और विदा है इस सर की परिपाटी।।

– **पं शिवदत्त चतुर्वेदी,** इटावा

✦✦✦

तुलसी

मानवता दानव–प्रहार से कराहती थी।
आसुरो प्रवृत्ति का धरा पै बोलबाला था।
निपट गंतता को अन्ति प्रकार से
प्राणहोन जन में पियुष घट डाला था।
जो जड़ता को जड़ काटने में लोन सदा।
राम मतवाला विश्व बन्धु मतवाला था ॥
संत, सिद्ध, साधक सफल कवि केवल
न तुलसी महान हिन्दु राष्ट्र रखवाला था।

– नरेन्द्र नाथ चतुर्वेदी

✦✦✦

तुलसी, आओ फिर तुम !

भारत माता पराधीन थी
पतनोन्मुख संस्कृति और धर्म,
पद दलित हुए भारतवासी
विस्मृत गौरव और सुकर्म।
तुलसी ने मानस को जन्म दिया
प्रकाश स्तम्भ बन मार्ग दिखाया,
भ्रमित देशवासियों के मन में
रामराज्य का सपन जगाया।
त्याग, तपस्या औ मर्यादा
भारत की यह रीत पुरानी
राज पाट औ वैभव झूठा
आदर्श राम की यही कहानी।
ऊँच–नीच नहीं कोई जग में
छूत–अछूत कहां से आए?
धर्म न माने जात–कुजात
ये अंधविश्वास कहां से पाए
कम क्रोध–मद–लोभ–मोह सब
पतन का मार्ग दिखाते है

– सतीश चतुर्वेदी, भोपाल

✦✦✦

भूदान-गीत

मलयपुरी बोली में
सुनी मुनी हे हिन्दुस्तान। बिनोबा मागे भूमी दान।
संत विनोबा पर उपकारी, रचलन्हे जग्य जगत हितकारी,
सफल करे के करो तयारी, धरती के दान।।
बिनोबा मागे भूमी दान ।
धरती है हम सबकी माता, धनी दुखी सबसे एक नाता,
सबकी रोजी की वह दाता,
सब ओकर सन्तान ॥ विनोबा मागे भूमो दान ।।
जोते कोड़े ओ उपजावे, से अनाज भरपेट न पावे,
घर बैठल कोइ मौज उड़ावे,
निसाफ के हान ।। बिनोबा मागे भूमी दान ।
धरती सौ सौ बीघा हमरा,
लाख करोड़ रुपय्या हमरा,
खटे परे जरको नय हमरा,
छोड़ो ई अभिमान ।
विनोबा मागे भूमी दान ।।
जे कमाय जे देह खटाय,
ओकर धरती है नय भाय,
खतम करी ऐसन अनियाय, कहत] संत केले तो मान । विनोबा मागे भूमो दान ।
सटि खटि मरे बेलवा, बैठल खाय तुरंग,
यहै पाप मुँह लगे लगमिया, एकरी करी धियान ।। बिनोबा मार्ग भूमी दान ॥
तो हूँ मेहनत करो कमायो,
घन घरती सब बॉटिके खाबो, मानो छोट बडा नयँ केकरो, भई सभ समान । बिनोबा मागे भूमी दान । (सन १९५३

– रमा बल्लभ चतुर्वेदी, मलयपुर

✦✦✦

श्रीमते रामानुजाय नमः

सगुरी निगुरी संवाद
अथ निगुरी सगुरी लिख्यते।
सगुरी निगुरी नारि कि दोनों झगरि परीं।।
पानी भरती कूप सों बातन बहुत अरीं।। [सगुरी]
बोली सगुरी नारि हमें भर लैने दैरी।।
परिहै तेरी छींट नसे हरिपूजन गगरी।।
नेक रहैं भरि लीजिये हरिहित होत अबार।।
इतनी सुनि के चौंकि परी वह निगुरी नारि गँवार दोनों झगरि परीं।।

निगुरी

बोली निगुरी नारि वैष्णवी कब हुई आई।
तूं तौ हमरी जाति कहा बोलति इतराई।।
पीछे तें भरि लीजियो सब दुनिया भरि जाइ।
जो तूं जन है राम की तौ नियारो कूप खुदाइ दोनों झगरि परीं।।

सगुरी

तुमतौ साकत लोक धर्म की कछू न जानों।।
चलौ आपनी रीति आन मतवे को मानों।।
तुम तौ साथी योनि के चौरासी की देह।।

काहै को टेढ़ी होति है वीरा तूं पहिले भरि लेह दोनों झगरि परीं।।

निगुरी

तूं बैठी मुड़ियन पास लाज मति सबै गमाई।।
लागी उनके सङ्ग दोष तेरो नहि आई।।
मैं बारे तैं बूढ़ी भई यह पाषंड देखो नाहि।।
अब तौ दुनियां विगरि गई है न्हाइ 2 रोटी खाइ दोनों झगरि परी।।

सगुरी

रहे सदा तू शिष्ठ नीच कर चून मड़ावे।।
बेलत रोटी फटे थूक लै जोर लगावे।।
तेरै नित ढांकर्हि बजै विन मुड़ियन के संग।।
फूटी बाहर हिये की बीर कहा सूझे हरि रंग।।
दोनों झगरि परीं।।

– **गोविंद दास जी चतुर्वेदी,** इटावा

✦✦✦

आचार्य वासुदेव कृष्ण चतुर्वेदी

हमारे समाज के उदभट विद्वान, साहित्य मनीषी आचार्य वासुदेव कृष्ण चतुर्वेदी डीलिट मथुरा के सम्मान में प्रख्यात संत प्रभु दत्त ब्रह्मचारी जी द्वारा लिखी काव्य पंक्तियां जो संतप्रवर का आशीष भी है। इनके पूज्य पिताश्री आचार्य श्रीवर जी भी देश के बड़े विद्वान थे।

प्रसिद्धसना पूज्य श्री प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी जी महाराज द्वारा शुभाशीर्वाद

श्रीवर शास्त्री की समिति सुंदरग्रन्थ अनन्य हैं। चतुरवेदवर डाकटर वासुदेवजी धन्य हैं 1 ग्रन्थ करयो ब्रज के परम भव्य भागवतसन्त वर तिनिको अभिनन्दन परम नयो वन्यो स्यैग्रन्थवर। परमपिता परमात्मा, के चरननिकू बन्दिप्रभु कहूँ परम फूलै फलै, आनँद होवै सरस विभुः ॥

संकीर्तन भवन वंशीवट
प्रभुदत्त ब्रह्मचारी
भाद्र शुक्लानवमी सं० २०४६

✦✦✦

भारत-वन्दना

काश्मीरो भालदेशो, मणिपुर मुकुटो, राष्ट्र–पंजाब बाहू
आसामो भू प्रदेशो, हिमगिरि विदितो यस्य चूडाकिरीटः ।
दिल्ली कर्णाटकाख्यौ नयन युगलकं मध्य देशोऽस्तिवक्षः
– गोआ नीकोवराख्यौ चरण सरसिजे केरलो यद्विहारः ॥
प्राणा यस्योत्तराख्यो सकल नरनुतो राम कृष्ण प्रसादात
सौराष्ट्रो नासिकावं तमिल मु हरियाणान्धकानीन्द्रियाणि ।
मंसूराङ्गौ सुकर्णावुभय कटितटौ गुर्जरश्चापि बङ्गौ
इत्यं राज्याङ्ग रूपं जयति हि सततम्‍ भारतं राष्ट्रमग्र्यम ॥

भारत राष्ट्र गीतिः
कलित काव्य कला कुल कीर्तनम
मदनमोहन मानस–पूजनम ।
वैभव सौरभ चन्दिरं भुवन
जयतु भारत नामक मन्दिरम॥
विविध दर्शन वाद सुपूरितं
भगवदीय सुगीत प्रसारकम।
मुरलिका स्वर शोभित कन्दरं
जयतु भारत नामक मन्दिरम।।
समर शूरक थोत्सव सदध्वजं
पशुप राजित गोधन सुंदरम।।
कृषि महोत्सव मोहन तत्परं
जयतु भारत नामक मन्दिरम।।
सकल हिंदु जनैरभिनन्दितं
विविधवाद परैरपि बन्दितम।।
हरिहराचर्नलग्न सदिन्दिरम
जयतु भारत नामक मन्दिरम॥
दलित दीन जनोद्धति शूरकं
बहु विपन्न मनोरथ पूरकम।।
कलित कीर्ति कलाधरकं वरं
जयतु भारत नामक मन्दिरम।।
सफल पादप राशि सुशोभितं
प्रचुर नूतन शस्य विराजितम।।
फलभराधिक शोभित चत्वरं
जयतु भारत नामक मन्दिरम।।
भवति यत्रा मधोः सरितादिकं
हिम निदाघ वसन्त दिनादिकम।।
विविध यौवन भाव विभा वरं
जयतु भारत नामक मन्दिरम।।
लसति दोलिकयाऽत्र च श्रावणों
हसति होलिकया बहु फाल्गुनः ।।
अहह दिव्य महोत्सव शेखरं
जयतु भारत नामक मन्दिरम।।

– **डॉ० वासुदेवकृष्ण चतुर्वेदी, मथुरा**

✦✦✦

स्वर्णिम वर्तमान

गजल

करें इबादत जो मरहम की अपने ज़ख़्म छुपाकर लोग,
भला- बुरा सब भूल गए हैं गर्दिश में घबराकर लोग।
शोर बहुत है सन्नाटे में मासूमों की चीख़ों का,
नया ठिकाना ढूँढ़ रहे हैं आसमान में जाकर लोग।
टहल रही है नींद जगाकर सपनों के दालानों में ,
ढूंढ रहे हैं रेत में दरिया अपने को बहलाकर लोग।
सरल नहीं है पढ़ना चेहरे इन मुश्किल किरदारों के ,
आए हैं अफ़सोस जताने घर में आग लगाकर लोग।
मिली हमेशा घास की रोटी जीवन में ख़ुद्दारों को ,
जीत रहे हैं हारी बाज़ी झूठे दाँव लगाकर लोग।
जो रोए हैं खून के आंसू चेहरे वो गुमनाम रहे,
सब नज़रों में चढ़ जाते हैं नकली अश्क बहाकर लोग।

– **पंडित सुरेश नीरव,** गाजियाबाद

✦✦✦

अश्क आंखों में नाच जाते हैं
प्यासे पानी को साथ लाते हैं।
लोग कमजोरियां पकड़ने को
बनके हमदर्द पास आते हैं।
लोग भोले –भले हों कितने भी
बात मतलब की जान जाते हैं।
लाख नखरे हैं उनकी आदत में
पर मनाओ तो मान जाते हैं।
लोग होते हैं छोटे दिल के जो
बेवजह हमसे खार खाते हैं।
वो भी डूबे हैं उनकी आंखों में
तैर सागर जो पार जाते हैं।
घर जलाए हैं कितने बारिश ने
आग बादल भी साथ लाते हैं।
होगा जिनका जुनून पर्वत –सा
ज़लज़ले उनको आजमाते हैं।
धड़कनों ने लिखे थे जो नगमें
हम चलो उनको आज गाते हैं।
जब बुलाते हैं वो इशारों से
हम भी नीरव हैं भाव खाते हैं।

– **पंडित सुरेश नीरव,** ग़ाज़ियाबाद

✦✦✦

मत चिरागों को हवा दो बस्तियाँ जल जायेंगी
ये हवन वो है कि जिसमें उँगलियां जल जायेंगी
मानता हूँ आग पानी में लगा सकते हैं आप
पर मगरमच्छों के संग में मछलियाँ जल जायेंगी
रात भर सोया नहीं गुलशन यही बस सोचकर
वो जला तो साथ उसके तितलियाँ जल जायेगीं
जानता हूँ बाद मरने के मुझे फूँकेंगे लोग
मैं मगर ज़िंदा रहूँगा लकड़ियाँ जल जायेंगी
उसके बस्ते में रखी जब मैंने मज़हब की किताब
वो ये बोला अब्बा मेरी कापियाँ जल जायेंगी
आग बाबर की लगाओ या लगाओ राम की
लग गई तो आयतें चौपाइयाँ जल जायेंगी

–**सूफी सुरेंद्र चतुर्वेदी,** अजमेर/मुम्बई

✦✦✦

ये नहीं कि नाव की ही ज़िन्दगी खतरे में है
दौर है ऐसा कि अब पूरी नदी खतरे में है
बच गए मंज़र सुहाने फर्क क्या पड़ जाएगा
जबकि यारों आँख की ही रोशनी खतरे में है
अब तो समझो कौरवों की चाल नादां पाँडवों
होश में आओ तुम्हारी द्रोपदी खतरे में है
अपने बच्चों को दिखाओगे कहाँ अगली सदी
जी रहे हो जिसमें तुम वो ही सदी खतरे में है
मंदिरों और मस्जिदों को घर के भीतर लो बना
वरना खतरे में अज़ाने आरती खतरे में है
ना तो नानक ना ही ईसा, राम ना रहमान ही
पूजता है जो इन्हें वो आदमी ख़तरे में है

– **सूफी सुरेंद्र चतुर्वेदी,** अजमेर/मुंबई

✦✦✦

पर्यावरण

पर्यावरण प्रदूषण पर एक पैरौडी
हाय इन्सां बड़े दग़ाबाज रे।
जो हरे पेड़ काट रहे आज रे।
पेड़ों के रोपण में नानी सी मरती है
धरती का दुश्मन है ये।

कचरा फैलाता है, उस पर इतराता है,
डंडे का भाजन है ये।
करे कुदरत से हरदम ही छेड़छाड़ रे।
अपनी क़िस्मत के पन्ने खुद रहा फाड़ रे।
रोयेगा जब गिरे सिर पे गाज रे।
दगाबाज रे.....।
नदियों को डाला है बाँधों के पिंजरों में,
धाराएँ सूखतीं रहीं।
पानी की किल्लत से,वन उपवन सूखे हैं,
हरियाली दीखती नहीं।
बाँध बिजली तो दे सकते ज़िन्दगी नहीं।
साथ कुदरत के क्या ये दरिंदगी नहीं।
पागलों जैसे दिखते अंदाज़ रे।
दगाबाज रे ....।
चिमनियाँ जो जलती हैं,धुआँ वो उगलती हैं,
ज़हरीली हवा हो गई।
सड़क की कतारों में,ऊँची मीनारों में,
धरती की गंध खो गई।
काट डालीं सब लतापता और झाड़ियाँ,
शोर करती बस भाग रहीं यहाँ गाड़ियाँ ,
पूँजियों के सब पहन रहे ताज रे।
दगाबाज रे ....।
कितने हतभागी हम,
बागी है हर मौसम,
कुदरत के खेल निराले।
उन्नति के अभिलाषी, पूरे सत्यानाशी,
संकट खुद हमने पाले।
आने वाले खतरे को पहचान लीजिये,
अब प्रकृति को बचाने की ठान लीजिये,
आइये आज से हो आगाज़ रे।
दगाबाज रे ....।

– **वरुण चतुर्वेदी,** जयपुर

+++

सुई

धागा सुई में डाला
जैसे हर बार डालती होगी फुर्ती से आर पार
पर इस बार अनुभव था बिल्कुल अलग
सुई अलग थी धागा अलग.
हाथ धीरे से कांपा
धीरे से कांपा दिल कितना कुछ तो बचा है
दुनिया में अभी तो ठीक से

अभी कितना कुछ तो रह गया है
अपने आस पास पढ़ा अनपढ़ा.
देखा–अनदेखा.
किया भी नहीं प्यार
कहाँ बन पाया है ठीकठीक
अपना सारा संसार,
पर सच ये था
कि सुई चुभी थी अभी अभी
अंगूठे के पोर में रक्त का एक बिन्दु
अद्भुत संतुलन के साथ आंखों की कोर में
और उस पर टिका था
उसी तरह जैसे
टिका था आँसू गिरा कि अब गिरा.

– **संतोष चौबे,** भोपाल

+++

छोड़ो यार

पीठ पर प्यार भरी थपकी था
छोड़ो यार.
जीवन की अंतहीन
लेकिन निरर्थक लड़ाईयों में दार्शनिक हस्तक्षेप था
छोड़ो यार.
अंधेरे रास्तों पर भटकने के बाद अचानक आये
रोशनी के चमकते बिंदु की तरह था।
छोड़ो यार..
दोस्ती की सीमा पर खड़ा
परिधि के बाहर की अतल गहराईयों से
सावधान करता चेतावनी संकेत था
छोड़ो यार...
कभी जीवन में
वापस लौटने का आव्हान था
और कभी व्यर्थ के संघर्ष से बाहर
आने का रास्ता
छोड़ो यार....
अब और क्या कहें छोड़ो यार के बारे में
छोड़ो यार....

– **संतोष चौबे,** भोपाल

+++

सत्ता के गलियारों में

संसद तारम–तार पडी है,
सत्ता के गलियारों में।
राजनीति बीमार पडी है,

सत्ता के गलियारों में।
स्वाभिमान जर्जर खण्डित है,
सत्ता के गलियारों में।
अपराधी महिमा मण्डित है,
सत्ता के गलियारों में।
चरण चूमने का रिवाज है,
सत्ता के गलियारों में।
गद्दारों के शीश ताज है,
सत्ता के गलियारों में।
तार तार ईमान पड़ा है,
सत्ता के गलियारों में।
नेता बेईमान खड़ा है,
सत्ता के गलियारों में।
भू-लुण्ठित इतिहास पड़ा है,
सत्ता के गलियारों में।
फिर भी देश महान खड़ा है,
सत्ता के गलियारों में।
चाँदी की टकसाल देखलो,
सत्ता के गलियारों में।
मंत्री बने दलाल देख लो,
सत्ता के गलियारों में।
पांच साल का शंख बज गया,
सत्ता के गलियारों में।
बहरुपियों का साज सज गया,
सत्ता के गलियारों में।
कउऐ लगे पुराण बाँचने,
सत्ता के गलियारों में।
लोमड़ियाँभी लगी नाचने,
सत्ता के गलियारों में।
बड़े बड़े विष वृक्ष उग गये,
सत्ता के गलियारों में।
नंगी राजनीति बैठी है,
सत्ता के गलियारों में।
एक नहीं सौ बार कहूँगा,
सत्ता के गलियारों में।
उल्लू बैठे डाल डाल पर
सत्ता के गलियारों में।
देख रहा हूँ हुआ अंधेरा,
सत्ता के गलियारों में।
जला मशालें करो रौशनी,
सत्ता के गलियारों में।

– **अरूण चतुर्वेदी,** जयपुर

✦✦✦

बच्चों के 'दादा' जी

बच्चों के 'दादा' जी
प्यारे,प्यारे दादा जी,सबसे न्यारे दादा जी।
वाह रे ,वाह रे दादा जी।
दादा जी ने खुशियाँ दी हैं ,
दादा जी देते हैं ज्ञान।
प्रेम बाँटते हैं बच्चों में,
जिनमें उनके बसते प्राण।
पोतों की राहों के काँटे,
स्वयं बुहारें दादा जी।
प्यारे,प्यारे दादा जी।
दादा जी का यही इरादा,
सारे बच्चे मुस्काऐं।
ज्ञानवान,गुणवान बनें सब,
जीवन में बढते जायें।
सौ बरसों तक जियें खुशी से,
साथ हमारे दादा जी।
प्यारे,प्यारे दादा जी ----
हम कितने ही बडे बनें पर,
याद रहेंगे दादा जी।
जब,जब भी मन भारी होगा,
साथ रहेंगे दादा जी।
हम तो सभी सुदामा हैं पर,
कृष्ण हमारे दादा जी।
प्यारे,प्यारे दादा जी।
सबसे न्यारे दादा जी।
वाह रे, वाह रे दादा जी।

✦✦✦

नोटबंदी

पुराना पांच सौ का नोट बोला एक हजार के नोट से, सुन वे हजार के !

न मंदिर के रहे न मजार के।

भीड़ में घुस कर और चिल्ला मोदी मोदी मोदी, आ गया तो उसने सबसे पहले तेरी ही कब्र खोदी।

भैय्ये, जवानी भर देता था बूढ़े में।
जा अब डूब मर गंगा में
या जल के मर कूड़े में।
देश को खूब उलझाया तूने नए और पुराने में।
अबे कोई कसर नहीं रक्खी अपने

साथ मुझे भी बिना बात मरवाने में।
वह तो मैं था ज़ो अपनी इज्जत बचा गया ,
और किसी तरह से भेष बदलकर आ गया।
अब बनाकर होंठों का गोला,
एक हजार का नोट बोला!
अक्ल के अद्धे , रहे गधे के गधे
तू क्या सोचता है मैं मर गया हूं
अरे मैं मरा नहीं हूं
मैंने सिर्फ रंग बदला है
और लाल से गुलाबी होकर
दुगनी ताकत से
सरकार के समर्थन में खड़ा हो गया हूं।।
रंग बदलना तो पॉलिटिक्स का चरित्र है ,
इसलिए रंग बदलना मेरी मजबूरी था।
काले धन और आतंकवाद से
लड़ने के लिए
ऐसा करना बहुत जरूरी था।

– **पं. हरेश चतुर्वेदी,** आगरा

✦✦✦

पूछे अगर कोई ये किसका कलाम है।
रहता कहाँ है वो औ क्या उसका नाम है॥
कहना कि एक शख्स अकेला सा लग रहा।
अपने ख्याल में ही खोया सा लग रहा ॥
जो कुछ लिखा है उसमें अमानत किसी की है।
आँखों में हसरतें हैं चाहत किसी की है।
शोहरत की है तमन्ना न शहादत की चाह है।
दुनियां के कायदों से अलग उसकी राह है।
कल तक तो वो यहीं था जाने कहाँ गया।
हर कोई पूँछता है वो जहाँ–जहाँ गया ॥
डूबा किसी के प्यार में उसका कलाम है।
सादा सा आदमी है 'नाज' उसका नाम है ॥

– **श्री निरुपम चतुर्वेदी,** नाज़ कमतरी

✦✦✦

गीत

प्यार अगर थामता न पथ में, उँगली इस बीमार उमर की,
हर पीड़ा वेश्या बन जाती, हर आँसू आवारा होता।
निरबंशी रहता उजियाला, गोद न भरती किसी किरन की,
और जिन्दगी लगती, जैसे डोली कोई बिना दुल्हन की।
दुःख से हर बस्ती कराहती, लपटों में हर फूल झुलसता,
करुणा ने जाकर, नफरत का आँगन गर न बुहारा होता।
जीवन क्या है, एक बात जो सिर्फ इतनी समझ में आये,
कहे इसे वह भी पछताये, सुने इस वह भी पछताये।
मगर यही अनबूझ पहेली, शिशु सी सरल सहज बन जा
अगर तर्क को छोड़ भावना के संग किया गुजारा होता
जाने कैसा अजब शहर, यह कैसा अजब मुसाफिर खाना,
भीतर से लगता पहचाना, बाहर से दिखता अनजाना।
जब भी यहाँ ठहरने आती, एक प्रश्न उठता है मन में,
कैसा होता विश्व, कहीं यदि कोई नहीं किवाड़ा होता।
हर घर आँगन रंगमंच है, और हर एक साँस कठपुतल
प्यार सिर्फ वह डोर, कि जिस पर नाचे बादल नाचे बि
तुम चाहे विश्वास न मानो, लेकिन मैं तो यही कहूँगी,
प्यार न होता धरती पर, तो सारा जग बंजारा होता।

– **श्रीमती उमा चतुर्वेदी,** मलयपुर

✦✦✦

देवी माता की विनती

तेरे दरस की प्यासी मैया
तेरे द्वार हूँ आई
तेरी दया कृपा मैं माँगू
और न कछु मन भाई
नरियल, चुनरी, पान, फूल औ
लौंग हार चुनि लाई
हाथ के कंगना, पैर के पायल
बिछुवा हूँ लै आई
देहु दान में और न मांगो
प्रीति तिहारी पाई
यह कामना यहै चाहना
विनय यहै मन भाई
देहु दया करि भक्ति आपुनी
यह ही है सुखदायी
तेरे दरस की प्यासी मैया
तेरे द्वार हूँ आई

–**श्रीमती रंजना चतुर्वेदी,** मलयपुर

✦✦✦

आई थीं तुम रात स्नेह के दीप लिए सपनों में
आईं भी तो ऐसे जैसे कोई छाया हो
आईं भी तो ऐसे जैसे कोई माया हो
हाथ बढ़ा कर मैंने चाहा
भरो मुझे बाँहों में
मैंने चाहा मुझे चाह लो
तुम अपनी चाहों में
पर यह क्या–बस सपना ही था
टूट गया क्षण भर में

आईं भी तो ऐसे जैसे कोई छाया हो
आईं भी तो ऐसे जैसे कोई माया हो
वे ही लाल चूड़ियाँ, माथे पर वह कुंकुम टीका
पाकर तुमको आज लगा मुझको सारा जग
फीका क्यों कि आ गईं थीं तुम वैसी
जैसे सदा सदा थीं
मैंने चाहा अब न छोड़ पाओ
तुम साथ कभी भी
किन्तु हुआ क्या? धुँधला धुँधला
होता गया सभी कुछ डूब गया जैसे पानी में
एक बुलबुला उठकर
आईं भी तो ऐसे जैसे कोई छाया हो
आईं भी तो ऐसे जैसे कोई माया हो
आओ, मेरे पास, दूर क्यों
इतनी दूर रहोगी
आओ लोरी गाओ, आँचल फैला
प्यार करोगी
आओ ना, आ जाओ अब तो
बहुत देर झुठलाया
तुमको फिर से पाकर
जैसे मैंने सब कुछ पाया
लेकिन तुमने आँख मिचौनी का
क्या खेल रचा है।
आईं भी तो ऐसे जैसे कोई छाया हो
आईं भी तो ऐसे जैसे कोई माया हो
आईं थीं तुम रात स्नेह के दीप
लिए सपनों में

–**डॉ उपमा चतुर्वेदी,** लखनऊ

✦✦✦

सम्बन्ध

काली घटाओं की गरज,
तुम्हारी ख़ामोश यादों की खटक।
कौंधती बिजलियों की कड़क,
दिल को बींधती विरह की तीखी कसक।
तूफ़ान से पहले छाई मायूस शांति,
और अतृप्त मन में भावों का जंजाल।
मंद–मंद बहती ठंडी, नम,
पवन और रगों में उमड़ता घुमड़ता भूचाल।
आकाश से अमृत की बरसात,
तुम्हारी यादों से उत्पन्न तड़पन।
धरती से निकलती सौंधी महक,
और तुम्हारे गर्म स्पर्श की तपन।
मन में एक नई कोपल का प्रस्फुटन,
जीवन की नई आशा का सृजन।
आकाश और धरती, मैं और तुम,
हमारा सम्बन्ध, सम्बन्ध का बंधन।
से सम्बन्ध क्या है? क्यों है यह बंधन ?
यही है शाश्वत सत्य और यही है अनुपम जीवन।।

– **श्री अविजित चतुर्वेदी,** होलीपुरा

✦✦✦

उजास

कभी कभी रंग आसमान का
ढलती हुई शाम में लाल हो जाता है
अजब तरीके से
बादल भी छाए हों
तो भी वह लाली उजास बन
छितरायी दिखती है सब तरफ
बादलों से आतीं छनकर किरणें
वायवी, स्वप्न–सा कुछ कुछ
बुनती जाती छूती जाती
उस छुअन का स्पर्श हल्का–सा भी
भिगो जाता भीतर तक आत्मा को
कर जाता जीवंत
हर आत्मा के आकाश में
रहता है कहीं–न–कहीं, कभी न कभी
एक ढलती शाम
अपना भारीपन ढाँपने की चेष्टा,
समस्त चेतना पर
छा जाता उद्वेलन
डूबते– डूबते भी विद्रोह कर उठता सूरज
बंद किवाड़ों की दरारों के भीतर
पहुँचता प्रत्येक कंपन
अँधेरे कोनों तक रास्ता बनाती
रोशनी की एक किरण
फट पड़ते बादल
खिल उठती शाम
अस्तगामी सूर्य में भी बाकी है अभी
ओज, लालसा, बहुत है लाली
अब भी दे सकता है
देता है सबको
अपनी उजास!

– **डॉ सुजाता चतुर्वेदी,** लखनऊ

✦✦✦

पाहुना

पाहुना प्रिय का संदेसा
साँझ मेरे द्वार लाया
स्वप्न में वैभव लुटाया
पथ प्रसूनों से सजाया
अश्रु भीगे दृग सरोरुह,
झाँकते बीते क्षणों में
बीनते बिसरा सभी कुछ
रेत के बिखरे कणों में
हृदय-सागर तीर छिटकी
सीपियाँ कर में उठाए
मृदु उनींदे पलक
मंथर वात थपकी दे सुलाए
आज बीता वह सभी कुछ
ज्वार ले मन में समाया
पाहुना प्रिय का संदेसा
साँझ मेरे द्वार लाया
क्यों अधर कंपित हुए हैं,
आज मैंने भेद पाया
अनकहा हर मौन
अधरों पर मुखर हो आज आय
हर कुहुकती कोकिला ने
आज प्रिय का गीत गाया
आज बन कर के मयूरी
मेघ का स्वागत रचाया
पूछ लूँ तुझसे, ए, भँवरे !
आज क्या मधुमास आया
माँग लूँ क्या देव तुमसे
आज मैंने स्वर्ग पाया
पाहुना प्रिय का संदेसा
साँझ मेरे द्वार लाया ॥

– **श्री उमंग चतुर्वेदी,** कमतरी

✦✦✦

गीत

होली पर
मैया कान्हा पीछे दौरी
ऐसौ अनुपम दृश्य दिख़ौ री।
मैया को खूब सतावै
इत उत नैना मटकावै
रंग मुट्ठी में भर भर कै
मैया पै खूब उड़ावै
ऐसौ प्यार कहाँ बिखरौ री
मैया कान्हा पीछे दौरी।
जशुदा आनन्द उठावै,
सुत को रंग तें नहरावै।
लखि पशु पक्षी मतिहारी,
कह बलिहारी बलिहारी।
कान्हा हँस के करै चिरौरी,
मैया कान्हा पीछे दौरी।
छोड़ो मातु जानि देओ मोरी।
मैया कान्हा पीछे दौरी।
लखि कान्हा की छवि न्यारी
हरषित ब्रह्मा त्रिपुरारी
सब देव कर रहे वन्दन
आशीष देत यदुनंदन
ऐसो अद्भुत फाग मचौ री।
मैया कान्हा पीछे दौरी
देखे ब्रज की पौरी पौरी
मैया कान्हा ....

– **निरुपमा चतुर्वेदी,** जयपुर

✦✦✦

जीवन नदिया धार सदा कलकल कर बहती है।
मिलना और बिछुड़ना निश्चित हर पल कहती है।
घिरतीं हैं घनघोर घटाएँ, उमड़ घुमड़ प्रतिदिन
आँधी और तूफान थपेड़े रह रह सहती है।
रिश्ते-नाते खोते-पाते मित्र और परिजन
कभी कोई घटना अनबूझ पहेली रहती है।
माँ ही जन्म दात्री,धात्री माँ का प्यार प्रबल
कभी न थकती बाँह,रसोई हरदम दहती है।
बाधाएं, विपदाऐं ,रोड़े राह करें मुश्किल,
उम्र सदा चढ़ती जाती पर संग संग ढहती है।

– **डॉ अनुपमा चतुर्वेदी,** शिकोहाबाद।

✦✦✦

सैल्फ-हैल्प कौ नाम सैल्फी
सैल्फ-हैल्प कौ नाम सैल्फी,
जब चाही लो खींच।
मोबाइल ऊँचौ कर म्हौं पै,
लेउ गलउआ भींच।
गए जमाने सीधे है जाऔ,
और थोड़ो मुसकाऔ।
पास खड़ी है जाउ भाभी जी,
नैंकऊ मत सरमाऔ।

नायँ काऊ की मदद जरूरी,
और न कोऊ खुसामद।
घर और बाहर सदा बरोबर,
है सैल्फी की आमद।
हर्ष उत्सव की बातहि का जी,
खिंच रई छत चौखट पै।
नायँ सबर अब खिंचे सैल्फी,
मंडप और मरघट पै।
मेला, ब्याऔ, मरियत, दावत,
बिना सैल्फी सूनी।
छोरा पीछें दीखे जामैं, छोरी आगैं दूनी।
अटल सैल्फी के आए ते,
एक कमी अब खल रई।
स्पाउट ते मुखड़न की,
सोभा तौ खूब बिगड़ रई।

– अटल राम चतुर्वेदी

✦✦✦

पिता

वो बरगद,नीम,पीपल है।
जिसकी नम छॉव बहुत शीतल है।
जो बरखा,धूप दहता,सहता है।
हमेशा एक सा ही रहता है।
अथाह प्यार का समंदर है,
जो अंदर धीरे-धीरे बहता है।
वक्त की डोर में बँधा खुद को
उम्र भर रेत संग ढहता है।
पढ़ाता जिंदगी की शाला में,
ककहरा गर्मी, सर्दी,पाला में,
ओढ़ा के पालकों को जरदोजी
स्वयं,रहकर फटी दुशाला में ,
पिता अतीत,वर्तमान है,वही कल है।
जिंदगी का बड़ा सम्मान,वही श्रीफल है।
रिश्तों के मेले में अनेकों हैं ,
दोस्तों से भरा अवनीतल है।
इक फरिश्ता, जो खरा सोना है।
बाकी सब लोहा,तॉबा,पीतल है।

– अनुपमा चतुर्वेदी

✦✦✦

एक कोना राग का

बस एक कोना छोड़ दो तुम राग का मेरे लिए
प्रकृति के उल्लास-सा बासंतिकी मधुमास-सा बस एक

राग-विहाग का तुम छोड़ दो मेरे लिए
छंद मधुमय भाव अक्षय गीत तुम लिखती रहो
बस एक अंतरा जोड़ दो सहभाग का मेरे लिए
गीतिमय हों सुर तुम्हारे बजें मन के तार सारे
गुनगुना दो गीत ऐसा फाग का मेरे लिए
बस एक कोना छोड़ दो तुम राग का मेरे लिए।

– प्रोफेसर मंजुला चतुर्वेदी, वाराणसी

✦✦✦

हम-तुम

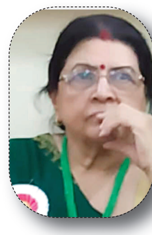

हम तुम
एक है,एक रहेंगे
समेट लो मेरा वजूद
सागर सा उफन रहा
बटोर लो वो दर्द
जो मुझमें है प्रिय
तुम साथ रहो
मुझमें यूं समाओं
विरक्त ना हो कभी
मेरी खामोशियों को
मेरे लिखे शब्दों को
कभी तो पढों प्रिय
क्यों नज़र फेर लेतीं
कुछ तो समझो प्रिय
हर दिन इंतजार सा है
मुझे समझोगी तुम -
काश। मुझे समझो
तुम भेजो मुझे
यूं कड़वे कटु बोल
मैं वाणी मधुर बनाऊं
तुम भेजो जलते अंगारे
'मैं' शीतल कर लूंगा
सच कहता हूं -
तुम मेरी गीत फसल हो
गुनगुनाऊं तुझे
तू मेरा अहसास
तू मेरा विश्वास
'तूही' मेरी स्वास
प्रिय बस तुम
मेरी हो मेरी हो
मेरी ही हो मेरी......

– श्रीमती रति दिनेश चौबे, नागपुर

+++

विपत्ति

आज रो रहा धरती का कोना, कोना,
सीना फट रहा हाय! कैसा कोरोना?
पर्वत हुऐ धूल, धूसरित,
उजड़ गये हरियाली पूरित.
श्रोत, थे जो बहती जलधार,
झरने,सरिता,बर्फ़,सिंगार.
पत्थर लुढ़के, पकड़ ढ़ीली
अति वर्षा या मट्टी सूखी.
नदियां खो बैठी निर्मलता,
दूषित, प्रदूषित, दुर्गंधित.
खुले मैदान, मशीनी गंध,
भूल गयी मोहक सौंधापन
ऊंची अट्टालिका, गिट्टी रेत
बड़े छोटे,रंग,बिरंगे,अनेक,
फैला सुखद माया संसार,
मोटर, गाड़ी, अहं विस्तार.
आज सृष्टि कर्ता का कोप,
उठ गया तराजू, कर्म लेख.
चीत्कार और क्रंदन,
घर में बंद, निर्धन ,लंघन.
पीड़ा, व्यथा चरम पर आई,
रूठी लक्ष्मी,कृत्रिमता रंग लाई.
भयभीत मानव,सत्य याद आया,
दया, धर्म, अब हाथ बढ़ाया.
प्रार्थना को उठ गये दोषी कर,
जन, धन, रक्षक हे करुणाकर.
क्षमा करो त्रुटियाँ,
बिसारो मंत्रणा.
पालन कर्ता हे अभयंकर,
कृपा दृष्टि, शांत,विपत्ति उभार,
मंजुल, मंगल, कर–पवित्र विचार

– **मंजुला चतुर्वेदी,** मुंबई

+++

गीत : चतुर्वेदी गान
तर्ज : रमैया वस्तावैया
लेखक : योगेश चतुर्वेदी बल्लू
विडियो : प्रीतम फिल्मस यूट्यूब चैनल.
स्थाई : जय जय जमना मईया खुश रहै चौबे भईया..
जय जय जमना मईया खुश रहै चौबे भईया..

तुमने इन्हें खूब दिया,
तुमने इन्हें खूब दिया.
जय जय जमना मईया खुश रहै चौबे भईया..
जय जय जमना मईया, जय जय जमना मईया..
अन्तरा : बम्बई गए ये दुबई गए यौ ही देश विदेश ये जाते रहे..
यौ ही देश–विदेश ये जाते रहे.
गांऔ करें खूब देनी करें यौ ही खाते और खबाते रहे..
यौ ही खाते और खबाते रहे.
सुख ना जाबै कभी, दुख ना आवे कभी..
सुख ना जाबै कभी, दुख ना आवे कभी..
खुश रहे चौबे भईया,खुश रहे चौबे भईया..
जय जय जमुना मईया, जय जय जमुना मईया..
अन्तरा : सीए करें एमबीए करें खूब ऊची पढ़ाई ये पढते रहे..
खूब ऊची पढ़ाई ये पढते रहे.
विनती यही सब मिलकैं करें सारे चौबे अगाड़ी बढ़ते रहें..
सारे चौबे अगाड़ी बढ़ते रहें..
सारे चौबे अगाड़ी बढ़ते रहें.
जग में नाम करें ऊचे ऊचे काम करें..
जग में नाम करें ऊचे ऊचे काम करें..
खुश रहे चौबे भईया, खुश रहे चौबे भईया..
जय जय जमुना मईया, जय जय जमुना मईया..
अन्तरा : डॉक्टर राईटर इंजीनियर चौबे तो नेता अभिनेता बने..
चौबे तो नेता अभिनेता...
हर क्षेत्र में नाम चौबे ही हो चौबे तो विश्व विजेता बने..
चौबे तो विश्व विजेता बने.
दुश्मन कितने भी जाना चौबे तो फूले फले..
दुश्मन कितने भी जाना चौबे तो फूले फले..
खुश रहे चौबे भईया,खुश रहे चौबे भईया
जय जय जमुना मईया,जय जय जमुना मईया..
अन्तरा : गोपालबालम बिहारी तेरी किरपा मईया यौंही बनती रहे..
तेरी किरपा मईया यौंही बनती रहे..
दंड पेलैं खूब माल डारे रोज काजू बादाम में छनती रहे..
रोज काजू बदाम में छनती रहे.
पुरखन को नाम करैं, ईष्ट कौ ध्यान धरैं,
पुरखन को नाम करैं,ईष्ट कौ ध्यान धरैं..
खुश रहे चौबे भईया,खुश रहे चौबे भईया..
जय जय जमुना मईया ,जय जय जमुना मईया..
जय जय जमुना मईया ,जय जय जमुना मईया...

– **योगेश चतुर्वेदी बल्लू,** मुम्बई

+++

जीवन सार

अभी तक सुबह थी, दोपहर हो चली,
जीवन की अवधि कुछ कम हो चली।
बीते समय के कुछ पल हंसी है,
पर कुछ पलों में कटुता भरी है।
कटुता भरे पल होते हैं बोझिल,
उन्हें भूल पाना बड़ा ही है मुश्किल।
पर हो अगर मन उमंगो भरा,
भूले समय हम कटुता भरा।
होता सुहाना जीवन सफर है,
कर देती संध्या को वह सुबह है।

–**श्रीमती गरिमा चतुर्वेदी,** आगरा

+++

कलम

कलम तलवार होती है।
बुद्धि उसकी धार होती है।
कलम जब भी चलती है
विचारो से प्रेरित होती है।
गरीब की गरीबी
अमीर की अमीरी
दुख दर्दो की झलक
खुद गर्जो की गरज
शोषित के उत्पीड़न का
आईना दिखाती कलम।
अज्ञानी में ज्ञान समाती
ज्ञानी को सम्मान दिलाती।
अधर्मी को धर्म सिखाती
पंडित को विद्वान बनाती।
कुरीतियों को उजागर कर
समाज को दर्पण दिखा
उन्नति का मार्ग दिखाती कलम।
विद्रोह करती है जब भी
विश्व को हिलाती है तेज कलम।
प्रेम भाव में जब भी आती
श्रंगार रस बरसाती है कलम।
हर रस से सरोबार हो कर
अपने रुप दिखलाती है कलम।
छोटी सी हो कर भी
बड़े बड़े निर्णय लिखती कलम।
एक पल में जग को हँसाती
दूसरे ही पल में रूलाती कलम।
खुद एक जगह रूक कर
जग में विचार प्रवाह बहाती कलम।
हाथों में जब भी आती है
माँ शारदा की सवारी बनती कलम।

– **अजय चौबे,** चंद्रपुर/भोपाल

+++

स्नेहिल ज्योति जलाओ

जग के मधुमय आंगन में, फिर दीपावली सजाओ।
अगर देश का बचपन कोमल , रोटी हित ललचायेगा।
अगर देश का योवन श्रम से, पल भर भी कतरायेगा।
अगर अमीरी वैभव के छज्जे से, नित्य मुस्काएगी।
अगर गरीबी कुटिया में नित, नयनन नीर बहाएगी।
तो कैसी खुशहाली भइया ,मत त्यौहार मनाओ।
मिटा द्वेश ईर्ष्या के तम को स्नेहिल ज्योति जलाओ।
अगर न मन ने पीर पराई अपनी सी पहचानी।
अगर देश के काम ना आए वह बेकार जवानी।
फैशन वेश्या की गर यों ही जनक रही दीवानी।
पद के लिए अगर नेता नित, बदले
दल मनमानी।
तो कैसी आजादी भैया ,रंगरेली न मनाओ।
मिटा द्वेष ईर्ष्या के तम को ,स्नेहिल ज्योति जलाओ।
अगर सिफारिश सूपन खा की नाक गई ना कटी।
अगर रही रिश्वत की प्रचलित, अब भी गर परिपाटी।
महंगाई की सुरसा ने गर यूं ही मुंह फैलाया।
स्वास्थ्य दुलहिन की चितवन ने गर हमको भरमाया।
बिके नहीं ईमान ह्रदय में ,ज्ञान की ज्योति जलाओ।
मिटा द्वेष ईर्ष्या के तम को स्नेहिल ज्योत जलाओ।
हुआ राम की भू पर दुर्लभ अब अनाज का रूप।
हाय कृष्ण के गोकुल में अब गोरस का न ठिकाना।
अगर देश में रही पनपती यूं ही चोर बाजारी।
कैसे होगी दूर गरीबी हिंसा और बेकारी।
बढे राष्ट्र सम्मान सभी मिल यही मंत्र दुहराओ।
मिटा द्वेष ईर्ष्या के तन की स्नेहिल ज्योति जलाओ।

– **महेन्द्र नाथ मिश्र'विमलेश,** कोलकत्ता

+++

जीवन

वेदना से भरा हुआ,
मनुज का यह जीवन।
नित उलझती गूथियाँ,
सुलझाते बीतता जीवन।
फीकी मुस्कान लिए चलता,
मनुज का यह जीवन।
अश्रुधार से सिंचित,
समस्याओं से विस्मित।
आशा का अवलंबन,
मनुज का यह जीवन।
व्यथा सागर में डूबा हुआ,
गहन तिमिर में खोया हुआ।
खोजता प्रकाश किरण,
मनुष्य का यह जीवन।
स्वयं से डरा हुआ,
कांटों से गिरा हुआ।
जड़ है या है चेतन,
मनुज का यह जीवन।
दुनिया ने नश्तर चुभोये,
खड़ा हैं लेकर कर में दिए।
तन मन में हैं तपन,
मनुज का ये जीवन।

–**भरत चतुर्वेदी,** अचल (होलीपुरा/रिषड़ा)

✦✦✦

होलीपुरा

महानगर के थके हुए दिन और ऊबती सी शामों मे ,
कोलाहल से भरे नगर के हाट बाट और बाजारों में।
यहां जिंदगी किसी यंत्र सी सदा समय के साथ दौडती,
घुटन भरे इस चकाचौंध में दो पल का आराम खोजती!
नीम तले की शांत दुपहरी, जब मन छू जाती है ,
होलीपुरा ! तुम्हारी हमको याद बहुत आ जाती है।
ग्राम हमारा स्वर्ग धाम सा हमको लगता प्यारा ,
यहीं कहीं पर प्रकृति नटी ने अपना रूप संवारा।
चांदी से उजले दिन इसके सोने सी है रातें,
भव्य प्रासाद चूमते नभ,करते तारों से बातें!
बड़े भोर जब किसी घेर से कोई गाय रँभाती है,
होलीपुरा! तुम्हारी हमको याद बहुत आ जाती है।
गांव की मिट्टी पावन चंदन, अमृत सा है नीर,
त्रिविध ताप क्षण मे हर लेता शीतल मंद समीर!
दामोदर विद्यालय अनुपम छोटा शांतिनिकेतन ,
स्वामी जी की तपोभूमि पर पाता शांति दुखी मन।
संघर्षों के बीच जिंदगी जब अकुलाती है ,
होलीपुरा ! तुम्हारी हमको याद बहुत आती है।
सावन आता, रस बरसाता , ताल तलैया भरते,
हरिवंशा के ताल किनारे ,अब भी मेले लगते !
राखी बाधती , झूले पड़ते, कामिनीया गाती हैं ,
मेघ छटा को देख मयूरी, सुधि– बुधि बिसराती हैं।
दूर बसी बहना की, जब सावन में पाती आती है,
होलीपुरा ! तुम्हारी हमको याद बहुत आ जाती है।
आती शरद सुहावन पावन ,घर आंगन फिर सजते,
तारों की छाया में नौ दिन नौती–नौता पुजते।
पर्व दशहरा अति मनभावन परदेसी घर आते,
नूतन परिधानों में सज– धज मिलने घर –घर जाते।
इस अनुपम झांकी की जब भी झलक ध्यान मे आती है
होलीपुरा !तुम्हारी हमको याद बहुत आ जाती है।
होली आती रंग लुटाती, उडते अबीर गुलाल,
ढोलक पर धमार गाते, मिल युवा, वृध्द और बाल।
धरती ओढे चीर बसन्ती, मादक बहे बयार,
झुके झुके अलसाये नयना करते जब मनुहार,
जब देवर भाभी की होली घर मे धूम मचाती है,
होलीपुरा ! तुम्हारी हमको याद बहुत आ जाती है।
विद्यालय के वे अनुपम दिन, वह मस्ती का आलम,
भूले नही भुलाया जाता मित्रो का अपनापन।
लहलहाती खेती अपनी, अन्न भरे खलिहान,
होलीपुरा सुग्राम हमारा,सुख सुविधा की खान।
बिछुड़े हुए किसी प्रियजन की सुधि जब आती है,
होलीपुरा! तुम्हारी हमको याद बहुत आ जाती है।
वृक्षो के घूंघट से हंसती,सुन्दरि कही गजोखर,
देवालय मे भव्य झाकिया, सजती नित्य मनोहर।
उत्तर मे यमुना बहती, यश गाती है 'होली' का,
सिह द्वार परिचय देते अपने अतीत गौरव का!
जब कभी मौन रक्तिम संध्या बुचई की कथा सुनाती है
होलीपुरा! तुम्हारी हमको याद बहुत आ जाती है।
अमर रहे बुरी बुचईसिह बाबा और बुचाकर रानी,
विजन और बाहन वीरो की याद रहे कुरबानी।
होलीसिह महान अमर हो सतानद बृतधारी,
पृथ्वी, हलधर,हिम्मत होवे अक्षय यश अधिकारी।
छत्रसिह के तप की गाथा जब जब गायी जाती है,

होलीपुरा! तुम्हारी हमको याद बहुत आ जाती है।

– **उपेन्द्रनाथ पाण्डे,** कोलकत्ता

✦✦✦

एक और बसंत, अपना आकाश,सुबोधिनी तीन कविता संग्रह प्रकाशित। जाहि विधि रखे राम, नियति चक्र ,धूप–छाँह,मृग –तृष्णा चार कथा —संकलन प्रकाशित

एक उपन्यास–––लतिका प्रकाशित।संस्मरण की पुस्तक सुधियों के दीप प्रकाशित। संस्कार भारती से साहित्यक क्षेत्र में 'वरिष्ठ कला गुरु सम्मान ' से सम्मानित अपराजितानारी शक्ति सम्मान प्राप्त म.प्र. हिंदी साहित्य सभा द्वारा २०१७ का हिंदी सेवी सम्मान प्राप्त।

वापस आ जाओ गौरैया
गौरैया भला बतलाओ
तिनके तिनके जोड़कर
अब कहां बनाओगी घोंसला
कंक्रीट के इस जंगल में
वृक्ष अब कहीं नहीं दिखते
चारों ओर खड़ी हैं ऊंची ऊंची बिल्डिंग
जिनकी खिड़की पहले से है बंद
छोटी सी बालकनी में भी अब
तुम्हारे लिए कोई जगह नहीं बची है गौरैया

अब इन घरों में रोशनदान भी नजर नहीं आते
जहां पहले तुम आराम से
रख लेती थी,अपना घोंसला
उस घोसले में जब गूंजती थी चहचाहट
लोगों को आल्हाद से भर देती थी
घर में नहीं गूंजती है कोई आवाज
अब बेशक इन घरों के लोग खुश हो
उन्हें नहीं बुहारने पड़ते दिनभर तिनके
क्या हमारे जीवन से तुम सचमुच
चली गई हो हमेशा के लिए गौरैया
हम तो चाहते हैं तुम उड़ती रहो
संभावना के आकाश में
अपनी चौच में धान की बालियों को दबाए
फुदकती रहो संपूर्ण पृथ्वी पर
बिल्कुल निर्भय होकर आओ गौरैया
हमारे घर के द्वार आज भी खुले हैं
कुछ वक्त हमारे घर की खिड़की पर
जरूर बैठ जाना गौरैया
बाहर से आते हुए थोड़ा सा हरापन
दो बूंद बादलों से पानी की
जरूर लेते आना गौरैया
दिन पर दिन यह जीवन
शुष्क होता जा रहा है
अपनी चहक से जतला देना
तुम आ गई हो वापस हमारे जीवन में
ताकि हमें अपने हौसलों पर यकीन हो सके
तुम यदि वापस आओगी
यह घोंसला फिर चहक उठेगा
गौरैया तुम हो तो जीवन में
हरियाली है ,शेष है स्पंदन
तुम हो तो सम्वेदना का स्वर है
तुम हो तो अभी कुछ आस बाकी है।

– **श्रीमती सुबोध चतुर्वेदी,** ग्वालियर म.प्र..

✦✦✦

हमारी जमीन है

हमारी जमीन है
हवेली है वहाँ
आँखों से नहीं देखी
कानों से है बस सुना।
हमें यह नहीं पता
एक एकड़ में होते
कितने बीघे और फूलगोभी की फसल
गर्मियों में नहीं होती।
जिन्हें पता है वे बुढा गये हैं
देहरी की देख रेख करते
जो उनसे अब नहीं होती।
हमने बनवा लिए हैं
फ्लैट बंगले शहरों में
दिखते हैं व्यस्त पर
हैं मस्त ऐरों गैरों में
हमको भी अब जरा भी
उनकी सुधि नहीं होती।
मित्रों! ध्यान रहे
जड़ हीन वनस्पति बेल
फल फूल तो सकती है पर
पेड़ की तरह तन कर
कभी खडी नहीं होती !!

– **सुभाष चतुर्वेदी,** मुम्बई

✦✦✦

कानों से है सुनी

देखकर जुल्म इस जमाने में
हम तो बस बस गये हैं थाने में !!
लोग अब देखते हैं सुनते नहीं
क्या मजा रह गया है गाने में !!
जो खा रहा है उसे खाने दो नाम लिखा है दाने दाने में !!
मंदिर मस्जिद तो है अब लड़ने के लिए
लोग मिल लेते हैं मयखाने में !!
लोग अब देखते हैं सुनते नहीं
क्या मजा रह गया है गाने में !!
वे हो मजबूर दूर हमसे रहते हैं
उम्र कट जायेगी बस यूँ ही आने जाने में !!

– **सुभाष चतुर्वेदी,** मुम्बई

✦✦✦

कैकेयी उवाच

जग ने माना बस मुझे विमाता ,
समझा न कोई मेरी विवशता .
प्यारे थे मुझे भी राम लखन ,
रोया करता था मेरा भी मन .
राम यदि राजा बन जाते ,
सिर्फ अयोध्या में रह जाते .
ऋषियों का जीवन न बचता ,
राक्षस सबको मार ही देते .
जब मेरे राम गये थे गुरुकुल ,
तब भी दानव हर दिन आते.
मुनिगण को वे मार मारकर ,
ऋषि कुल तहस नहस कर जाते .
संतों के यज्ञ और तप को ,
पल भर में नष्ट कर देते .
झूमते मदिरा पान वे करते,
वातावरण को दूषित करते .
इसीलिये ऋषि गण की रक्षा ,
दानव दल को यमलोक भेजने .
आवश्यक था वन गमन राम का ,
जग में सुख शांति को करने .
थोड़ा सा अपमान झेलकर ,
यदि कोई लोक हित हो जाये .
है स्वीकार मुझे वह सब कुछ ,
जग मुझ पर लाँछन जो लगाये .
श्री राम तो संपूर्ण प्रभु थे ,
भूत ,भविष्य के जानकार थे .
मैं तो एक कठपुतली मात्र थी ,
जैसा नचाया नाच रही थी .

– **कुमुद चतुर्वेदी,** आगरा

✦✦✦

साहब के नाम पाती

साहब जब से तुम गए हो, मैं तुम्हीं में खो गयी हूँ।।
तुमसे बात करती हूँ, पर तुम जवाब नहीं देते।।
खैर जवाब तो तुम पहले भी नही देते थे,
बस हल्के से मुस्कुरा देते थे
और तुम्हारी आँखें जवाब दे देती थी।।
अब मैं तुम्हारी तस्वीर में तुम्हारी
आँखों से जवाब ले लेती हूँ।।
साहब बेड पर तुम्हारी जगह खाली है,
सोफे पर तुम्हारी जगह कोई नहीं बैठता।।
तुम्हारी पोती रोक देती है ये बाबा की सीट है।।
सुबह की चाय अब मैं अकेले पीती हूँ,
तुम्हारे एहसास के साथ।।
तुम्हारी जगह पहली थाली मैं खाती हूँ,
बच्चो को तुम्हारे होने का एहसास कराती हूँ।।
तुम्हारे जाते ही बच्चे एकदम बड़े हो गए हैं,
और मेरे अंदर पापा को खोजते हैं।।
तुम चुप रहते थे लेकिन लेकिन घर बोलता था,
तुम्हारे जाते ही जैसे घर बे रौनक हो गया है।।
तुम्हारे प्यार के दलदल में मैं गले गले तक उलझी हूँ,
न निकलना चाह रही हूँ और न निकल पा रही हूँ।।
पर सुनो साहब तुमने बेईमानी की है,
न जाने का बताया और न आने का वादा किया।।
और न ही ये कहा कि हम फिर मिलेंगे।।
तुम अकेले नहीं गए साथ ले गए,
मेरे माथे की बिंदिया, मेरी आँखों की निंदिया
मेरे माथे का सिंदूर, मेरे दिल का सुकून
मेरे होंठो की मुस्कान, मेरे पंखों की उड़ान
मेरे अंदर का साहस
पर साहब मैं बेईमानी नहीं करूँगी
मैं तुम्हारी सभी जिम्मेदारियां
ईमानदारी से पूरी करूँगी और
फिर तुम्हें खोजती हुई तुमसे आन मिलूँगी।।
तुम मेरा इंतज़ार करना, बस इंतज़ार।।

– **अंजू चतुर्वेदी,** वाराणसी

+++

कविता

आओ बिखरे सुर को ढूँढें
फिर से बीनें अपनी सरगम!
कहीं फिसल कर किसी तार
पर रचने वह संगीत चली थी,
उमड़ घुमड़ कर, चित्त हर्ष का
बनने वह नव गीत चली थी।
एक साध थी,वीणा का हर
तार जुड़े औ' मन हर्षाये
एक प्रेरणा, शब्द शब्द में
गुँथे, और कविता बन जाए।
गयी मगर खो सन्नाटे में
मिल कर उसको ढूँढेंगे हम ,
आओ बिखरे सुर को ढूँढें
फिर से बीनें अपनी सरगम!
कहीं भीड़ में, भगदड़ में वह
गिर कर, चीख़ बनी ही होगी
कहीं शोर में,व्यथित,व्यग्र हो
ख़ुद को ढूँढ रही ही होगी।
इतने कोने और दरारें
मुँह बाए जो खड़े हुए हैं
उनसे बच कर, आस बचाए
जीवन सींच रही ही होगी।
गूँगे, व्याकुल, सूने अधरों
पर नाचेगी फिर से छम छम
आओ बिखरे सुर को ढूँढें
फिर से बीनें अपनी सरगम!
बड़ा ज़ोर है चीख़ शोर में
फिर भी गीत उसे भाता है
यही गीत है,जिसकी धुन में
सपना सोया जग जाता है।
सब माया है, मृत्यु अटल है
जीवन सुख दुःख की छाया है
किंतु पलों ने कितनी ममता से
युग को भी सहलाया है।
मिट जाता पल, शेष मगर
मुस्काती उसकी जीत चिरंतन !
आओ बिखरे सुर को ढूँढें
फिर से बीनें अपनी सरगम!

– **विनीता चतुर्वेदी,** देहरादून

+++

कृष्ण महिमा

कृष्ण कन्हैया बंसी बजैया
विपदा मो पे आन पड़ी
बिछड़ गया जीवन का साथी
ना ही कोई संगी साथी
इतना ध्यान धरो तिहारो
तूने मो को पार न उतारो
हों तो तोसे रूठ गयी
बात न अब तोसे कर हों
बीच भंवर मे मोरी नैय्या
तुम बिन नाही कोई खिवैया
डगमग डगमग ऐसे चाले
जैसे समुद्र हिलोरे खावे
बारम्बार करूं तोसे विनती
हाथ जोड़ चरणों मे पड़ती
मनवा तो अब धीर धरे ना
कछु तुम ऐसी राह दिखाओ
आत्मा परमात्मा मिल जाये
केशव कृष्ण दामोदर मेरो
महिमा तुम्हरी सकल जग जाने
ऐसो एक संसार बसाओ
जहां न बिछड़े राधाश्यांम।।

– **चित्रा चतुर्वेदी,** भोपाल

+++

सही

तस्सवुर में कई ख्वाब थे ।
न जाने, सब पाने की चाह में कहाँ खो गए ।।
चली थी कहाँ से, कहाँ आ गयी ।
न ख्वाब रहे, न चाह रही ।।
मुस्कुराहटों के आते ही, आँसू भी चले आए ।
आँसू आए तो, जुबां लड़खड़ाई ।।
जुबां जरा संभली, तो लफ्जों को बयां ।
न कर सकी ।।
विगत यूँ ही बीत गया,
आगत से क्या मैं आस करूँ ।
प्रतिक्षण बीता जाता है,
न जाने कब प्रस्थान करूँ ।
बाती तो जलती जाती है,
सूखे जीवन के प्याले में ।
अतृप्त क्षुधा भी बढ़ती है,

नीरस रंगों की लाली में।
संध्या भी बीती, उषा भी आई,
जीवन के इस अस्ताचल में,
न जाने कब तक धीर करूँ ||

– **शशि चतुर्वेदी ज्वालापुर,** हरिद्वार

+++

है गर्व मुझे में हूं नारी
हे ईश्वर तेरी हूं आभारी
में शक्तिरूपा में कालजयी
में करुणामयी और ममतामयी
अदभुत गुणों की हूं पिटारी
है गर्व मुझे में हूं नारी
में महापुरूषों की जन्मदात्री
में ही हूं स्त्रष्टीनिर्मात्री
सम्मान की हूंअधिकारी
है गर्व मुझे में हूं नारी
मीरा बन मैने प्रेम किया
सीता सी पतिव्रता भी हूं
कहीं कठोर पत्थर सी मैं
कही कोमल लता सी मैं
में हूं विविधरूप धारी
है गर्व मुझे में हूं नारी
एक बांधने वाली डोर हूं मैं
मत समझो कि कमजोर हूं मैं
नव निर्माण की स्त्रोत हूं मैं
पवित्रता की ज्योत हूं मैं
दुष्टों की हूं मैं दमनकारी
है गर्व मुझे में हूं नारी
अब नहीं समय कुछ सहने का
डरकर घुटकर के रहने का
अपनी शक्ति को पहचानो
पड जाओ बुराई पर भारी
है गर्व मुझे में हूं नारी
हे ईश्वर तेरी आभारी

– **श्रीमती अनुपम चतुर्वेदी,** आगरा

+++

ऑन लाइन शिक्षा

हर विद्यार्थी में हुआ ऑन लाइन
शिक्षा का भार साधन बहुत है
पर है ऑन लाइन ही आधार
वृक्ष कबहुँ नहीं फल भरवे

नदी न संचे नीर
शिक्षा प्राप्त करने के साधने में
ऑन लाइन है जरूर
जब तक करोना रहेगा
ऑन लाइन शिक्षा तेरा ही
बोल बाला रहेगा
ऑन लाइन शिक्षा की ही तमन्ना अब
हमारे दिल में है देखना है
कितने दिन करोना देश में है
स्कूल की विद्यार्थी शिक्षा के पथ पर
अधिकारी ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त
करो प्यारे हमारे विद्यार्थी
शिक्षा ऑनलाइन का महाप्राण
अध्यापक मोबाइल लैपटॉप
लेकर निकल पड़ा शिक्षा की
पथ पर करने चला छात्रों का कल्याण
हे छात्रों सभी शिक्षकों ही दृस्टि
तूम पर लगी
हे छात्रो ऑनलाइन शिक्षा कि
ज्योति तुम सब में जगी
देखो करोना हो रहा संसार
में बच्चो तुम पढ़ो क्योकि
पढ़ने का यही है एक आधार
आजकल संसार में
ऑनलाइन प्रमुख साधन है
विद्या प्राप्त करने का
एक मात्र उपाय है दूर बैठकर
पढ़ने का
कोरोना के काल में शिक्षा है
जरुरी तो वह ऑनलाइन
के बिना है अधूरी
कोरोना आया ऑनलाइन शिक्षा लाया
कोरोना न होता ऑनलाइन शिक्षा न होती

– **रेखा चतुर्वेदी,** मंसूरी

+++

दीपों की रात

अमावस की रैन मुस्कुराए गई
दीप जले उजियारी छाय गई,
अमावस की रैन मुस्कुराए गई।
जगर मगर जगर मगर गैल गैल गली गली,
आंगन और द्वारे चमकाए गई।

दीप जले उजियारी छाई,
अमावस की रैन मुस्कराए गई।
अमावस के भाग्य जगे पूनम को लाज लगे,
ऐसी उजियारी छाय गई।
चंदा की चांदनी लजाए गई,
अमावस की रैन मुस्कुराए गई।
दीपों की पंक्ति जले कोरोना के वायरस जले,
ऐसा मनोबल बढ़ाएं गई।
दीप जले उजियारी छाय गई,
अमावस की रैन मुस्कुराए गई।
जन-जन में प्रेम बढे उत्साह उमंग बढे,
चहुँ दिशि खुशियां बरसाई गई।
दीप जले उजियारी छाय गई,
अमावस की रैन मुस्कुराए गई।

– **करुणा मिश्रा,** मथुरा

+++

श्रद्धा सुमन'

सर्दी की रातों में ठंडक भरे हवाओं के झोंके
जब सिहरन सी भर जाते हैं,
बाबूजी आपके थपकी देते हाथ
कितनी गर्मी दे जाते हैं।।
जन्म से ही आपका वरद हस्त ,माथे पर पाया,
आपने ही सहलाया,दुलराया और अपनाया।
वो आप ही थे पूज्यतम,जिन्होंने,
उँगली पकड़कर चलना सिखलाया,
शुरुआत थी एक डगर की,
जब हाथ पकड़ हमसे ॐ लिखवाया,
स्कूल के भारी बस्ते को कंधे से उतारा,
और हमारा होमवर्क पूरा कराया।।
हम पढ़ने से जी चुराते,बगीचे में भाग जाते,
तब आप ही हमें मनाते और बातों में ले पढ़ने बैठाते।
वो अंग्रेजी की स्पेलिंग वो टेंस का जाल,
कभी गणित की अबूझ पहेलियाँ तो
कभी बाबर हुमायूं के राजसी ठाठ।।
दिन गुज़रते गए,हम आगे बढ़ते रहे,
एक दिन पाया कि हमें सहारा देने वाले हाथ
बहुत कमज़ोर और बेबस हो गए।
वो सहारे को बढ़ाते हाथ पर हम दे न पाते साथ,
वो आँखे उठाए तब तक देखते ,
जब तक आती हमारी पदचाप।
पीठ फेरते ही बह निकलती अश्रुधार।।
बेंत को टेकती उनकी वो डगमग चाल,
अनेक हिदायतें और पाबंद न होने की शिकायतें,
आज भी गूंजा करती है,आपकी ये आवाज़
वैष्णव जन तो तेने कहिए जो पीर पराई जाने रे
पर दुखे उपकार करे ,मन अभिमान न आने रे।।

– **कुमकुम चतुर्वेदी,** फिरोजाबाद

+++

अलमारी

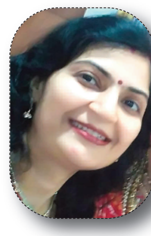

अलमारी में रखे खत
अलमारी में रखे खत मुझे बड़ा सताते हैं,
कभी रुलाते, कभी हंसाते है।
बचपन की यादों में भीगे,
मेरी आंखें भी नम कर जाते हैं।
मां पापा का एक खत आया था,
मेरी जुदाई का दर्द छुपा था।
उसका मिटा हुआ एक अक्षर
सारे राज खोल गया था।
खत में एक आंसू टपका था।
मुझसे उनको कुछ कहना था।
शब्दों से वह कुछ ना बोले,
मर्यादा से बंधा हुआ था।
भैया की मीठी मनुहार,
आने को है राखी का त्यौहार।
जमा किए हैं मैंने पैसे,
लेना तुम मनचाहा उपहार।
बचपन की वह मेरी सखियां,
करती थी दिन रात जो बतियां।
अब छेड़ती थी खत में मुझको,
कैसे मिली साजन से अखियां।
हर खत का अपना किस्सा है,
कुछ यादें खट्टी मीठी सी हैं।
कुछ बातें कही अनकही,
मेरे जीवन का वह अनमिट हिस्सा है।

– **शालिनी चतुर्वेदी,** भोपाल।

+++

गीत

क्षितिजों तक गहराए तम के आयाम,
चंदन के आलिंगन विषधर के नाम।

गरल पिये देवों के पांव डगमगाते है,
अमृत का कलश लिए दानव मुस्कुराते हैं।
खुशियों के पर्व करें आंसू के नाम,
क्षितिजों तक गहराए तम के आयाम।
राशि चढ़ी नीम के गिलोय मुस्कुराती है,
झूम–झूम पीपल की साधना डिगाती है।
मिटा रही शुचिता के अंश वंश नाम,
क्षितिजों तक गहराई तम के आयाम।
खिन्नमना सजल नयन घोरतम निहारती,
अस्मिता न डूब जाए रश्मियाँ सँवारती।
चांदनी विवश हुई मावस के धाम,
क्षितिजों तक गहराए तम के आयाम।
अंतः के आंगन में चित्र चित्र झाड़ उगे,
पल पल हम देख रहे सहमें से ठगे ठगे।
अधरों के कंपन में निर्मोही नाम,
क्षितिजों तक गहराए तम के आयाम।।
पंगु मिलीं आस्थाएं खंडित विश्वास मिले,
खंडहर की परंपरा थोथे अहसास मिले।
सुधियों के सम्मोहन करते बदनाम,
क्षितिजों तक गहराए तम के आयाम।।

– **विजय चतुर्वेदी, 'विजय'**, फतेहपुर करखा/आगरा

✦✦✦

एक बार फिर

एक बार फिर अर्जुन उदास है,
वो सोच रहा है कि मैं,
ना किसी को हराना चाहता हूँ,
ना किसी से जीतना चाहता हूँ,
फिर भी ना जाने क्यूँ ?
ये खून के रिश्ते मुझे प्रतिस्पर्धा में रखे हुए हैं,
खून का रिश्ता सबसे बड़ा रिश्ता
कहावत को भी झुठलाऐ हुए हैं,
बीज रूप में पलती अनेक
दकियानूसी धारणाऐं उन्हें घेरे हुए हैं,
वैचारिकता से छिन्न–भिन्न करने का प्रयास जारी है,
अपनों से लड़ने की जंग सारी है,
फूट डालो राज करो की नियत उनकी आभारी है,
मैं मानता हूँ कि दुनिया उतनी आसान नहीं है,
मैं खारिज करना चाहता हूँ उस मानसिकता को,
जो आंसुओं की नमी को,
तुम्हारी कमजोरी बताती है,
मैं धूप भर हँसना, बर्फ बन पिघलना
और बादल बन बनना चाहता हूँ
मैं मानता हूं कि कोई विकल्प अंतिम नहीं होता,
उम्मीद पर दुनिया टिकी है,
चलो सारे भय दूर करते हैं, आगे बढ़ते हैं,
हाँ रब मेरे साथ है,
और जीवन जीना आना बड़ी बात है,
सच में बड़ी बात है।

– **महेंद्र चतुर्वेदी,** चंद्रपुर/आगरा

✦✦✦

नीड़ की नीरवता

नन्हीं पाखी ने नीम के पेड़ पर
बड़े जतन से नीड़ बनाया,
अंडों को प्यार से सेहा, दुलराया,
कई दिन भूखे रहकर सहलाया, पुचकारा
फिर नन्हें नन्हें चूज़े निकले,
उनके पंख हीन तन को,
प्यार की चादर ओढ़ा
हौले हौले थपकी दे सुलाया।
दूर खेतों से दाना चुग कर,
चोंच में गेहूं की बाली दबाकर
चीं चीं करते चूजों की ,
चोंच में दाना देकर,
मुदित हो अपनी थकान भूल कर
खुशी से उड़ती, चहकती फिरती....
और एक दिन...
उस शाम नीड़ की नीरवता
ने उसे चौंका दिया,
परेशान हो यहां वहां उड़ती फिरी,
फिर देखा. ....
दूर अमलतास पर उसके बच्चे चहक रहे थे,
नए साथी संग किलक रहे थे,
सुंदर पंखों को फैलाकर,
यौवन पर अपने लहक रहे थे।
पाखी सोच रही थी....
कैसे , कब ये बड़े हो गए
अपने पंखों पर ये उड़ गए,
खुश होऊं या दुख मनाऊं?
हैरानी से आंख भरी थी,
गेहूं की बाली, चोंच में अब तक दबी थी।

– **रुपीना मिश्रा,** कानपुर

+++

नेपथ्य पुरुष के लिए

आज भी स्मृतियों के नेपथ्य से
झांक रहा है तुम्हारा चेहरा
जिसे मैने जब_जब स्पर्श करना चाहा
वह मुझे चिढ़ाता अनंत में विलीन हो जाता
दरअसल वह चेहरा ही मेरी पहचान था
जिसके खो जाने के बाद
मैं महज एक/नकाबपोश होकर रह गई हूं
जो अस्मिता और अस्तित्व के अलावा
वह सब कुछ रखता है
जो एक आदमी के चेहरे के लिए जरूरी होता है
लेकिन बिना पहचान के एक प्रेत जीवन से क्या फायदा
लौट जाओ नेपथ्य पुरुष
तुम्हीं तो मेरे बेजान जीवन की
जीवन धर्मी आत्मा हो
मैं तुमसे मनुहार करती हूं
तुम तो मेरे प्रथम अनुराग हो।

–**मधु मिश्रा,** ग़ाज़ियाबाद

+++

गोपी-विरह

मोहना बनौ द्वारिकाधीश,
ब्रज की विसरायी प्रीति,
उजड़े कदम कुंज पतझर से,
विरही रोबत नयन अधीर।
मोहना––
यमुना मलिन भयौ जल खारी,
कामधेनु नहिं गाय हमारी,
गो–रस कौ अबकें परौ अकाल,
मिले ना मटकी में नवनीत।
मोहना––
बंशीवट पै कोई ना अटकै,
चीर खींच गागर नहिं पटकै,
भदरंग विक्षत मधुवन नीरव,
निभै नहिं प्रेम की उल्टी रीत।
मोहना–––
आश उमंग मिटी बिन तेरे,
गूंगे विहग न बंशी गूँजे,
सारंग छोड़ गये कानन कौं,
सूने सूने पनघट हैं बिन नीर।
मोहना––
ज्ञानी चतुर अतुल तुम ऊधौ,
काना सें दुर्गित जाय कहौ,
मोहन को अपने संग लाना,
चैंन मिले गोपिन कौं 'वीर'।
मोहना––

– **वीरेंद्र नाथ 'वीर ',** दिल्ली

+++

सरस्वती वंदना

श्वेत नीर–छीर के विवेकी राजहंस पर,
बैठकर वीणा–पाणि वीणा को सुधार लो।
ज्ञान–तार वीणा के सुधार लो तुरंत अब,
सत्यं–शिवं–सुंदरम के स्वरों को निकाल लो,
मूढ़ अज्ञानियों को ज्ञान का प्रकाश दिखा,
अपना बना लो पास उनको पुकार लो।
वीणा–पाणि शीघ्र ही बचाओ अपनाओ हमें,
भीम–भव–सागर से दया कर उबार लो।

चैन

काल की विशालता में कितने क्षण जीता तू
निखिल ब्रह्मांड में कितना थल जीता तू
रे गुमानी मन मेरे अभिमानी तू,
रहता बेचैन क्यों ना चैन से है जीता तू।
चांद पर पद प्रहार अंतरिक्ष में विहार,
शैलो के शिखर पर सागर के आर पार,
तेरे पराक्रम को करता मैं नमस्कार,
ऐसा पुरुषार्थी ना चैन से क्यों जीता तू।
पल तोला पल माशा रूप धरे बार–बार,
सबल को नमस्कार निर्बल का तिरस्कार।
कैसा प्रपंचा है कैसा यह व्यवहार,
बहुरूपी ऐसा क्यों ना चैन से है जीता तू।
सत्ता को माने या ना माने यह तेरी बात,
डोल रहा छड़ प्रतिक्षण डाल डाल पात पात,
नाचा खूब बाहर पर ताल कहीं मिली नहीं
डूब बैठ अंतर में चैन तब जीता तू।
मन की क्या बात कहे कौन यहां सुनता है
अपनी ही चादर हर एक यहां बुनता है
जीवन भर बुनी गई पूरी कभी हुई नहीं
ताना और बाना छोड़ चैन तब जीता तू।

– **श्री हरस्वरूपजी,** 'हरेश' मैनपुरी

+++

अनजाने

अनचाहे स्मृतियाँ आजाती हैं अतीत की

स्निग्ध धवल मुस्कराहट लिए.
जैसे जग उठे हो सभी स्वर बांसुरी के,
गा उठी हो पञ्च स्वर में पवन
हो गया संगीतमय वातावरण
फिर अचानक................
बे निकल जाती है मानस पटल के खुले द्वार से.
बिना आहट किये बिना दस्तक दिए.
जैसे चुभ गए हो शूल गुलाब के कोमल चमेली के तन,
टूट कर बिखर गया हो असंख्य टुकड़ों में प्रति बिम्बित दर्पण
और तब रह जाता विकल मन केवल छट पटाहट लिए.....
अनजाने अनचाहे
स्मतियां आ जाती हैं अतीत की
स्निग्ध धवल मुस्कराहट लिए

– **धर्मेश चतुर्वेदी,** मैनपुरी/गाज़ियाबाद

✦✦✦

माखन लीला

माखन की मटुकी भरी घरी है छींका मांहि बंद हैं
किबारे द्वार घर सब सोय रहे
गलियन कान्हा गोप ग्वालबाल संग लिए
घर घर माखन की गंध को टटोय रहे
आये चुपचाप सारो माखन गिराय दीन्हो
कछु खाय लीन्हो खेल माखन सौ होय रहे
कहे धर्मेश देखें द्वार की झिरिन मांहि
बाललीला बृजवासी अंगसुधि खोय रहे

– **धर्मेश चतुर्वेदी,** मैनपुरी/गाज़ियाबाद

✦✦✦

हिन्दी

हिन्दी पर अभिमान हमें हैं।
हिन्दी है जन–जन की भाषा
राजभाषा हिन्दुस्तां की
जहाँ में फैली ख्याति की
है भाषाओं की सिरमौर
हिन्दी है जन –जन की भाषा
संस्कृत है जननी हिन्दी की
है गुमान हमें हिन्दी पर
शब्द एक है अर्थ अनेक
है विशेषता भारी इसकी
वैज्ञानिकता आधार लिए है
सहस्त्रों जनों की आत्मा हिन्दी
हिन्दी का इतिहास पुरातन
लिखा गया संस्कृति सनातन
रुतबा अपना बना के रखती
सरल सुगम मधुर भाषा है
समृद्ध सशक्त मानकीकृत है
देवनागरी इसकी लिपि है
भारत माँ का शीश मुकुट है
माँ के जैसी प्यारी हिन्दी
हम सब के लिए उपयोगी हिन्दी

– **श्रीमती उषा चतुर्वेदी,** भोपाल

✦✦✦

निद्रासन

निद्रासन के सामनैं,
दिखौ न आसन कोय।
भाग्यवान वो जानिए,
जोउ चैन ते सोय।
जोउ चैन ते सोय,
सोय सुत जो राजा कौ।
या जोगी, अवधूत,
सोय बिन मात–पिता कौ।
सोवै आपमधाप,
चलावै जो निज सासन।
अटल जागते भोर,
न हमकूँ है निद्रासन।

– **अटल राम चतुर्वेदी,** मथुरा

✦✦✦

कारगिल के नाम

जब घर वाले आज़ादी की शराब पिए मदमस्त हों।
संस्कृति और परम्पराएं हों चलीं मस्त–मस्त हों।
जहां हर भारतीय देश छोड़ ख़ुद में व्यस्त हो।
राज, पाठ, अर्थ,नीति, कृषि विडम्बनाओं से ग्रस्त हों।
भ्रष्टाचार, चापलूसी, मक्कारी, आलस,
झूठ, उग्रवाद, खोखलेपन, स्कैम, डकैती,
फिरौतियों का, हर भारतीय अभ्यस्त हो।
जन, गन, मन, भोग–विलास से ग्रस्त हों।
दिशाहीन देश की विचारधारा पस्त हो।
पड़ोसियों और हमारी परेशानियों के बीच
तीसरा मध्यस्त हो।
सूर्य भैरवी सुनने से पहले ही अस्त हो।

तो फिर ऐसे घर में घुसपैठियों का घुसना स्वाभाविक है।
क्यों कि हम ही उनके अभिभावक हैं।
वैसे--
घुसपैठियों का काम ही है घुसना।
वे पैदा ही इसलिए किए जाते हैं कि बेटा जाओ,
और दूसरों के घरों में घुसो।
साम, दाम, दण्ड,भेद के सभी गोले-बारूद फेंक डालो।
तो आज आंख खुली तो देखा कि दोस्त कहलाए
जाने वाले दुश्मन, अपनी असली औकात में हैं।
हमारी ही ज़मीन पर जमा हो, पूरी तरह तैनात हैं।
और एक हम हैं कि अब तक उससे दोस्ती का
हाथ बढ़ाते हुए,
मित्र, रिश्तेदार, मेहमान का दर्ज़ा देते आए हैं।
हम मूर्ख हैं और क्यों न कहलाएं ?
हमने चौकियां छोड़ दीं कुलीन कि आओ,
और बैठो हमारे मूड़ पर बैठो।
अरे! टाइगर हिलअगर इतनी ही स्ट्रैटैजिक थी
तो उसे ख़ाली छोड़ा ही क्यों ?
जो हमारे लद्दाखी इरादों तक जाती
सड़कों का मार्ग अवरुद्ध करें।
उसका फ़ैसला भी युद्ध करें।
कारगिल कोई घास का टीला नहीं,
हमारा गौरव, हमारा वजूद है।
तो युद्ध ख़त्म होता पहाड़ी चट्टानों में।
फिर किसी फ़ौजी का घर आ गया वीरानों में।
गूंजती है शहीद बाप की आवाज़ बच्चों के कानों में।
एक मां की नज़र गड़ गई है टीन के डाकखाने में।
छोटी बेटी घूमती है लिए पापा की फ़ोटो आंगन में।
कोई बहन सिसक रही है उलझी राखी के धागों में।
पत्नी ढूंढती है अब अर्थ फिल्मी गानों में,
लिखो कब आओगे,
कि ये दिल तुम बिन सूना-सूना है।
चलो इसी बहाने देश का
बच्चा-बच्चा इण्डियाको पहचान गया है।
तो आयुष्मानका जी. आई. जियो
भी इण्डियन आर्मी में छा गया है।
उग रही है देश भक्ति की किरण देश के नौजवानों में।
चलो कुछ देर से ही सही,
पता तो लगा कश्मीर के चमनिस्तानों में।
तो उठो हे भारतवर्ष ! यह वक्त सोने का नहीं है।
तो बाधाएं आती हैं तो आएं,
घिरें प्रलय की घोर घटनाएं।
पांवों के नीचे अंगारे,सिर पर बरसें यदि ज्वालाएं।
निज हाथों से हंसते-हंसते आग लगा कर जलना होगा।
क़दम मिला कर चलना होगा,
क़दम मिला कर चलना होगा।
दुश्मन को तो कुचलना होगा।
कारगिल को भी सम्हालना होगा।

– **अभिनव चतुर्वेदी,** सिने कलाकार, दिल्ली

✦✦✦

करोना काल की शादी का बन्ना

घर आओ मेरे बन्नेजी आस लगी है दर्शन की।
बन्नै मास्क पहने कर तुम आना,
सैनिटाइज़ भी कर लेना।
गले मिलने की अब रीत नहीं, दूरी में ही है भलाई।
बन्ने कौरन्टाइन से निकले हो,घर में सबसे मिल तोलो।
अब दूल्हे जैसा सजना है, घोड़ी चढ़ कर जाना है।
आ-आ-आ-आ
जब दादी ने तेरा दीदार किया, खुश हो आशीर्वाद दिया, पूरी हो तेरे सब मन की,दुल्हन मिले तुम्हें चन्द्र मुखी।
आ-आ-आ-आ।
बन्ने बीस बराती जाएंगे, खुश हो धूम मचाएंगे,
तुम तो मण्डप में जाना,
फेरे कर(या शादी कर) दुल्हन लाना।
हम सब की आशीष यही,जुग जुग जिए सुन्दर जोड़ी।
आ-आ-आ-आ

– **वीणा चतुर्वेदी,** मैसूर

✦✦✦

आज का संसार

आज का संसार भौतिकता से भरा है,
कर्म है सूखा हुआ बस स्वार्थ ही लगता हरा है।
लुप्त होते जा रहे सदगुण सहृदयता,
मानवीगुण खो चुके हैं दिव्यता औ भव्यता।
आज वह है उच्च जो आडम्बरी है,
और लगता नीच जो धर्मदधुरी है।
देश के प्रति प्रेम ढोंग कहा गया है,
धर्म, संस्कृति, ज्ञान सब धुल बह गया है।
क्यों न हम फिर से शिवा की याद कर लें,
गर्व से राणा प्रतापी, बात कर लें।
आज मिलजुल कर हरें परिताप को,
दूर कर दें देश से सब पाप को।

अब बजे फिर दुंदुभी यशगान की,
भेंट कर सब भेद दृढ़ सम्मान की।
अटल हो विश्वास खोयमान पाएँ,
चलो मिलजुल राष्ट्रध्वज को सर नवाएँ।

– **विवेक बल्लभ चतुर्वेदी,** वाराणसी

+++

गीत तुम्हें समर्पित

सूने उपवन में फूल खिलाने वाले
यह गीत तुम्हें समर्पित,
यथार्थ की राह दिखाने वाले
यह गीत तुम्हें समर्पित।
मेरे पथ के अंधकार में
तुम जुगनू बनकर आए,
जलकर– बूझकर ही तुमने
जीवन के रहस्य समझाए,
विराग की राह दिखाने वाले
यह गीत तुम्हें समर्पित।
सूने उपवन में फूल खिलाने वाले
यह गीत तुम्हें समर्पित।
यदि तुम ना आते जीवन में तो
सत्य मार्ग कैसे पाती?
सांसारिकता में उलझी रहती
मैं मोक्ष– मार्ग ना पा पाती,
ईश्वर की चाह बढ़ाने वाले
यह गीत तुम्हें समर्पित।
सूने उपवन में फूल खिलाने वाले
यह गीत तुम्हें समर्पित।

– **संगीता चतुर्वेदी,** चेन्नई

+++

दिल के कुछ अनजान कोने

कृति – दिल के कुछ अनजान कोने
बहुत साथ निभाया खिजाओं का हमने,
अब कुछ वक्त बहारों के साथ चलने दो।
सुबह होने में अभी कुछ वक्त बाकी है,
ख्वाबों की महफिल तो जरा सजने दो।
बड़े वक्त बाद निकला है चाँद बदली से,
नजर भर दीदार तो होने दो।
बहुत साथ निभाया खिजाओं का हमने,
अब कुछ वक्त बहारों के साथ चलने दो।

+++

जिंदगी की रह गुजर में ठोकरें बहुत खाईं,
दोस्त खोये बहुत मुसीबतें पायीं।
लेकिन मन से यह आवाज बार–बार आयी।
गिर के सम्हलने का मजा कुछ और है,
वो भी एक दौर था यह भी एक दौर है।

+++

लोग कहते हैं जिंदगी खूबसूरत होती है,
ना जाने मौत क्यूँ इस बात को झुठला जाती है।

+++

हमारे पांव के नीचे जमीन नहीं दो गज भी,
लेकिन मुट्ठी में कई आसमान रखते हैं।
जख्मों से दिल को सजाया और उनसे, मोहब्बत की
गरीब हैं हम मगर कद्रदान रखते हैं।
मेरे मुल्क की रीत अलग है और रिवाज भी,
यहां ईमान सिर्फ बेईमान रखते हैं।
बेजरूरत हथेली पर जान रखते हैं,
अजीब लोग हैं मेरे मुल्क के, मुंह में जबान रखते हैं।
खुशी तलाश न कर मुफलिसों की बस्ती में,
यह शय तो यहाँ के हुक्मरान रखते हैं।।

– **दिलीप चौबे,** (होलीपुरा/जलगाँव)

+++

हिन्दी भाषा

भारत मां के भाल की बिंदी
जन जन की प्रिय भाषा हिंदी।।
देश की गौरव गाथा गाती।
सदा देश का मान बढ़ाती।।
बृहद व्याकरण कोष है इसका।
शब्द कोष समृद्ध है इसका।।
क्यों अंग्रेजी से प्रीत बढ़ाई।
राष्ट्र की भाषा क्यों विसराई।।
छोड़ गुलामी संग में आओ।
सब मिलकर हिंदी अपनाओ।।
संस्कृति की परिचायक हिंदी
राष्ट्रवाद की वाहक हिंदी।।
इससे प्रीति लगाइए
हिंदी को अपनाइए।।

– **नूतन चतुर्वेदी नीम,** मैनपुरी/गाजियाबाद

+++

रिमझिम रिमझिम सावन

रिमझिम रिमझिम सावन
सावन की काली काली घिर आई घटाएं

झूले झूलाएं सावन की हवाएं
भूले नहीं भूलाएं वो नजारे
भरा है गुलशन रंगीन गुलों से
फैली है खूशबू जिसकी हवा में
जैसे बिखेरा हो इत्र किसी ने
तितलियां झूमे हर डाल पात पे,
नटखट भँवरे मंडराए फूलों पे,
शोर पवन का गूंजे हर दिशा में
रिमझिम रिमझिम बरखा बरसे,
सावन की घिर आई घटाएं।।
हरियाली छा गई हर दिशा में,
लाई खुशियां हर के आँचल में।।

– **शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी,** फिरोजाबाद

✦✦✦

ज़माने

ज़माने प्यार की रुसवा नज़र
कैसे इशारे हम,
निगाहें फेर के चल दिए
किसको पुकारें हम।
तेरे गेसू ओ बल , शौक़– ए अंदाज़
कैसे भूलें हम
तन्हा रातों में ले रहे करवटें
कैसे संभालें हम।
वास्ता देते रहे वो
अपनी निगाहों से जो,
जलती शमा के परवाने
कहां जाएं हम।
फ़लक़ शबनम से ही
पूछ रहा हाले ग़म,
रोशनी छिप गई प्रीता
कैसे बताएं हम।।

– **डॉ अपर्णा चतुर्वेदी, प्रीता,** जयपुर

✦✦✦

जिन्दगी की दास्तां...!

जो पीछे मुड़ के देखा तो, कुछ यादें बुला रही थी।
अब तक के सफर की, सारी बातें बता रही थी।।
कितनी मुश्किल राहें थीं, हम क्या क्या कर गए।
एक सुकून की तलाश में, कहां कहां से गुजर गए।।
कितने लोग मिले सफर में, कितने बिछड़ गए।
जन्मों का साथ निभाने वाले, जाने किधर गए।।
अलग ही ज़माना था, वो अलग ही दौर था।

ज़न्दिगी जीने का, मक़सद ही और था।।
बचपन की नादानियां थीं, ख्वाबों भरी जवानियां थीं।
घर की जिम्मेदारियां थीं, धंधे की परेशानियां थीं।।
हर उम्र के सपने अलग थे, दृष्टिकोण अलग था।
लक्ष्य अलग था, मोल अलग था।।
आईने में खुद को देख कर, रोज सोचता रहता हूँ।
क्या खोया क्या पाया, अक्सर तौलता रहता हूँ।।
कुछ चेहरे कुछ बातें, कुछ भूली बिसरी यादें।
ढूंढ रही हैं पूछ रही हैं मुझे, क्या सही, क्या गलत था।।
उम्र के साथ साथ, सोच बदलती रहती है।
चाहत बदलती रहती है, खोज बदलती रहती है।।
अब इस मुकाम पर, एक ठहराव आ गया है।
मंज़लि का तो पता नहीं, पर पड़ाव आ गया है।।
बेचैन मन को राहत, अब मिलने लगी है।
समझौता कर लिया तो, ज़न्दिगी मुकम्मल लगती है।।
ऐ ईश्वर तेरा शुक्रिया, तुझसे कोई शिकवा नहीं है।
यहां सब थोड़े अधूरे से हैं, किसी को पूरा मिला नहीं है।।
बहुत सारी कट गई, अब थोड़ी सी बची है।
किसी के होंठों पे मुस्कुराऊँ, जाने के बाद भी याद आऊँ।।
बस यही ज़न्दिगी है। बस यही ज़न्दिगी है।।

– **अजय चौबे** (चंद्रपुर/भोपाल)

✦✦✦

बोनसाई

सुन्दर सज्जित सरल आकृतिमय
एक छोटा–सा गमला
उसमें उगता – बढ़ता – फैलता
एक छोटा–सा बोनसाई
विशाल बरगद का सिमटा–सा रूप
जिसकी छाया तले बौद्धिकता निर्वाण पाती,
आज बनाकर बोनसाई उसको,
सजाकर ड्रॉइंग–रूम में,
तें होतीं चिंतन की, स्वतंत्रता की,
गति बाँधकर, गत्यात्मकता की बात !!
संकुचित गेह में विकसित देह
और आस–पास की संकुल मानसिकता,
ऊंचा उठे तो जड़ काट दो,
पत्तियाँ फैलें तो तारों से बाँध दो,

कोंपलें फूटें तो उन्हें क़तर दो,
सहजता रोकता कृत्रिम विकास !!
विस्तीर्णता लुप्त है, उदारता सुप्त,
वैभव कुंठित, दृढ़ता लुंठित ह
है तो मात्र संकुल स्वार्थपरता
रोक दो, गिरा दो, काट दो,
बोनसाई बनी मानवता का
कैसा विद्रूपमय हास !!
प्रकृति–पोषण का साथ है अगर
प्राणशक्ति उठने की ऊपर,
जिजीविषा जड़ जमाने की,
तो उगना, बढ़ना, फैलना ही है,
कितनी ही जड़ काटें, टहनी मोड़ें,
एक राह रुकने पर दूसरी का विकास !!
हमारी जड़ें फोड़ देंगीं गमले को,
हमारी कोंपलें तोड़ देंगीं तारों को
हम सीमित हैं आकार में
पर संचरित है हममें
दृढ़ ऊर्ध्वगामिता की अटूट लय
हमारा धर्म है ....उगना, बढ़ना, फैलना !!
हम हैं छोटे गमले के छोटे बोनसाई !!!!

– **डॉ. सुजाता चतुर्वेदी,** कानपुर

+++

भारत महिमा

हम भारत सन्तान हमारी खुली है दस्तक
है स्वर्णिम इतिहास हमारी भरी है पुस्तक,
गोरी हो फिरंगी सबको गले लगाया है
मित्रता का पाठ जग को हमने सिखलाया है।
सिख, हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई साथ जहाँ रहते हैं
प्यार के पावन ऐसे झरने जहाँ झरते हैं,
बुद्ध, नानक, गाँधी की अहिंसा मिसाल बन गई है
कर्म योग गीता का विश्व ने हमसे पाया है।
होकर स्वतंत्र भारत जब से मस्त हुआ है
तबसे पराधीन सूरज राज्यों से अस्त हुआ है,
पराधीनता की बेड़ी तोड़ना आज आम हो गई है
सत्य और समता को मानवता ने हमसे सीखा है।
छोड़ा तुमने देश वह अपना
लगे कमाने धन और सपना
रंजन करें बस यही प्रार्थना
जनम भूमि को तुम न भुलाना ॥

– **राजीव रंजन,** मैनपुरी/कनाडा

+++

तुम नर हो बने रहो

तुम नर हो बने रहो नर मत बनो देव
तुम मानव गुण धर्म आचार लाओ मत बनो देव
पीकर पर पीढा को सबके दुख दर्द हारो
मीटाकर बाधाओ को सब संकट हरो
सुख दुख में सबका साथ निभाओ तन मन से
हर समस्याओ को दूर भगाओ जन जन से
नव प्रकाश फेलाओ जीवन जग में
नई ज्योति जलाओ निराश मन में
सबको प्यार लुटाओ भुजे मन में
खुशीयो के फूल खिलाओ जन जन मे
धैर्य संतोष से जीवन सुधारो
आखीर प्रेम से प्रभु को पुकारो

– **महेशचंद चतुर्वेदी,** करहल/ भोपाल
प्रकाशित कृतिः माँ शारदा, एक रस्ता, आबाद रहे

+++

बचपन

वो भी क्या दिन थे, जब हम रहते थे मस्ती में––
मीठी–मीठी यादें हैं उस बचपन के सावन की,
आंगन में हम झूला झूले मस्ती में गीतों की।
मुन्ना भइया नाव बनाते, लाल पीले पन्नों से,
उनकी फिर हम दौड़ लगाते गलियों के नालों में।
उछल–उछल कर धूम मचाते, बरखा के पानी में,
मां चिल्लाती बीमार पढ़ोगे,पर हम झूमे मस्ती में,
वो भी क्या दिन थे जब हम रहते थे मस्ती में।
पानी में कभी पकड़ें मेंढ़क, कभी केंचुआ मिलकर,
और 'वो' भी खेले साथ हमारे,फुदक–रेंगते रमकर।
चारों तरफ सिर्फ पानी–पानी, होती पढ़ने की छुट्टी,
हम भी खुश रोज मनाते, रैनी–डे छुट्टी।
ना मोबाइल– फेसबुक ना, होता था तब व्हाट्सएप
बस होते थे खेल हमारे मौज भरे मस्ती के।
वो भी क्या दिन थे जब हम रहते थे मस्ती में।
ये तो छोटी झलक हमारी,बचपन के सावन की।
लेकिन अब क्या है––
ना सावन, ना झूले, ना टर्र–टर्र की आवाज,

ना इधर-उधर कीड़े-मकोड़े की है अब मार।
पंतिगे भी अब भूल चुके हैं,चमक में मंडराना,
और तो और पपीहा भी है, भूल चुका है बागों में गाना।
बस अब तो यादें सब की, रूठ गया वो बचपन।
वो भी क्या दिन थे जब हम रहते थे मस्ती में।।

– **शोभा चतुर्वेदी,** लखनऊ

✦✦✦

यादों के झरोखे

लौटा दो मुझको कोई मेरे बीते वे कुछ दिन।
हँसता गाता ,जीभ चिढ़ाता मस्ती का हर पल छिन।
लौटा दो मुझको माँ की वह नरम नरम सी गोदी।
और साथ मे वे यादें बचपन की जो सब खो दीं ।
लौटा दो मुझको मेरी वह सुंदर नन्ही गुड़िया।
कुट कुट दाना चुगने वाली रंग बिरंगी चिड़िया।
नन्हें नन्हें दो पाँवों से दौड़ लगाकर जाना।
भैया की गोदी चढ़ कच्चे आम तोड़ कर लाना।
झम झम करते बादल आँगन मे पानी बरसाते।
उसी बरसते पानी मे हम कूद कूद कर नहाते।
सखी सहेली अपनी गुड़िया मेरे घर ले आतीं।
मेरे सुंदर गुड्डे से उसकी शादी करवातीं।
कपड़ों की कतरन से गुड्डे गुड़िया खूब सजाते।
बना पालकी हाथों की गुड़िया उस मे बिठलाते।
दौड़े भागे ,छुपन छुपाई ,खेले खेल निराले।
नंगे पैरों तेज धूप मे पड जाते थे छाले।
और एक दिन खेल खेल मे बैठ गई डोली मे।
माँ पापा की भीगी पलकें पर ना कुछ बोली मैं।
बन कर दुल्हन बैठ पालकी जब से इस घर आई।
तब से ही उस अपने घर मे मैं हो गई पराई।
फिर भी घर से जुड़ी हुई हैं मैं और मेरी यादें।
कोने मे बैठा बचपन बिन शिकवा बिन फरियादें ।
यादों के रंगीन झरोखों से मैंने देखा है।
मेरे इस घर से उस घर तक एक लंबी रेखा है।

– **मीना चतुर्वेदी,** कोलकाता

✦✦✦

कोरोना और जीवन

विपदाओं ने जब भी घेरा, छाया चारों ओर अँधेरा
तब दिनकर ने राह दिखाई, दूर हुआ घनघोर अँधेरा।।

कितनी लम्बी रात हो चाहे, भोर तो निश्चित ही आती है।
और इसी आशा के संग में काली रात चली जाती है।
कोरोना के कालखंड ने, विपदाओं में सबको डाला।
कितने ही लोगों का जीवन इसने है शेष कर डाला।
निश्चित ही बलि ले ली इसने माता पिता और बच्चों की
पर फिर भी आस बाकी है, बचे हुए परिवार जनों की।।
है नितांत आवश्यक यह कि हम
सब उनका साथ निभाएं।
दीप्तमान दिनकर की भांति, एक नया उजियारा लाएं।
धरती पर जीवन के रक्षक,
कितने बलिदानी ये चिकित्सक।
इस विपदा के कालखंड में झुकता उनके आगे मस्तक।।
अपने प्राण हथेली पर रख जाग जाग दिन और रातभर
अपने प्राण त्यजे बहुतों ने पर बहुतों के प्राण बचाकर।।
है समाज छोटा सा अपना और अमूल्य है हर एक जीवन।
हर अमूल्य जीवन की खातिर,
अब करना है हमको चिंतन ।
है अध्यक्ष चिकित्सक अपने ज्ञानवान,
कोमल उनका मन
उनके उचित मार्गदर्शन से, सबल बनेगा अपना चिंतन।।
जीवन की आशा जागेगी, और सबल होगा अपना मन
भागेगा तब दूर कोरोना, सुखी बनेगा सबका जीवन।।

– **राघव चतुर्वेदी,** फरीदाबाद

✦✦✦

सरस्वती वंदना

जड़ता हरो माँ शारदे
जड़ता हरो माँ शारदे
हे श्वेत पद्म विराजनी
हे मधुर वीणा वादिनी
हे धवल वसना शोभिनी
हे वेद मंगल कारिणी
नव चेतना उपहार दे
जड़ता हरो माँ शारदे
दे ज्ञान, भक्ति, विशुद्धता
हर लो विषम अवरुद्धता
तज मोह,लिप्सा औ व्यथा
हो प्राप्त तुझसे बुद्धिता

नव सृजन का उजियारा दे
जड़ता हरो माँ शारदे
तम, तोम, असत विनाशिनी
हे सत्य-ज्योति प्रकाशिनी
मन-कमल ओज उजासिनी
हे उद्यमी उर वासिनी
निज-भक्ति अतुल, अपार दे
जड़ता हरो माँ शारदे
दो ज्ञान सत्यम सुंदरम
हो सदा मंगल, शुभ-शिवं
दुर्लभ कृपा, भव-तारणं
तव यश सदा उच्चारणं
इस बार पार उतार दे
जड़ता हरो माँ शारदे
जड़ता हरो माँ शारदे
जड़ता हरो माँ शारदे।।

– **पराग कुमार चतुर्वेदी,** कमतरी नोएडा

+++

डाकिया

काली साईकिल ,बड़ा झोला।
निज़ी संदेशे सरकारी चोला।।
जी हाँ ! वही डाकिया जो डाक लाता था।
अपने कंधे पे संदेशे टाँक लाता था।।
लाया हो पहली तन्खाह का मनी-आर्डरर
या नयी नौकरी की बधाई।
फिर डाकिये की खातिर ऐसी
जैसे आया हो नया जमाई।।
उस नीले अंतर्देशीय ने तो गुड़िया का रिश्ता जोड़ा था।
एक छुटके से कागज ने गली के चार
लड़कों का दिल तोड़ा था।।
बिमला बुआ की चिट्ठी सबसे
अजब अनोखी होती थी।
बाकी सब ठीक है ये लाइन
हर लाइन के बाद जरूरी होती थी।।
बड़ों को प्रणाम और बच्चो को प्यार।
बाबूजी की दो लाइने अम्मा पढ़वाती कितनी बार।।
वेसे चिट्ठियाँ तो कईयों की पढ़ता था
बूढ़े काका की लिख भी देता था।
कितने सलीके से उनकी बेचेनी को
उसने शब्दो मे समेटा था।।
दुख भरे तार भी बिना झिझके पहुंचाता था।
बस स्याह चेहरे पे कुछ पीलापन उभर आता था।।
इतने बरसों में बन बैठा था आधे गाँव का राजदार।
बहुत उम्मीदों से होता था उसका इंतजार।।
हाउस-फुल जाता था उसका पी वी आर (PVR)।
जहाँ चिट्ठियाँ थीं हीरोइन और विलेन था तार।।
चिट्ठी सबको चाहिए पर तार से इनकार।
संदेशों के खेल मे डाकिया था सुपर-स्टार।।
जी हाँ ! वही डाकिया जो डाक लाता था।
अपने कंधे पे संदेशे टाँक लाता था।।

– **श्रीमती ऋचा चतुर्वेदी,** गुड़गांव

+++

प्रकाश

प्रज्ञा के सहारे हम स्वयं बढ़ेंगे ही, व,
अन्य साथियों को निज साथ में बढ़ाएंगे।
बाल, युवा, बृद्ध सुख कान्ति से प्रदीप्त कर,
तेजहीनता का तम मूल से हटाएँगे ।।
दूर कर राष्ट्र से दुर्बलता,
जन-जीवन में शक्ति स्रोत सरसाएँगे ।
इस भाँति प्रज्ञा, कान्ति, शक्ति एकत्रित कर,
जन्म-भूमि में प्रकाश राशि चिखराएँगे।
सागर की मृदु लहरों ने किंवा कुमुदिनी की,
इच्छाशक्तियों ने बालचन्द्र प्रकटा लिया।
मृदुल सरोजों के पराग पान हेतु जब,
रवि, निजमुख प्राची गोद से उठा लिया ॥
भू भगत जीवों की तृषित उसाँसों ने यदि,
शून्य वायुमण्डल से जल बरसा लिया।
तब अचरज ही क्या भाषा-प्रेमियों के शुद्ध,
प्रेम ने प्रकाश को प्रकाशित करा लिया ॥

– **श्री गजेन्द्रनाथ चतुर्वेदी,** लखनऊ

+++

जीवन चक्र

मैंने सुना और पढ़ा भी था अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रंथों में,
ऊंचे देवदार और चीड़ के वृक्ष,
ऊंचे बर्फ़ से ढके पर्वत, ठंडी बर्फीली हवाएं, और
शान्ति पूर्ण वातावरण, उठा देता है,
मनुष्य का मानसिक और बौद्धिक स्तर !
ऊंचा उठने की चाहत खींच ले गई मुझे,
ऊंची पर्वत श्रृंखलाओं पर !

जहां के शान्त सौंदर्यमय वातावरण की गुनगुनाहट ने,
भुला दी थीं कुछ दिनों के लिए, स्वजन-सम्बन्धियों की,
रुक जाने को मनुहार करती पुकारें !
बच्चों की आंखों से बहते आंसुओं की गर्मी,
जम गई हिम बिन्दु की तरह कुछ दिनों के लिए !
बूढ़े मां-बाप की बुझती आंखों की आशाएं,
धूमिल पड़ गईं, सूर्योदय के समय चमकते हिम शिखरों में,और मैं खोई इस सम्मोहन में कुछ पल के लिए !उच्चता की अनुभूति यह पहली थी !
फूलों से भरी घाटियों का सौंदर्य, पक्षियों का यदा-कदा सुनाई देता कलरव,
झरनों का निनाद और ध्यानस्थ ऊंचे शिखर,
मनमोहक उच्चता का अभिमान लिए--
डूबी रहती थीं उनके सम्मोहन में आंखें !
तभी एक दिन ----
कलकल -छलछल करती पर्वतीय सरिता ने,
यह सम्मोहन तोड़ा,
प्रश्न उठा मन में--
इतनी ऊंचाई में जन्मी यह भोली नदी
क्यों ? क्यों जा रही है नीचे मैदानों की ओर ?
जिन ऊंचाइयों को छूने के लिए,
तोड़े मैंने सारे सांसारिक बंधन,
वहीं से अकुलाइ हुई सी यह पागल सी नदी,
क्यों? क्यों बहती जा रही नीचे और नीचे ?
अचानक मन उदास हुआ, याद आई मैदानों की,
जहां का आकाश, मीलों-मीलों तक विस्तृत था,
ऊंची पर्वत श्रृंखलाओं में क़ैद- टुकड़ों में बंटा नहीं !
ट्रेन से सफ़र करते समय,
दूर तक दिखाई देते
फैले खेत-खलिहान !
धरती के उदार हृदय के वरदान से लगते थे !
धूप की गर्मी में तपते किसान, श्रम बिन्दुओं से सींचते जीवन कण !
स्वजन-सम्बन्धियों के सुख-दुःख में शामिल होना,
हंसी -किलकारियों की गूंज, दुःखते दिलों के प्रतीकरूप,
आंसुओं को पोंछते कोमल हाथ !
बुढ़ापे से झुकी कमर, झुर्रियों से भरे हाथों को थाम,
थकते जीवन को सहारा देने का अपरिमित संतोष !
चूड़ियों की खनक, मेंहदी से सजे,
सुगन्धित कोमल हाथ,
चूनर की ओट से मुस्कुराते नयनों की चमक !
जीवन के महकते आंगन को छोड़--
ऊंचाइयों को छू लेने की चाह की पूर्ति के लिए--
क्या-क्या खो दिया, अचानक यह
हुआ अहसास !
उस ऊंचाई पर पहुंच कर केवल मैंने ही तो पाया संतोष,
केवल अपनी अस्मिता का ही तो किया मैंने विकास !
केवल मैं ही तो पहुंची छूने ऊंचाई को !
और ---
मैं लौट चली नदी के साथ-साथ अपने जीवन के आंगन, मैदानों की ओर !
नदी जो जन्मी ऊंचाइयों में,
जाती है मैदानों के आंचल में,
तपती धरती के सीने को सींचती, मुस्काती है,
फैली हरियाली को सहलाती,
अनगिनत आत्माओं को तृप्ति का अमृत पिलाती हुई--
अन्त में प्रियतम सागर की बांहों में सिमट खो जाती है !
जीवन संघर्ष की ऊष्मा से हल्की हुई,
तृप्ति से तरल सरिता,
अस्तित्व खो अपना, फिर से ऊंचाइयों को छूने को उड़ जाती है !
हिम की सख़्ती, सूनेपन और ताप से अकुला कर,
फिर से झरने का रूप धर,
नई यात्रा पर निकल जाती है !
यही तो है जीवन चक्र,
आत्मा-परमात्मा का मिलन-बिछोह का क्रम !
बिना कर्म के जीवन की सार्थकता ही क्या ?
यही सोचती मैं, ऊंचे पर्वत शिखरों से--
नीचे-बहुत नीचे - मैदानों की ओर --मंथर गति से बढ़ी जाती हूं !!

- **डॉ. श्रीमती विनीता (नीरजा) चतुर्वेदी,** नई दिल्ली

+++

ख्वाबों की रौशनाई रंगीन ही हो,
गो ज़ुल्फों में सियाही रहे न रहे !
ज़िन्दगी के रोज़, रोज़ ही बढ़ें,
चाहे उम्र दिन-दिन ढलती रहे !
खिजां में गुलों को सम्भालो ज़रा,
बहारों तक चमन ही रहे न रहे !
दो घूंट ज़िन्दगी के भर तो लूं,
फिर साकी की नज़र फिरे न फिरे !
मयखाने का जलवा हम से हो,
कल रंगीनी-ए-महफ़िल रहे न रहे !
आवारा हूं, आवारा ही रहूं,
तहज़ीब-ए-दुनिया जंचे न जंचे !

– **अविजित आवारा,** जयपुर

+++

आइये थोड़ा चिल्ल पो होना चाहिए...
आदतों से मजबूर तुम भी हो ,
आदतों से मजबूर हम भी है।
ना कुछ बदलना चाहिए ,
आइये थोड़ा चिल्ल पो होना चाहिए।।
आईने ने जो कुछ कहा ,
जो भी कहा सच कहा।
सच क्या कबूल होना चाहिए ?
आइये थोड़ा चिल्ल पो होना चाहिए।।
सन्नाटे को चीरती सनसनी ,
सुन्न कर देती है इंसान को।
आज के इस दौर मे क्या सुन्न होना चाहिए ?
आइये थोड़ा चिल्ल पो होना चाहिए।।
राज की बात अब खुल के होनी चाहिए,
राह चलते इंसान को फिर छेढना चाहिए।
एक उड़ता तीर ओर उसको देना चाहिए।
आइये फिर से थोड़ा चिल्ल पो होना चाहिए।।

– **अभय राज चतुर्वेदी,** गुरुग्राम

+++

आज तो आपने हद ही कर दी

आज तो आपने हद ही कर दी
मेरी निजी ज़िंदगी के तहखाने में
घुसने की बेइंतहां ज़िद ही कर दी
सोचा था आपको
पलकों में बंद करके
आपको आपसे ही चुरा लूंगी
पर ये क्या किया
क्या आपको मालूम नहीं
किसी की ज़िंदगी के तहखाने में
प्रवेश इतना आसान नहीं
जीवन मेरा है, उसका आकर्षण,
प्यार सिर्फ मेरा है
आपका अपनापन दर्शाना अच्छी बात है
पर मेरी ज़िंदगी के किले की दीवार
बहुत ही मोटी है
मेरी इच्छा के विरुद्ध
उसमें प्रवेश वर्जित है

– **डॉ. चित्रा चतुर्वेदी,** कटनी

+++

प्रकृति

अरसा, आँसू चुरा लिए बादल ने फिर जम कर बरसा,
दाँतों में चमकी थी बिजली उसे हुआ अरसा
विविध रंग भावों के तो अब सहज नहीं मिलते,
यदि चेहरे पर मिलें किसी के तो लगता डर सा।
कितने दिन बीते हैं जब से खुद से नहीं मिला,
सबने बना रखा है अपने चारों ओर किला,
अपने बाहर ढूँढ रहे सब खुशियों के फव्वारे,
मन के उपवन में देखो नरगिस का फूल खिला।
पूरे नहीं किए मौसम ने सभी पुराने वादे
राजनीति के नहीं खिलाड़ी हम हैं सीधे–सादे,
क्या मौसम भी भ्रष्ट हो गया, बदली अपनी राहें,
गर्मी में अब लू नहीं चलती, वर्षा भी जल ना दे।
ढलती रात अगर रुक जाती, चाँद ठहर जाता,
अगर हवा से मित्रत करता, बादल को ले आता,
चाँद छिपा लो अपने पीछे, मैं बादल से कहता,
लुका छिपी का खेल मगर, क्या बादल को भाता।
आज रात भर चाँद अकेला आसमान में सिसका,
रजनी की आँखों में आँसू जो ठहरा वो किसका,
किसी तारिका ने जब आँखें झपका किए इशारे,
नहीं रुका फिर चाँद वहाँ पर, धीरे से खिसका।
ओस आँसू कहा और जब मैंने नहीं माना
और जब मोती कहा तुमने नहीं माना
एक सूरज की किरण आई न कुछ बोली
ले गई चुपचाप आँचल में न मन माना

– **नवीन चतुर्वेदी,** इटावा/ जबलपुर

+++

मैं मधुर स्वर चाहता हूँ

मैं मधुर स्वर चाहता हूँ
रात्रि के पिछले पहर में,
और इस गहरे तिमिर में,
मैं निकल नैराश्य नद से,
आश की अरुणाभि उजली,
एक लय भर चाहता हूँ।
मैं मधुर स्वर चाहता हूँ।।
रात्रि कबकी हो चुकी है,
प्रकृति आधी सो चुकी है,
किंतु मैं लघु दीप सम्मुख,

तुम्हारे लघु स्मरण में,
जागरण ही चाहता हूँ,
मैं मधुर स्वर चाहता हूँ।

दौड़ कर सरिता चली है,
रात्रि आधी जा ढली है,
मूक इस वनस्थली में,
निज विगत स्नेह का, सखी!
एक स्वर गाना चाहता हूँ,
मैं मधुर स्वर चाहता हूँ।।

हो गई तुम दूर मुझ से,
पर तुम्हारा प्रेम अब तक,
है बना भरपूर मुझ से,
खो चुका तन किंतु उसकी,
याद में मन चाहता हूँ,
पी सके जो शाप का विष,
दीप्त मय वर चाहता हूँ,
मैं मधुर स्वर चाहता हूँ।।

– **मेजर जनरल एम. एन. रावत,** इलाहाबाद

✦✦✦

गजल

परेशां गम मेरे पास आके खुश है,
कि रहने का चिरस्थायी ठिकाना गया है।
वो वर्षों संग रहा सातो दिनों चौबीसों घंटे
मिलन का जिक्र भी अब तो सताना बंद हो गया है।
गमी लैला के घर मजनूं वहाँ मातम को पहुँचे,
मौत भी मिलने का वाजिव बहाना हो गया है।
नयी चीजों का आशिक है जमाना,
नया गम दीजिये पिछला पुराना हो गया है।
खजाना कर न पाया था गमों का आना जाना,
करेगा अब सिर्फ आना ही आना हो गया है।
मोहब्बत थी हमें, वो थे हमारे,
मगर उस बात को गुजरे जमाना हो गया है।
चलो अब इश्क की वादी में घूमें,
हमारी उम्र का मौसम सुहाना हो गया है।
ना अब उनसे तकल्लुक ना समय आ कोई बंधन,
बही तो रोज का आना जाना हो गया है।।

– **योगेश चतुर्वेदी,** उज्जैन

✦✦✦

विनती

रिमझिम बरसै मेह
कामिनी करै श्रृंगार।
ऊंची अटारी
होय पंखा का हेलना।।
इतना कर करतार
फिर नहीं बोलना।।
पोली मिल जाये भीत
फिर नहीं खोदना।।
होय भूरी भैंस को दूध
शक्कर नहीं घोलना।।
इतना करना करतार
फिर नहीं बोलना।।
जोरू मारे से हँसि दे
करे न ओलना।।
इतना कर दे भरतार
फिर नहीं बोलना।।

– **राजेन्द्र नाथ चतुर्वेदी,** रज्जन, कोलकाता

✦✦✦

रूप की धूप

खिल ऊठे सुमन सभी
धूप के सुसंग में
लौटे हैं प्राण अब
जीवन उमंग में
खिल उठे सुमन सभी
धूप के सुसंग में।
रूप की झील में
सुखते किनारे हैं
सावन के छूने
से दौड़ते वे सारे हैं
अंतः की धाराएं
पंकज के रूप में
खेले उमंग में
खिल उठे सुमन सभी
धूप के सुसंग में।
जीवन के संग में
दूर-दूर तक यहां
कोई ना आएगा
कतरा कतरा धूप में
क्षणभंगुर जीवन जल जाएगा
पलाश सीधे देह हैं

दग्ध – दग्ध सा यह रूप
किस की बाहों में गिरे
किस–किस के रंग में
खिल उठे सुमन सभी
धूप के सुसंग में
तुम नहीं आओगे
तो भी गुजर जाएगा
संजय स्मृति कोश
तब भी काम आएगा
भीड़ में खो जाएंगे
तारों के झुंड में
सागर की लहरों में
पर्वतों के सिंह में
दर्पण की नियति में
रुप का छलावा है
धरती के मोह में
सूर्य जल जाना है
कितने ही सूर्य उगे
कितने उजाले हो
रहना है घाटों में
सत्य के चरणों में
खिल उठे सुमन सभी
धूप के सुसंग में
लौटते हैं प्राण अब
जीवन उमंग में।

– **मनोहर प्रकाश चतुर्वेदी,** जयपुर

+++

यादें बिछोह की

नैन राह निहारे उस पथिक की
जो वापस ना आने के लिए गया
मन हो गया बैचेन आये ना चैन
जो हजारों प्यार का वादा करके गया
जीना है उसके बिना ना जाने कब तक
सपनों से, यादों से ना जाने का वादा कर गया
उसकी बातें , उसकी यादें आज भी हैं पास मेरे
पर उससे मिलने की हसरत तूफां उठाती है
चाह मेरे मन की ऐसी जो पूरी ना हो पाए
नयन भी अश्रुधारा से तन मन भिगोते हैं
बीत जाएंगे साल दर साल बिन तेरे
इतनी दूरियाँ क्यों बन गई मजबूरी मेरी
चले गए हो हम से दूर तो मनाऊ कैसे
दिन रात हो पास मेरे तोभूल पाऊंगी कैसे
हो जहाँ भी मन से प्रार्थना हमेशा रहेगी
दे प्रभु तुम्हें सुख शांति से भरी नयी जिंदगी
मेरी प्यारी बहना ने प्रार्थना यही की हैं

– **मीनू चतुर्वेदी,** नागपुर

+++

अब भोजन है, मनुहार नहीं

अम्माँ थीं तो घर घर था,
सबकुछ उन पर निर्भर था।
घुलकर चूल्हा जलता था,
सुख से जीवन चलता था।
भरी दाल से रही पतीली,
सचमुच होती बड़ी रसोली।
तरकारी से भरा कठौता,
ब्यालू में आकर्षण होता ॥
थाली ले बैठें सब भाई,
रोटी नंबर से ही आई।
घर में पली हुई थी गया,
भरी दूध से तचे कढ़या॥

जादू था अम्माँ के हाथ,
मन से खाते झोर भात ।
जबसे हम कुछ बड़े हुए,
भोजन बनता खड़े हुए।
गई फूँकनी और कठोरता,
मिट्टी का चूल्हा भी सोता।
मेहमान अब कम आते हैं,
बड़ी व्यस्तता बतलाते हैं।
जल्दी में अब खाना भी,
कम है आना–जाना भी।
अब तो किचेन चमाचम है,
घर क्या होटल से कम है।
अब भोजन है मनुहार नहीं,
एक और का प्यार नहीं।
अम्माँ भूख भौंपती थीं,
चेहरा देख नापती थीं ॥
सबको ऐसी कला कहाँ ?
अम्माँ सा सुख भला कहाँ ?

– डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा

+++

उज्ज्वल भविष्य

कविता संग्रह

चार कोस का चांद प्रकाशित हो चुका है।
सिर पर लिखूं या इस ज़मीं की देह पर लिखूँ
कश्मीर पर लिखूं या मैं लेह पर लिखूँ
दुश्मन को जो बताये हैं उस निशान पर लिखूँ
अच्छा ये रहेगा कि हिंदुस्तान पर लिखूँ

लिख दूँ मैं हिमाचल पर या पंजाब पर लिखूँ
उत्तरांचल के बर्फीले शबाब पर लिखूँ
हरयाणा या दिल्ली की शान पर लिखूँ
अच्छा ये रहेगा कि हिंदुस्तान पर लिखूँ

राजस्थान की मिट्टी विशेष पर लिखूँ
मीठे से मैं उत्तर प्रदेश पर लिखूँ
बिहार झारखंड की मैं खान पर लिखूँ
अच्छा ये रहेगा कि हिंदुस्तान पर लिखूँ

बंगाल पर लिखूं मैं या आसाम पर लिखूँ
अरुणांचल या नागालैंड की शाम पर लिखूँ
मणिपुर मिज़ोरम की दास्तान पर लिखूँ
अच्छा ये रहेगा कि हिंदुस्तान पर लिखूँ

बापू के अहिंसा वाले देश पर लिखूँ
गुजरात पर लिखूँ या मध्य प्रदेश पर लिखूँ
छत्तीसगढ़ ओडिशा की आन पर लिखूँ
अच्छा ये रहेगा कि हिंदुस्तान पर लिखूँ

जोश में उफनते हुए एक राष्ट्र पर लिखूँ
गोआ पर लिखूँ या महाराष्ट्र पर लिखूँ
कर्नाटक और केरल के सम्मान पर लिखूँ
अच्छा ये रहेगा कि हिंदुस्तान पर लिखूँ

तेलंगाना पे लिखूँ या मैं आंध्र पर लिखूँ
मैं पुडुचेरी या लक्षदीप के प्रांत पर लिखूँ
तमिलनाडु पर लिखूँ या अंडमान पर लिखूँ
अच्छा ये रहेगा कि हिंदुस्तान पर लिखूँ

स्वर्ण मंदिर पर लिखूँ या सैन्ट मेरी पर लिखूँ
हजरत बल पर लिखूँ या बांके विहारी पर लिखूँ
मैं राम पर लिखूँ या रहमान पर लिखूँ
अच्छा ये रहेगा कि हिंदुस्तान पर लिखूँ

– **सौरभ चतुर्वेदी, सारांश,** लखनऊ

+++

सीख

कोरोना की क्या बात,
वह रिश्ते हमें दिखाता है।
अपनों को तो अपनों से,
हम सभी को दूर भगाता है।
हाथ पैर धोकर घर में घुसना,
हाथ जोड़ नमस्कार करना,
सादा भोजन उच्च विचार,
अब इन्हीं पर टिका सारा संसार।
जो संस्कार हम भूल चुके थे,
प्रियजन हमसे छूट चुके थे,
इन संबंधों को याद दिलाया,
कोरोना ने हमें सिखाया।
तुम्हारे दिए रास्ते पर चलेंगे हम
प्रियजनों के साथ रहकर तुम से लड़ेंगे हम,
घर बैठकर तुम्हें हराएंगे,
अपनों के साथ खुशी मनाएंगे।

– **अमृता चतुर्वेदी,** कोलकाता

+++

मिसाइल वार्ता

एक दिन सीमा पर,
बात चल रही थी।
अग्नि और गौरी ,
दोनों रूबरू खड़ी थीं।
गौरी बोली अग्नि ,
तू हट जा पीछे वर्ना ,
नाम मेरा गौरी,
में तुझपर ही गिरूँगी।
एक दिन सीमा पर ......
अग्नि बोली सुन ले,
ओ पाक की लढेती ,
नापाक बात न करना।
नाम मेरा अग्नि,

जलकर तू राख होगी,
ढूंढेंगे तेरे आँका,
हाथों न खाख होगी। -2
एक दिन सीमा पर ......
सुन गौरी लौटी घर को,
कहने लगी ओ आँका,
क्यों रखा नाम गौरी ?
क्या गाज ना पता था।
गौरी से इस जहाँ में,
है कौन डरने वाला ?
खेलेंगे सब यहाँ पर,
ये भारत में रहने वाली,
अग्नि कह रही थी।
एक दिन सीमा पर ......

– **मोहन (सूर्य कान्त) चतुर्वेदी बैरागी,** रिसड़ा

✦✦✦

बूढा.वक्त

वक्त के तराने गुन गुनाती रहती हूँ
इक तराने से दूसरे, वक्त उछालती रहतीं हूँ
वो वक्त भी था जब, साँस लेने की फुरसत न थी
आज बची साँसों की गिनती में, वक्त गुजाऱ लेती हूँ
अब घडी.अलार्म साढे.पाँच का बजाती नहीं है
क्यूँ ये वक्त की कद्र, अब करती ही नहीं है
घडी.की टिक टिक या साँसों की धमनी
कौन रुकेगी पहले? जाने वक्त बताता ही नहीं है
केश वक्त की सफेदी में रंगे हुए हैं
चेहरे की रंगत कब की गुज़र भी गई है
सब अपने अपने वक्त से बँध गए हैं लेकिन
मेरी बेडियाँ वक्त से खुल सी गईं हैं
कोई तो किसी वक्त माँ कहाँ हो तुम कह जाए
किसी की पुकार कहीं से कानों में पड़ जाए
इंतिजाऱ की घडियाँ सामने बिखरी पडी.हैं
किसे वक्त है जो अब इनको संवारे- सुलझाए
नज़र भी कहाँ देख पाती है साफ वक्त को
सुईयाँ दिखतीं कम, चुभतीं है ज्यादा आँखों को
हाथ पैरों में अब दम ही कहाँ है ?
अब किसी की ज़रूरत मुझमें बाकी बची ही कहाँ है?
कितना देखूँ चक्कर खाते, सूरज के रथ को
कितने वक्त बैठी रहूँ ,अगले खाली वक्त को
कितने वक्त से समझा रही हूँ तुमको , प्रभूजी
वक्त मेरा तुम किसी मरते जवान की साँसों को दे दो
वक्त को खुद भी मेरी ज़रूरत अब कहाँ है
इस धरती माँ से मेरा वक्त आज ही सिमटा दो
बस बहुत हुआ ये अकेले वक्त में तड़पना
मेरा वक्त किसी माँ की खाली गोद में भर दो
मेरा पुनर्जन्म किसी माँ की सूनी गोद में भर दो

– **अनुपमा चतुर्वेदी,** कुवैत

✦✦✦

बड़ी हो गयी है कितनी

पीठ पे बस्ता टाँग के अपना
हिला हाथ वो स्कूल चली,
बड़ी हो गयी है अब कितनी
मेरी वो नन्हीं सी कली।

अभी तो आयी थी गोदी में
अभी तो पहला कदम चली,
अभी तो बोली थी बस ' मम्मी '
अपनी भाषा में तोतली।

चुपचाप चली जाती है अब
आँखों में नींद भरे अपनी,
दूर वो मुझसे जाते में
अब नहीं मचलती है उतनी।

झिलमिल करती आँखें उसकी
उस पर पलकें भी घनी-घनी,
ओढ़ दुपट्टा मेरा सर पे
बोली मैं दुल्हन हूँ बनी।

आज बनी है खेल-खेल में
कल बनेगी वो दुल्हन असली,
यूँ ही एक दिन आ जायेगा
जब वो छोड़ चलेगी मेरी गली।

देख नहीं पाउँगी पल-पल
फिर मैं सूरत उसकी ये भली,
टोक नहीं पाउँगी उसको
फिर बात-बात पे घड़ी-घड़ी।

अब तक जो हर काम को अपने
मुझपर थी निर्भर वो रही,
फिर भूल जायेगी माँ को वो
रम कर अपनी दुनिया में कहीं।

काश संजो के रख पाती
हर इस पल को अपने पास कहीं,
यादों को भर लेती नैनों में
पल-पल जो मुझसे छूट रहीं।

भाग रहा है तेज़ गति से
ये वक्त है कि रुकता ही नहीं,
ले जायेगा बचपन उसका
मैं रह जाउँगी यहीं कहीं।

पीठ पे बस्ता टाँग के अपना.... ॥

– **पारुल चतुर्वेदी,** कुवैत

✦✦✦

माँ

करते जिसका सब मान
माँ होती बड़ी महान
जन्म दिया है जिसने हमको
पाला पोसा जिसने हमको,
चोट लगे तो दर्द उसे होता
ये है माँ बेटे का रिश्ता,
मेरा बेटा पढ़ लिख जाए
देती अच्छा ज्ञान
करते जिसका सब मान
माँ होती बड़ी महान........ ।
लोरी गा कर लाल सुलाये
बैठ सिरहाने रात बिताए,
बच्चे को सूखे में सुलाती
और खुद गीले में सो जाती,
देवी कहता है जग
जिसको, और करे गुणगान
करते जिसका सब मान ।
मां होती बड़ी महान ।

– **आलोक चतुर्वेदी,** जयपुर

✦✦✦

हे युवा

हे युवा प्रेरित हो
हे युवा ! प्रेरित हो
समाज व राष्ट्र के प्रति जागृत व संगठित हो
वीरों के रक्त से अलंकृत धरा
भावना राष्ट्रप्रेम सिखाती है।
सुन! चीत्कार मातृभूमि की
सुप्त बल उठाती है!
भारत की पावन धरा पे
दुश्मन कदम बढ़ाते हैं।
क्षितिज की भांति है शौर्य हममें
प्रदर्शित है शक्ति शत्रु की
चलो हम प्रताप बन जाते हैं।
जीवन खामोश सफर सी गुजरती गई
कोई याद पुरानी आंखों में
धुंधली सी तस्वीर बनकर उभरती रही
वक्त इनके दरमियां
हाल अपना कुछ यूँ हुआ
बनके दवा, शराब जहन में घूमती रही
एहसास दर्द का अब
ना गिला किसी के गम का रहा
अश्क बहाते किसी चोट पे हम
खुद किस्मत ही हम पर हंसती रही।

– **विशाल चतुर्वेदी,** हिंडौन

✦✦✦

ऋण पिता का

तेरी राह के कांटे चुनकर,
फूलों को बिछाता वो।
खुद की आभा शोभा खोकर,
धूलों से बचाता वो।
तेरे स्वप्न-महल नीवों में,
अपने ख्वाब दबाता वो।
जब जब तेरा बल कम हो,
संबल पहुँचाता वो।
तुझको आगे खुद को पीछे,
रखकर भी मुस्काता वो।
धरती पर वो तेरा ईश्वर,
उसका ऋण कैसे चुकता हो।

– **मयंक मोहन चतुर्वेदी,** मार्मिक

✦✦✦

इतना सन्नाटा क्यों हैं भाई

इतना सन्नाटा क्यों हैं भाई
चलें थे एक साथ , आज सब मौन हैं।

कल जो मुखर थे आज सब मौन हैं।

सृजन के ठेकेदार आज सब मौन हैं।
स्वर जिनके थे प्रखर, आज उनके टिव्वटर मौन हैं।
खिलखिलाहट मातम बन गई
कुल के दीपक की लौ बुझ गई
राखी पर वो कलाई सुनी रह गई
करते थे प्रशंसा कल तक आज वो सब मौन हैं।
था सपनों में उसके दम, चांद तक थी उड़ान,
तारों से था उसका नाता,यंही थी उसकी पहचान,
स्वप्ननगरी का वो राजकुमार,
चेहरे पर थी हमेशा मुस्कान
जीना था अपनी दम पर, उड़ना था ऊंची उड़ान
आज उस स्वप्ननगरी का हर वाशिंदा मौन हैं।
मन के भीतर भावनाओं का ज्वार बहुत हैं,
संवेदना हैं गहरी पर साथ में सवाल बहुत हैं,
लग रहा हैं ऐसा इस अपराध में इंसान बहुत हैं,
जल रही हैं सच की आग, पर पेज थ्री आज मौन हैं।
मन उदास,आंखें नम,करुणा मौन क्यों हैं भाई,
सवालों के घेरे में आ रही सूरत पहचानी क्यों हैं भाई,
चला गया एक तारा आसमान में,
फिर ये छटपटाहट क्यों हैं भाई।
पूंछता हैं वो छिछोरा मायानगरी से
इतना सन्नाटा क्यों हैं भाई।

– **समर्थ चतुर्वेदी,** मुम्बई

✦✦✦

पर्यावरण रक्षा

पर्यावरण रक्षा
यह खुला आसमाँ
यह हरी सी जमी ,
यह पेड़ों की सरगम
और पत्तों की नमी
ये फूलो की खुशबू ,
ये कलियो की हसी
ये घटाओं की रौनक
ये हवाओं की मस्ती ,
ये चिड़ियों की चह –चह
ये मिट्टी की खुशबू ,
ये सावन बरसना
ये हरियाली धरती
है ये मेरा सपना प्रदुषण मुकत धरती,
गगन हो अपना ।

– **अंशुल चतुर्वेदी,** लखनऊ

✦✦✦

गांव में आयी

भीषण बाढ़ मची तबाही।
गरीब जनता को देख
गांव के सेठ को
दया आयी।
उसने ग्रामीणों
को युक्ति
समझाई।
जब खाने को नहीं दाना।
क्या करेगा खजाना ॥
सोना, चांदी जो हो हम ले लेंगे।
पर अपने भाइयों
की मदद अवश्य करेंगे।
किसी की पायल
किसी की झुमकी
किसी का हार। सेठ जी ने
थोडा राशन दे किया स्वीकार।।
जिन पर नहीं थे जेवरा
उदार हृदय में
उनके लिये भी नरम तेवर।।
मोटे ब्याज पर
बांटा कर्ज।
इस तरह निभाया
मानवता का फर्ज
अब सेठ जी
ने फरमाया। जब कोई आगे
न आया। तब यह सेवक
काम आया।
ग्रामीणों ने भी
स्वीकृति में सिर हिलाया।
पैसा तेरी माया !!

– **अपूर्व चतुर्वेदी**

✦✦✦

मेरा घर

अलौकिक सुख जहां पर।।
इसकी हर दीवाल पर मैने की थी कलाकारी
ये वही घर है

जहां गूंजती थी मेरी किलकारी
यहां से जुदा होने का नही करता था मन...
फिर हुआ ऐसा
की वक़्त ने किया वह सितम...
छूट गया वह आंगन व छत...
याद आती है तेरी वफादारी
मेरी हर गलती को क्षमा
देती वात्सल्यमयी दादी।
बाबू की डांट से बचाती
दुलार उड़ेलती माँ
सीधी सादी।।
भाइयों की शक्ति
मित्रों का कोलाहल।
मिलता जिससे बल।।
आज
आशियाँ तो मिल गया दूसरा.
पर न भूल सके इसकी फुलवारी
सजाया था जिसको बड़े जतन से मेरे पुरखो ने...
याद रहेगी इसकी होली और दीवाली।
पसरी है फर्श पर सर्वत्र
यादे ही यादे
यही पर सीखी मैंने दुनियादारी
निश्चित नही है ठहरने का स्थान
पर न भूल पाएंगे तेरी कर्जदारी
मेरा घर भावना का घरौंदा
स्मृतियों का आकाश।
आज भी वहां है मेरा
सुख,शान्ति, सब कुछ
फिर लौट आये बचपन
रेडी,आईस पाईस,झूले
काश! काश! काश!

–**मनीष चतुर्वेदी,** इटावा/लखनऊ

+++

सीखा था हमने

पापा की ऊँगली
पकड़ चलना।
पापा ने ही सिखाया था हमको
गिरकर संभलना।।
नाम से पापा के
मिली हमें पहचान।
अपने से पहले
उन्होंने सदैव रखा
हमारा ध्यान।।
उनके चेहरे पर
रहती थी सदा मुस्कान।
पापा ने हमारा हौसला
इस कदर बढाया।
हमारी कमजोरी को भी
हमारी ताकत बनाया।।
दोस्त बनकर उन्होंने
हमारा साथ निभाया।
अपने अनुभव से
हमें देते थे ज्ञान।
पिता !,सचमुच
धरती पर भगवान।।

– **सिद्धार्थ चतुर्वेदी,** लोनी/गाजियाबाद

+++

हिंदी

हिंदी सिर्फ एक भाषा ही नहीं
हिंदी है आत्मा हमारी
हमें देती है एक पहचान
समूचे विश्व में गूँजता
है यह गान
जय हिंदी जय हिंदुस्तान
हिंदी तो कल्याणी है
जाने कितने कवियों की वाणी है
हिंदी से सम्मान हमारा
हिंदी है अभिमान हमारा
जन जन के मन की भाषा हिंदी है,
भारत की परिभाषा हिंदी है,
हिंदी नहीं तो हिंदुस्तान नहीं
भारत का स्वाभिमान हिंदी है,
हिंदी तो भारत माँ के
भाल की बिंदी है
हमें फक्र है
भाषा हमारी हिंदी है।

–**प्रीति चतुर्वेदी,** आगरा

+++

दिल

दिल हूँ मैं तुम्हारा
तुम्हारे लिए ही धड़कता हूँ

तुम रहो सही सलामत
इसलिए अनवरत चलता हूँ
सिर्फ और सिर्फ तुम्हारे लिए ।
तुम रहो खुश, इसलिए
मैं उसके लिए भी धड़कता हूँ
जिसके लिए तुम जीते हो
तुम दुखी न हो जाओ इसलिए
मैं उसके लिए भी धड़कता हूँ
जिसपर तुम मरते हो
इतना सब करने के बाद भी
जब तुम मेरी नहीं सुनते हो
बस, तभी परेशान होते हो तुम
मुझसे निकट, और कोई नहीं तेरा
इसलिए बस मेरी ही सुन
और मेरे अनुसार ही चल
दिल की सुनने वाले
कभी अकेले नहीं होते
मैं हूँ, सदा ही तेरे साथ
नहीं छोड़ूगा कभी तेरा हाथ
बस चल, मेरे ही साथ ।

– **संजय मिश्रा,** कानपुर

✦✦✦

अंधेरा

माना सफ़र में अंधेरा है
माना आगे सफर में अंधेरा है, राह बड़ी है,
अंधेरे– अंधकार से डूबी हुई रातें हैं.....
अब कौन राह बतायेगा,
जीवन पाठ सिखायेगा, कौन,
सब्र से रहना और जीना सिखाएगा......
कौन धर्म पाठ बतलायेगा...
कौन बतलायेगा कि आगे क्या है...
कौन... खुद जल...
अब...रोशनी...बतलायेगा. कौन...
करुणा में रहकर.... बहना सिखलायेगा....
पता नहीं.....।
माना आगे सफ़र में अंधेरा है...
आँसू भी पलकों से झलकेंगे.....।
जब मन भर भर आयेगा..... कौन
गले तब लगाएगा.....।
कौन प्रेम प्यार झलकायेगा.....
पता नहीं.....।
अब कौन पढ़ेगा मेरे माथे की लकीरों को....
अब..कौन
वातसल्य प्रेम झलकायेगा.....।
अब कौन फेरेगा हाथ..
मेरे माथे...पर....
आशीष..का. प्रेम का....
अपनत्व का...
सुरक्षा का...विजय का...
प्रेम प्रार्थना का....।
माना आपकी अब तक की नसीहत साथ है.....
पर अब आगे के पाठ कौन सिखलायेगा.......।
कौन पल –पल ..राह आसान....कर जाएगा.....।
कौन पूछेगा ....
मेंरी ख्वाइशों को...
हर....रोज...हर...पल...?कौन ...
अंधेरे...में...भी...
मेंरे...लिए...दीप...जलायेगा.?
माना आगे सफर में अंधकार है,
राह कठिन है, बड़ी है और पापा
आप साथ नहीं हों......।
माना आगे सफर में अंधेरा है,
राह बड़ी है,दुर्गम है।
काटें भी आएंगे...घोर..घटायें... घररर...घररर... चिलायेंगी....तब कौन राह...सहज....कर जाएगा......मुझको अपने...गले.... लगायेगा ...और...प्रेम... से..सर्.. पर... अपना... हाथ...फेरायेगा...।
अब कौन
अपनी अलमारी में से चीजें निकाल कर हम सभी पर.....
प्रेम प्रभा झलकायेगा....अब कौन हमें अपनी गोद में सुलायेगा.......हमारे लिए अब कौन गायेगा.....और अपनी प्रेम वाणी झलकायेगा..हमारे लिए अब कौन प्रेम सुधा बन पाएगा... अब कौन कष्ट की रातों में हमारे.... लिए... वज्र बनकर आयेगा.और ढाल बनकर हमारे दुख हर ले जाएगा....।
माना आगे सफर में अंधेरा है,राह बड़ी है,
अब कौन कहेगा विपदा में मैं हूँ चिंता मत कर,
अब कौन सिखलायेगा ज्ञान की बातें....
जीवन जीने के तरीके......
मानस की बातें....
सत्य,प्रेम, करुणा की बातें....।
माना आगे सफर में अंधेरा है,

राह बड़ी है, लंबी है.....
आगे अंधेरा है......... पापा.....
आप ऐसे अचानक हाथ छोड़ जाओगे,
पता ही नहीं था।
पापा, आप ऐसे छोड़ जाओगे, पता ही नहीं था।

–**मनीष छूक्की,** ग्वालियर

✦✦✦

आसमां

ये जो दूर तक दिखता है आसमां,
इसमे जहां और भी हैं। ये जो शिखर है मेरे कदमों तले,
इससे ऊंचे मुकाम और भी हैं।
वक्त नहीं कि गिला करूं ज़माने भर से,
अभी इम्तिहां और भी हैं।
ये जो दूर तक दिखता है आसमां,
इसमे जहां और भी हैं।
हर रोज टकराता हूं इक नयी शख्सियत से
हर रोज़ होता है राबता इक नई तबियत से,
कह नहीं सकता मिला हूं अपने हर रकीब से
कि टकराने को इंसां अभी और भी हैं।
ये जो दूर तक दिखता है आसमां, इसमे जहां और भी हैं।
उड़कर दूर तक जाना है,इक बार,
इस फैले आसमां मे सबकुछ पीछे रख कर देखूंगा
जख्म सारे इक बार, बैठूंगा कभी जब थक कर,
मेरे पीठ पर खंजरों के निशां और भी हैं।
ये जो दूर तक दिखता है आसमां, इसमे जहां और भी हैं।
मेरे इस सफर में मुसाफिर तो हैं कोई हमराह नहीं,
चलूं किसी के साये मे ऐसी कोई चाह नहीं।
रुकना रुक कर देखना मुझे आता नहीं,
एक ही शख्स पर दो बार भरोसा कर पाता नहीं।
होंगी हर एक की अपनी मुसीबतें,
अपने रोने को अपनी दास्तां और भी है।
ये जो दूर तक दिखता है आसमां, इसमे जहां और भी हैं।

– **कुणाल चतुर्वेदी,** कानपुर

✦✦✦

हमारी नानी

हमारी नानी सरला, सुंदर, सरल, सुबोध,
प्रेम से हृदय है भरा, दूर रहता है क्रोध।
वह है मंजुला, मुख पर है आभा,
हृदय में है ममता मन में है विभा।
प्रेम की मूरत, बुद्धि की सुषमा,
है इनका गौरव और इनकी गरिमा।
कितनी प्यारी हमारी नानी,
है वो झांसी वाली नानी।

– **सुमित चतुर्वेदी,** आगरा

✦✦✦

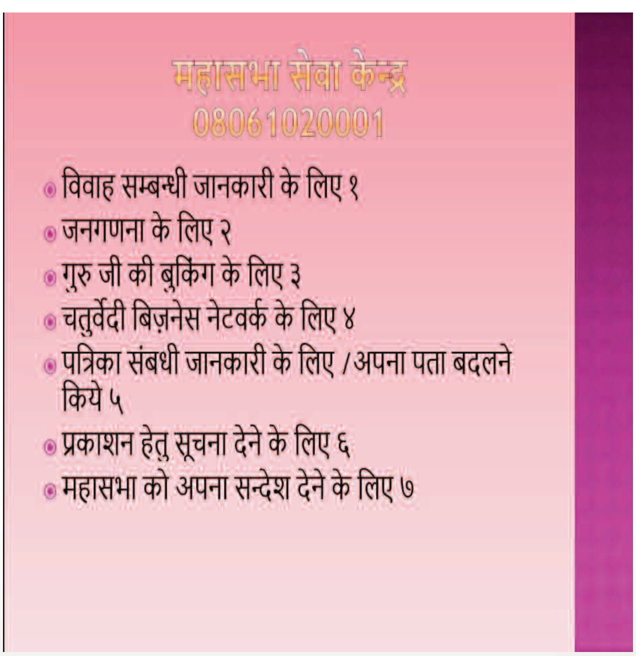

समाज समाचार

* चि. दिवांशु सुपुत्र श्रीमती रेणु एवं श्री शशि चतुर्वेदी सुपौत्र श्रीमती प्रभा एवं स्व. श्री ज्ञानेश चन्द्र चतुर्वेदी (भवानीमंडी/कोटा) का शुभ विवाह सौ. ऐश्वर्या सुपुत्री श्रीमती मंजू एवं श्री जन्मेश चतुर्वेदी (दानपुर/भोपाल) के साथ दिनांक 06 जुलाई 2021 को भोपाल में सौल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री शशि चतुर्वेदी ने 551/– रु. महासभा तथा 551/– रु. चन्द्रिका को सहायतार्थ प्रदान किये। बधाई।

* चि. आयुष पुत्र स्व. प्रहलाद चतुर्वेदी पुत्र श्री मनोज चतुर्वेदी (चंद्रपुर/आगरा/सागर) का मौडलिन इंडिया/ कैडबरी में ए. एस. एम. कानपुर के पद पर पदोन्नति होने के शुभ अवसर पर मनोज जो नेअन्नपूर्णा सहायतार्थ 2000/– प्रदान किए। (र.क्र.–610)

* चिरंजीव कार्तिक चतुर्वेदी पौत्र स्व. श्रीमती सुधा – स्व. श्री भूपेन्द्र नाथ चतुर्वेदी (होलीपुरा/इंदौर), धेवता श्रीमती इंद्रा – श्री उमेश चंद्र चतुर्वेदी (तरसोखर/उज्जैन) एवं पुत्र श्रीमती ज्योति – श्री निशीथ चतुर्वेदी (होलीपुरा/इंदौर/यू.एस.ए.) का चयन बेटरमेंट, न्यूयॉर्क में सीनियर सॉफ़्टवेयर इंजीनियर के पद पर हुआ है। इससे पूर्व सिटीबैंक यू.एस.ए. में सॉफ़्टवेयर इंजीनियर के पद पर कार्यरत कार्तिक ने वर्ष 2017 में यूनिवर्सिटी ऑफ फ़्लोरिडा से कम्प्यूटर साइन्स और इंजीनियरिंग में बी. एस. किया है। (र.क्र.626)

परीक्षा परिणाम : * कु. रितिका चतुर्वेदी पुत्री श्री संजीव चतुर्वेदी (मैनपुरी) ने सी.बी.एस.सी बोर्ड द्वारा आयोजित इंटरमीडिएट परीक्षा में 91 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। बधाई।

* चि. श्रेयस चतुर्वेदी पुत्र श्री विकास चतुर्वेदी (मैनपुरी/मुम्बई) ने महाराष्ट्र बोर्ड की कक्षा 12 की परीक्षा 95 प्रतिशत अंक के साथ उत्तीर्ण की। बधाई।

* कु. शिविका चतुर्वेदी सुपुत्री श्री शशांक चतुर्वेदी (कछपुरा/भोपाल) ने सी. बी. एस. सी. बोर्ड के अंतर्गत 12वी की परीक्षा में 94 प्रतिशत अंक के साथ उत्तीर्ण की। बधाई।

* कु. मिहिका चतुर्वेदी पुत्री श्रीमती रीना एवं श्री पराग एस चतुर्वेदी (मथुरा/जबलपुर) ने 92.4 प्रतिशत अंको के 12वी की परीक्षा उत्तीर्ण की। बधाई।

* कु. शुब्धा चतुर्वेदी, पुत्री श्री साकेत– सौम्या चतुर्वेदी, कमतरी/ देहरादून ने कक्षा 12 की परीक्षा सी बी एस सी बोर्ड से 96 % अंको के साथ उत्तीर्ण की। बधाई।

शोक समाचार

* श्रीमती आशा चतुर्वेदी पत्नी श्री नवीन चतुर्वेदी (होलीपुरा) का स्वर्गवास दिनांक 1 मई 2021 को आगरा में हो गया।
* श्री पदमाकर चतुर्वेदी (बीच का मोहल्ला, होलीपुरा/दिल्ली) का स्वर्गवास दिनाँक 28.07.21 आगरा में हो गया।
* श्री हरिश्चन्द्र चतुर्वेदी (कम्पिल) का स्वर्गवास दिनाँक 21 अगस्त 2021 को कम्पिल में हो गया।
* श्रीमती आशा चतुर्वेदी पत्नी श्री गोपीनाथ चतुर्वेदी (तरसोखर/ग्वालियर) का स्वर्गवास दिनाँक 20 अगस्त 2021 को ग्वालियर में हो गया।
* श्री समीर चतुर्वेदी पुत्र स्व. प्रमोद चन्द्र जी (चंद्रपुर/ग्वालियर) का स्वर्गवास दिनाँक 20 अगस्त 2021 को 44 वर्ष की आयु में ग्वालियर में हो गया।
* श्री राज़ चतुर्वेदी पुत्र श्री नवीश चतुर्वेदी (होलिपुरा/मुंबई) का असामयिक स्वर्गवास दिनाँक 16/08/2021 को अल्प आयु में मुंबई में हो गया।
* श्रीमती सुनीत चतुर्वेदी पत्नी श्री गिरीश चतुर्वेदी (करहल) का स्वर्गवास 84 वर्ष की आयु में दिनाँक 18 अप्रैल 2021 को करहल में हो गया।
* श्री विनोद चतुर्वेदी (फिरोजाबाद/लखनऊ) का स्वर्गवास 88 वर्ष की अवस्था में दिनाँक 23 जुलाई 2021को लखनऊ में हो गया।
* श्री अमिय कृष्ण चतुर्वेदी सुपुत्र स्व.श्री जय कृष्ण चतुर्वेदी (इटावा/नोयडा) का स्वर्गवास 23.07.2021 को नोयडा में हो गया।
* श्रीमती अंजू चतुर्वेदी स्व. श्री रविंद्र चतुर्वेदी (जयपुर) का स्वर्गवास 23 जुलाई 2021 को हो गया।
* श्रीमती कुसुम पत्नी स्व. शरतचंद्र (फरौली/लखनऊ) का स्वर्गवास 26 जुलाई 2021 को अपने बेटे मनीष के पास गुरुग्राम में हो गया।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

छठवीं पुण्यतिथि

श्रद्धेय प्रभात कुमार चतुर्वेदी (इटावा)

सुपुत्र : साक्षी गोपाल चतुर्वेदी एवं माधवी चतुर्वेदी

(उप सभापति श्री माधुर चतुर्वेदी महासभा)

जन्म : 21 जुलाई 1943 — निर्वाण : 10 सितंबर 2015

श्रद्धावनत

पत्नी : श्रीमती सुधा चतुर्वेदी	(पुत्र-पुत्रवधु) : डॉ. मुदित चतुर्वेदी-गुंजन चतुर्वेदी
बहन : स्व. पुष्पा मिश्रा (जयपुर)	(पुत्री एवं दामाद) : शिवानी-ललित चतुर्वेदी (दानपुर)
बहन : प्रतिभा चतुर्वेदी (कोटा)	(पुत्री एवं दामाद) : सपना-विकास चतुर्वेदी (कानपुर)
बहन : शोभा मिश्रा (मुम्बई)	(पुत्री एवं दामाद) : अर्चना-आशीष चतुर्वेदी (इंदौर)
बहन : विभा चतुर्वेदी (अहमदाबाद)	(पौत्र) : समर्थ चतुर्वेदी एवं सक्षम चतुर्वेदी

पता 1 : डॉ. मुदित चतुर्वेदी, मकान नं. 27
मेन ग्रीन पार्क, बरेली

पता 1 : 338, छिपैटी चौपार, इटावा - 206001

मोबाइल : 9896506222

(र.क्र. 632)

प्रथम पुण्य तिथि पर अश्रुपूर्ण श्रध्दांजलि

जन्म
02.01.1961

स्वर्गवास
16.09.2020

मनोज कुमार चतुर्वेदी (दीपक)

पुत्र स्व.जगमोहन लाल चतुर्वेदी(काली)एवं स्व. मिथिलेश चतुर्वेदी
कछपुरा/बाह/मथुरा

पलकें भीग जातीं हैं याद तुम्हारी आने से, छवि नहीं भूलती तुम्हारी, भुलाने से।
तुमसे बिछड़े हुआ एक वर्ष, फिर भी लगता है आप आ जाओगे बुलाने पर।

शोकाकुल एवं मर्माहत

पत्नी- श्रीमती दीपा चतुर्वेदी   पुत्री - अनुराधा चतुर्वेदी

भाई - भावज

दिनकर-नन्दिनी,दिनेश-स्व.सविता,मुकेश-स्व.संगीता

बहन - बहनोई

अरुणा-स्व.रामवतार,स्व.ऊषा-प्रदीप,उर्मिला-स्व. राजेश

भतीजे - भतीजी

तनु, मनु, सत्यम, दामिनी, हर्षिता,श्रष्ठि
एवं समस्त कछपुरा परिवार।

निवास- गली नं० 4 टीचर्स कालोनी (निकट कृष्णा डेरी)
महोली रोड, मथुरा-281001
मो: 9084828558

(र.क्र. 620)

अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि

स्व. श्री शरद कुमार चतुर्वेदी

जन्म : 15 जनवरी 1947
स्वर्गवास : 16 अप्रैल 2021

स्व. श्रीमती आशा चतुर्वेदी

जन्म : 15 मई 1955
स्वर्गवास : 11 जनवरी 2016

शोकाकुल परिवार

पुत्र-पुत्रवधू	:	विवेक चतुर्वेदी - ज्योति चतुर्वेदी
		विकाश चतुर्वेदी - निधी चतुर्वेदी
		विभव चतुर्वेदी - शिप्रा चतुर्वेदी
पुत्री-दामाद	:	प्रियंका चतुर्वेदी - अभिनव चतुर्वेदी
पौत्र - पौत्री	:	माधव, आदित्य, रिद्धि, लक्ष्मी, वैष्णवी, कार्तिकेय
दोहित्र - दोहित्री	:	समर्थ, मधु
		एवं समस्त परिवार जन

निवास : ग्राम व पोस्ट फरौली, जिला : कासगंज

(र.क्र. 638)

R.N.I. NO. MAR/2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2021–23
''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' सितंबर 2021

पत्र व्यवहार का पता– ''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' ई–8/जी–2/255,
गुलमोहर कॉलोनी, अरेरा कॉलोनी, भोपाल–39,
ईमेल –sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

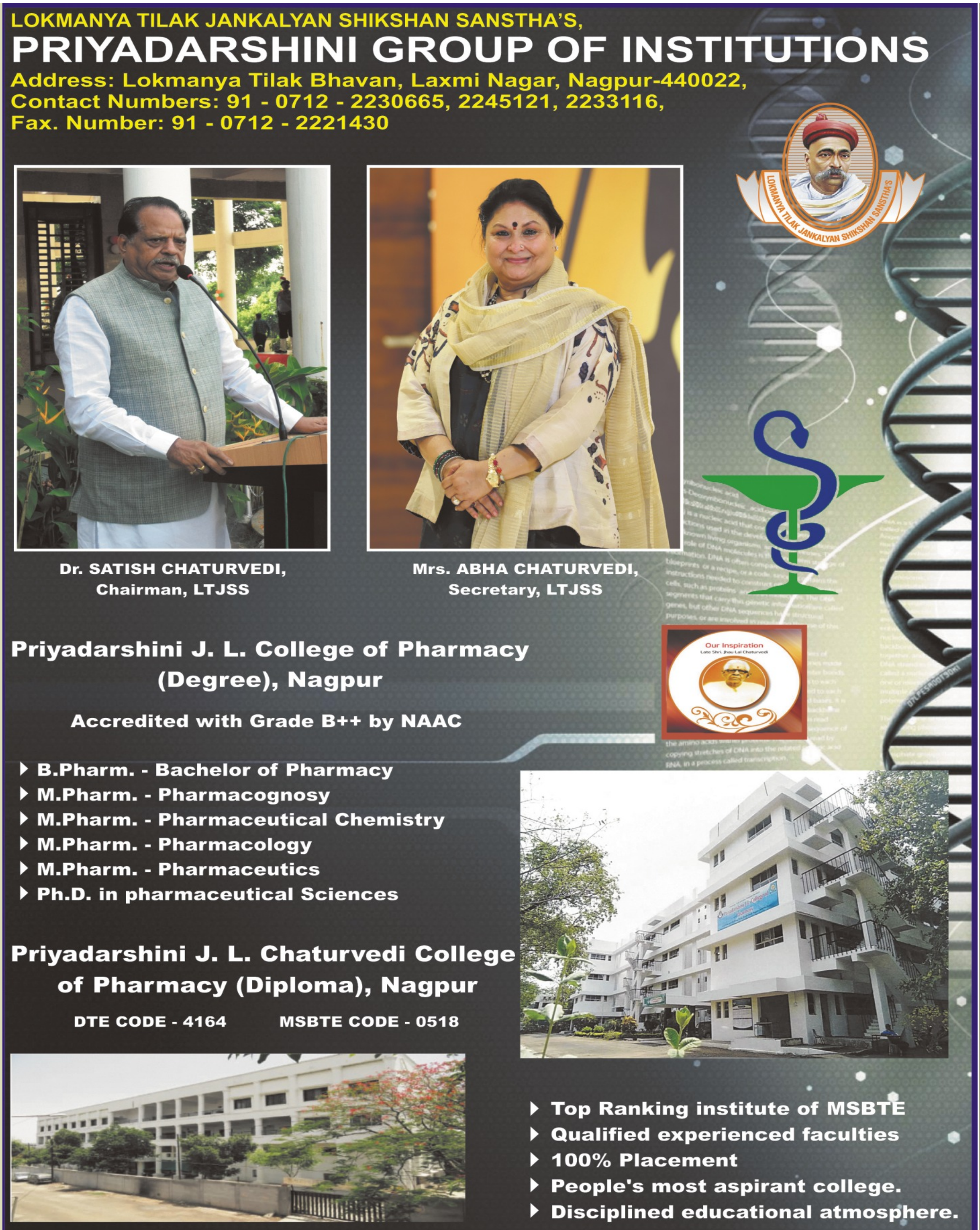

(र.क्र. 325)11/12